श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 229, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | गुरूवार 15 सितंबर 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

उप्र में 18 नए पुलिस थाने और 22 पुलिस चौकियां बनेंगी

लखनऊः कानून व्यवस्था को और बेहतर बनाने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने प्रदेश के विभिन्न जिलों में 18 थाने और 22 नई पुलिस चौकियां बनाये जाने का निर्णय लिया है। इसके अलावा कुशीनगर में नया पर्यटन पुलिस थाना खुलेगा। इससे अधिक से अधिक आबादी की पुलिसिंग व्यवस्था को और अधिक चुस्त-दुरूस्त व सुदृढ़ बनाया जा सकेगा।

शासन द्वारा यह निर्णय प्रदेश में शांति व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने, अपराधों पर और अधिक प्रभावी तरीके से अंकुश लगाये जाने, महिलाओं एवं जन-सामान्य को और अधिक सुरक्षित वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से लिया गया है। प्रमुख सचिव (गृह) संजय प्रसाद ने बुधवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि इस संबंध में पुलिस महानिदेशक व अपर पुलिस महानिदेशक, पुलिस मुख्यालय को आवश्यक निर्देश दिए गए हैं। इसके अलावा प्रदेश के इन नए थाना एवं पुलिस चौकियों में आवश्यक जनशक्ति पदों के सृजन आदि के संबंध में निर्देश पृथक से निर्गत किये जायेगें। जनपद गाजियाबाद के थाना मसूरी, कविनगर के क्षेत्र को काटकर नवीन थान वेब सिटी तथा थाना विजय नगर के क्षेत्र को काटकर नवीन थाना क्रासिंग रिपब्लिक बनाया गया है। जनपद देवरिया के थाना खामपार एवं बनकटा से काटकर नवीन पुलिस थाना श्रीरामपुर एवं थाना रूद्रपुर के अन्तर्गत नवीन पुलिस थाना सुरौली बनाया गया है। जनपद अयोध्या के थाना मवई अन्तर्गत नवीन पुलिस थाना बाबा बजार, कौशाम्बी के थाना चरवाह क्षेत्रान्तर्गत ग्राम सभा काजीपुर में नवीन पुलिस थाना संदीपन घाट, जनपद कानपुर देहात के थाना शिवली क्षेत्रान्तर्गत नवीन पुलिस थाना मैथा (माण्डा), जनपद सुलतानपुर में नवीन पुलिस थाना शिवगढ़ की स्थापना किये जाने का निर्णय लिया गया है। जनपद लखनऊ ग्रामीण के थाना मलिहाबाद के ग्राम रहीमाबाद में स्थापित रिपोर्टिंग पुलिस चौकी को उच्चीकृत कर नवीन पुलिस थाना रहीमाबाद, जनपद कानपुर देहात के थाना अकबरपुर

क्षेत्रान्तर्गत रिपोर्टिंग पुलिस चौकी रनिया को उच्चीकृत नवीन पुलिस थाना रनिया, जनपद अमेठी के थाना शिवरतनगंज क्षेत्रान्तर्गत रिपोर्टिंग पुलिस चौकी इनहौना को उच्चीकृत कर नवीन पुलिस थाना इनहौना, जनपद खीरी के थाना पसगवां क्षेत्रान्तर्गत पुलिस चौकी उचौलिया को उच्चीकृत कर नवीन थाना उचौलिया, जनपद फतेहपुर के थाना कोतवाली नगर के अन्तर्गत पुलिस चौकी राधानगर को उच्चीकृत कर नवीन पुलिस थाना राधानगर, जनपद प्रयागराज के धूमनगंज क्षेत्रान्तर्गत नवीन पुलिस थाना एयरपोर्ट की स्थापना किये जाने का निर्णय लिया गया है। जनपद देवरिया में ब्रम्हाऋषि देवरहा बाबा दिव्य शक्तिपीठ में पुलिस चौकी देवरहा बाबा आश्रम की स्थापना किये जाने का निर्णय लिया गया है। औरैया के तहसील व थाना विधूना के अन्तर्गत रिपोर्टिंग पुलिस चौकी कूदरकोट को उच्चीकृत कर नवीन थाना कूदरकोट तथा तहसील विधूना व थाना बेला के अन्तर्गत रिपोर्टिंग पुलिस चौकी सहार को उच्चीकृत कर नवीन थाना सहार, जनपद कुशीनगर के थाना कोतवाली पडरौना के अन्तर्गत नवीन पुलिस थाना रवीन्द्रनगरधूस तथा थाना पटहरैवा के अन्तर्गत नवीन पुलिस थाना चौरा खास की स्थापना किये जाने का निर्णय लिया गया है। अलीगढ़ मे पांच पुलिस चौकियां क्रमशः भरतरी, बरौली, अमरौली, बीरमपुर, भैमती, तथा गाजीपुर में तीन पुलिस चौकी पैकवली, पचरासी, गौरारी खोली गई है। फतेहगढ़/फरूर्खाबाद के थाना कोतवाली के अन्तर्गत पुलिस चौकी सरह तथा जनपद आगरा के थाना खेरागढ़ के अन्तर्गत नवीन पुलिस चौकी दूधाधारी, मथुरा के थाना बलदेव क्षेत्रान्तर्गत ग्राम बरौली में पुलिस चौकी बरौली, बहराइच के थाना फकरपुर के कुण्डासर क्षेत्र में पुलिस चौकी कुण्डासर, जनपद प्रयागराज के थाना सरायइनायत क्षेत्र के अन्तर्गत पुलिस चौकी जमनीपुर दुबावल, हरदोई के थाना मल्लावा क्षेत्रान्तर्गत नवीन पुलिस चौकी गंज जलालाबाद की स्थापना किये ।

15 जातियां अनुसूचित जनजाति में शामिल

नई दिल्लीः केंद्रीय मंत्रिमंडल ने छत्तीसगढ़ में अनुसूचित जनजाति की सूची में बिझिया समुदाय को जोड़ने के प्रस्ताव को बुधवार को मंजूरी दे दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के ट्रांस-गिरी क्षेत्र के हट्टी समुदाय को अधिसूचित अनुसूचित जनजाति की सूची में जोड़ने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी गई। बैठक के बाद केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा और अनुराग ठाकुर ने संवाददाताओं को यह जानकारी दी।

इन जातियों को अनुसूचित जनजाति का दर्जाः ठाकुर ने कहा कि सिरमौर जिले के ट्रांस-गिरी क्षेत्र के हट्टी समुदाय के लोग काफी समय से यह मांग कर रहे थे कि उन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया जाए। उन्होंने बताया कि उत्तराखंड में जौनसार क्षेत्र में ऐसे ही लोगों को यह दर्जा प्राप्त है। ऐसे में यह ऐतिहासिक निर्णय किया गया है। वहीं, जनजातीय मामलों के मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि बिझिया समुदाय को ओडिया और झारखंड में अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में रखा गया है लेकिन छत्तीसगढ़ में ऐसा नहीं है। उन्होंने बताया कि इस संबंध में सभी औपचारिकताओं को पूरा कर लिया गया है। इसमें राज्य से सिफारिश आने, भारत के महापंजीयक से सलाह करने और अंतर मंत्रालयी विमर्श के बाद मंत्रिमंडल के समक्ष रखा गया और इसे मंजूरी मिली। मुंडा ने कहा कि मंत्रिमंडल ने तमिलनाडु के पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले नारिकुर्वर और कुरूविकरण को भी इस सूची में शामिल करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी ।

इसके साथ ही केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अंडर 17 महिला फुटबॉल विश्व कप की मेजबानी के लिए गारंटी पर हस्ताक्षर करने को मंजूरी दे दी है। अंडर-17 महिला विश्व कप 11 से 30 अक्टूबर के बीच होगा।

कौन हैं हट्टी और कहां रहते हैं

उत्तर भारत में रहने वाला हट्टी वह समुदाय है, जो छोटे शहरों के बाजारों यानी हाट में फसल, सब्जियां, मांस और ऊन बेचकर अपना जीवन यापन करते हैं। हट्टी समुदाय की जन्मभूमि मुख्य रूप से यमुना की दोनों सहायक नदियों गिरि और टोंस के बेसिन में हिमाचल-उत्तराखंड की सीमा तक फैली हुई है।

राज्यसभा में पारित नहीं हो सका था विधेयकः सरकार ने मार्च में इस मुद्दे से जुड़ा विधेयक लोकसभा में पेश किया था। जिसमें उत्तर प्रदेश की गोंड, धुरिया, नायक, ओझा पठारी और राजगोंड जातियों को अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया जाने का प्रस्ताव ध्वनि मत से पारित कर दिया गया था। हालांकि तब राज्यसभा में यह बिल पास नहीं हो सका है। ऐसे में केंद्रीय मंत्रिमंडल में इसे पारित करने का फैसला लिया गया।

जनजातियों को होगा फायदाः मुंडा

केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने मंजूरी के बाद मीडिया से कहा कि इस फैसले से हिमाचल प्रदेश के सिरमौर के ट्रांस-गिरी एरिया में बसे हट्टी समुदाय के लगभग 1.60 लाख लोगों को फायदा होगा। छत्तीसगढ़ में बृजिया समुदाय और तमिलनाडु की पहाड़ियों में रहने वाले सबसे वंचित और कमजोर समुदायों में से एक नारिकुरावर भी लाभांवित होंगे।।

गोवा कांग्रेस के 8 एमएलए भाजपा में शामिल

दल-बदल कानून लागू नहीं होगा, क्योंकि 11 में से 8 टूटे

गोवाः गोवा कांग्रेस के 11 में से 8 विधायकों ने बुधवार को पार्टी छोड़ दी। सभी विधायक मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत के साथ विधानसभा पहुंचे और स्पीकर रमेश तावड़कर को कांग्रेस से अलग होने की चिट्ठी सौंपी। इसके तुरंत बाद गोवा भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सदानंद तनवड़े ने सभी विधायकों को भाजपा की सदस्यता दिलाई। कांग्रेस छोड़ने वाले विधायक गोवा के पूर्व सीएम दिगंबर कामत, माइकल लोबो, देलिया लोबो, केदार नाइक, राजेश फलदेसाई, एलेक्सो स्काइरिया, संकल्प अमोलकर और रोडोल्फो फर्नांडीज शामिल है। बागी विधायकों की संख्या पार्टी के कुल विधायकों की संख्या के दो-तिहाई से ज्यादा है। इस वजह से इन विधायकों पर दल-बदल कानून लागू नहीं होगा।

कांग्रेस बोली- भारत जोड़ो यात्रा से डरी भाजपाः गोवा में टूट के बाद कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा- भाजपा भारत जोड़ो यात्रा से डर गई है और ऑपरेशन कीचड़ करने में जुटी है। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट लिख आगे कहा- भाजपा सिर्फ तोड़ सकती है। वहीं कांग्रेस प्रभारी दिनेश गुंडूराव ने लिखा- पैसे और सत्ता के दम पर लोकतांत्रिक सिद्धांतों की धज्जियां उड़ाई जा रही है।

बीसीसीआई को संविधान संशोधन की मंजूरी

नई दिल्लीः सुप्रीम कोर्ट ने बीसीसीआई को अपने संविधान में बदलाव की अनुमति दे दी है। जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच ने कूलिंग ऑफ पीरियड के प्रावधान में संशोधन की अनुमति दे दी है। अब सौरव गांगुली और जय शाह का कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है। कोर्ट ने कहा है कि बीसीसीआई और राज्य एसोसिएशन में एक कार्यकाल के बाद कूलिंग ऑफ पीरियड की जरूरत नहीं है लेकिन दो कार्यकाल के बाद ऐसा किया जा सकता है। इसका मतलब है कि सौरव गांगुली और जय शाह अगले तीन साल तक अपने पद पर बने रह सकते हैं। इस बारे में कोर्ट ने 13 सितंबर को एमिकस क्यूरी मनिंदर सिंह से सुझाव मांगा था। बीसीसीआई ने मांग की थी कि संविधान में संशोधन की इजाजत दी जाए ताकि इसके प्रशासकों को तीन साल के कूलिंग ऑफ पीरियड के प्रावधान को खत्म किया जा सके।

भारत सरकार के 2 मंत्रालयों ने किया करार, युद्ध टैंक के वॉल्व भी यहीं से आपूर्ति होंगे

गाजियाबाद में बनेंगे सुखोई के पार्ट्स

गाजियाबादः भारत सरकार के टेक्नोलॉजी डवलपमेंट बोर्ड और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने गाजियाबाद प्रिसिजन प्रोडक्ट प्राइवेट लिमिटेड से सुरक्षा करार किया है। भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमान सुखोई के कलपुर्जों का निर्माण अब गाजियाबाद की इस कंपनी में होगा। ये कंपनी सुखोई के रोटरी पाइप यूनियन और कवर के अलावा 1500 एचपी युद्धक (बैटल) इंजन टैंक के वॉल्व, बीईएमएल इंजन के उपकरणों के वॉल्व आदि बनाएगी। सुखोई के

उपकरणों की आपूर्ति हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक लिमिटेड और आर्मर्ड फाइटिंग व्हीकल के डीजल इंजन वॉल्व की आपूर्ति भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड को होगी। टैक्नोलॉजी डवलपमेंट बोर्ड ने कुल परियोजना लागत के 14.2 करोड़ में से 5.5 करोड़ रुपए की सहायता को मंजूरी दी है।

सचिव बोले- मेक इन इंडिया के तहत लगातार हो रहे करारः प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड के सचिव राजेश कुमार पाठक ने कहा, 'भारत सरकार की मेक इन इंडिया पहल के तहत स्वदेशी विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र के विकास में मदद करने के उद्देश्य से रक्षा, फार्मा, ऑटोमोबाइल, ड्रोन निर्माण के लिए लगातार करार कर रहा है।

यह परियोजना रक्षा क्षेत्र के लिए ऐसी पहल है, जिसमें गाजियाबाद प्रिसिजन प्रोडक्ट।

देश के निर्यात में मामूली बढ़त

नई दिल्लीः अगस्त महीने में भारत के निर्यात में मामूली बढ़त दर्ज की गई है। इस महीने में निर्यात 1.62% बढ़कर 33.92 अरब डॉलर हो गया है। इस दौरान देश का व्यापार घाटा दोगुने से ज्यादा बढ़कर 27.98 अरब अमेरिकी डॉलर पर पहुंच गया है। बता दें कि अगस्त 2021 में व्यापार घाटा 11.71 अरब डॉलर रहा था। सरकार की ओर से जारी आंकड़ों में इस बात की पुष्टि की गई है। भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय की ओर से बुधवार (14 सितंबर) को इससे जुड़े आंकड़े जारी किए गए। इन आंकड़ों के अनुसार अगस्त में देश का आयात 37.28 फीसदी बढ़कर 61.9

अरब डॉलर हो गया। चालू वित्तीय 2022-23 के अप्रैल से अगस्त महीनों के दौरान देश के निर्यात में 17.68 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई और यह 193.51 बिलियन अमरीकी डॉलर पर पहुंच गया। वहीं इन पांच महीनों की अवधि में आयात 45.74 प्रतिशत बढ़कर 318 अरब डॉलर हो गया। चालू वित्त वर्ष में अप्रैल-अगस्त के दौरान व्यापार घाटा बढ़कर 124.52 अरब डॉलर हो गया।

भारत बना रहा इलेक्ट्रिक हाईवे, दौड़ती गाड़ियां हो जाएंगी चार्ज

दिल्ली-जयपुर हाईवे और यमुना एक्सप्रेसवे पर ट्रायल

नई दिल्लीः भारत ऐसे हाईवेज बना रहा है, जिस पर चलते हुए ही गाड़ियां चार्ज हो जाएंगी। इसकी तस्दीक ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर नितिन गडकरी ने भी की है। उन्होंने कहा कि सरकार सोलर एनर्जी से चलने वाले इलेक्ट्रिक हाईवेज बनाने पर काम कर रही है। इन हाईवेज पर चलते हुए भारी-भरकम ट्रक और बसें चार्ज हो सकेंगे। ये खबर पढ़ते ही आपके मन में कई तरह के सवाल उठ रहे होंगे। मसलन- ई-हाईवे होते क्या हैं ये काम कैसे करते हैं इनके फायदे क्या हैं आम हाईवे या एक्सप्रेसवे पक्की सड़कों से बने होते हैं, जिन पर हर तरह की गाड़ियां दौड़ सकती हैं। वहीं इलेक्ट्रिक हाईवे ऐसे हाईवे होते हैं,

जिनमें कुछ इक्विपमेंट्स के जरिए ऐसा सिस्टम होता है, जिससे उनसे गुजरने वाली गाड़ियां बिना रुके ही अपनी बैटरी चार्ज कर सकती हैं। इसके लिए हाईवे पर ओवरहेड वायर या रोड के नीचे से ही इलेक्ट्रिक फ्लो करने का सिस्टम बना होता है। इलेक्ट्रिक हाईवे से केवल इलेक्ट्रिक गाड़ियां ही चार्ज हो सकती हैं। इससे पेट्रोल-डीजल वाली गाड़ियां नहीं चार्ज होती। इनसे हाइब्रिड गाड़ियां भी चार्ज हो सकती हैं। हाइब्रिड गाड़ियों में इलेक्ट्रिक के साथ-साथ पेट्रोल-डीजल से चलने की भी सुविधा होती है। यानी इलेक्ट्रिक हाईवे इलेक्ट्रिक सुविधा से लैस ऐसे हाइवे होते हैं, जहां उनके ऊपर से गुजरती गाड़ियों को चार्ज किया जा सकता है। इलेक्ट्रिक हाईवे पर गाड़ियां बिना कोई प्रदूषण फैलाए 120 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकती हैं।

विश्व की समृद्ध भाषाओं में से एक है हमारी राजभाषाः शाह

सूरतः केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को कहा कि हमारी राजभाषा और स्थानीय भाषाएं विश्व की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक हैं। जब तक हम इस बात का संकल्प नहीं लेते कि इस देश का शासन, प्रशासन, ज्ञान और अनुसंधान हमारी भाषाओं और राजभाषा में होगा, तब तक हम देश की क्षमताओं का उपयोग नहीं कर सकते। गुजरात के सूरत में हिन्दी दिवस समारोह-2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन को संबोधित करते गृह मंत्री अमित

शाह ने कहा कि हम सभी देशवासियों को संकल्प लेने की जरूरत है कि 25 साल के अंदर हमारा देश भाषा की लघुता ग्रंथी से मुक्त होकर हमारी स्वभाषाओं में देश का विकास करेगा और देश को दुनिया के सर्वोच्च स्थान पहुंचाएगा।

खबर संक्षेप

महिला के साथ दुराचार का असफल प्रयास दो के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। शौच के लिए गयी महिला को गांव के दो युवक पीछे से पकड कर जमीन में पटख दिए और दुराचार की कोशिश किये। महिला ने एक नामजद एक अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा क्षेत्र के ग्राम जोगापुर निवासनीय एक महिला का आरोप है कि वह शाम के समय शौच के लिए गयी थी। पीछे से दो युवक आए और उसे पकड़ कर जमीन पर पटख दिए। महिला का आरोप है कि उसकी साडी और ब्लाउज ऊतार दिए और अश्लील हरकतें करने लगे। शोर मचाने पर जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गए। महिला ने मऊआइमा थाने में राम कैलाश पुत्र खुन खुन तथा एक अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है। पुलिस आरोपियों की तलाश में दबिश दे रही है।

ट्रक की चपेट में आने से साइकिल सवार राजगीर की मौत

अखंड भारत संदेश

अरैलमोड से एफसीआई कि ओर जाते समय हुआ हादसा

नैनी। कोतवाली क्षेत्र में चकदोंदी मोहल्ले में बुधवार को ट्रक की चपेट में आने से साइकिल सवार राजगीर की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर लिखा पढी करके शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बड़ा चाका निवासी कमलेश भारतीय पेशे से राजगीर है। बुधवार की दोपहर वह अपनी साइकिल से अरैल मोड़ से एफसीआई की ओर जा रहा था। जैसे ही वह धर्म कांटा के पास चकदोन्दी इलाके के पास पहुंचा वैसे ही एक ट्रक की चपेट में आने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

छात्र छात्राओं ने किया स्वरचित कविताओं का पाठ

राष्ट्र भाषा हिन्दी के हित में आयोजित कलमकार कार्यशाला का हुआ समापन

प्रतियोगी छात्रा को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते वरिष्ठ कवि

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। लोक संस्कृति विकास संस्थान, प्रयागराज और राजकीय अभिनव विद्यालय प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्र भाषा हिंदी के हित में आयोजितरकलमकाररर पांच दिवसीय कविता लेखन कार्यशाला का समापन हिंदी दिवस के अवसर पर हुआ जिसमे छात्र-छात्राओं ने स्वरचित कविताओं का पाठ किया। बतौर मुख्य अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी चाका कैलाश सिंह ने कहा कि मात्र भाषा में ही मौलिक चिंतन हो सकता है। वहीं कार्यशाला के संयोजक एवं मुख्य प्रशिक्षक शरद कुमार मिश्र ने कहा कि हम सबको हिंदी भाषा को अपने हृदय में उतारना होगा। हिंदी की स्वीकार्यता सम्पूर्ण विश्व में दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कवियों को काव्य तर्पण भी किया गया जिसमे उनकी रचनाओं का काव्य पाठ किया गया। लोक गायिका प्रिया द्विवेदी ने हे री मैं तो प्रेम-दिवानी मेरो दरद न जाणै कोय से मीराबाई को याद किया तो वहीं कवि शिवम भगवती ने ओज पूर्ण कविताओं से सबका मन मोह लिया, महक सिंह ने महाराणा प्रताप पर कविता पढ़कर खूब वाह वाही लूटी। कवयित्री संपदा मिश्रा ने भी प्रेरक कविताएं पढ़ी। सभी अतिथियों, विद्यार्थियों और रचनाकारों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर, रुचि द्विवेदी, ऋतु शुक्ला, शाइश्ता अंजुम परमेंद्र कुमार, विजेंद्र कुमार, रीता चौधरी आदि ने भी अपने विचार प्रकट किए।

हिन्दी दिवस पर जागरूकता संगोष्ठी एवम निबंध प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

जसरा। देश की आजादी प्रदान करवाने से लेकर विभिन्न कुप्रथाओं को खत्म को खत्म करने मे हिन्दी भाषा के अविस्मरणीय योगदान को ताउम्र भुलाया नहीं जा सकता हैं। हिन्दी युवाओं मे नवचेतना, राष्ट्र प्रेम, अनुशासन, सदचरित्र इत्यादि अमूल्य गुणों के विकास मे अपना सहयोग प्रदान करती आ रहीं हैं।युवाओं का नैतिक फर्ज बनता हैं कि हिन्दी को सामान्य जनजीवन के साथ कार्यालयों मे भी कामकाज प्रारम्भ करने के लिए लोगों को जागरूक करें उक्त बातें राजकीय बालिका इंटर कालेज जसरा मे आयोजित हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित परिचर्चा मे प्रधानाचार्या ममता शर्मा ने छात्राओं को बतौर मुख्यवक्ता के रूप सम्बोधित करते हुए बोली।इस अवसर पर युवा समाजसेवी अभिषेक सिंह पटेल ने कहा कि हिन्दी की लोकप्रियता निरंतर तीव्र गति से देश ही नहीं अपितु विश्व मे भी बढ़ रहीं हैं। हिन्दी भाषा सदैव से ही लोकप्रिय एवम मृदु भाषाओं की श्रेणी मे सम्मिलित रहीं हैं। हिन्दी भाषा को पूर्व से अधिक समृद्ध एवम एवम जनप्रिय बनाने के लिए प्रति वर्ष 14सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप मे मनाया जाता हैं।उक्त अवसर पर उन्होंने निबंध प्रतियोगिता मे सम्मिलित डेढ़ दर्जन से अधिक छात्राओं को पेन, कापी भेंट करके पुरस्कृत भी किये।गृह विज्ञान की प्रवक्ता रीना यादव ने हिन्दी भाषा को लोगों की लोकप्रिय भाषा के रूप मे स्वीकार करते हुए आइये देश का सम्मान बढ़ाये, 'हिन्दी को आगे बढ़ाये -आगे बढ़ायें 'स्लोगन के माध्यम से छात्राओं को उक्त भाषा के रोचक तथ्यों की जानकारियां भी प्रदान किया।फौजिया नसरीन, गीतांजलि, रेखारानी, नीलम गुप्ता,कीर्ति अवस्थी, शगुफ्ता जमाल, नीता त्रिपाठी, सुनीता मालवीया आदि शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं।

अकेले अमरीका में दस लाख हिंदी बोलते है: मीरा श्रीवास्तव

एन.एस.के.और कैंब्रिज हाईस्कूल में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। एन.एस.के.इंटर कालेज और कैंब्रिज हाईस्कूल एंड कॉलेज में हिंदी दिवस के मौके पर हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया गया। कैंब्रिज हाई स्कूल में हिंदी पखवाड़े के प्रथम दिन विद्यालय परिसर में विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। हिंदी की प्रवक्ता शिक्षिका मीरा श्रीवास्तव ने मातृभाषा हिंदी के महत्व व इतिहास को दशार्ते हुए बढ़ते हिंदी के चलन पर प्रकाश डाला।

मीरा श्रीवास्तव ने कहा, भारत में लगभग 60 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं, इनमें से लगभग 45 करोड़ लोगों की हिंदी पहली भाषा है। बताया, 26 जनवरी 1950 को संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को अधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दी गई थी। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने का फैसला किया था। हिंदी दुनिया के कई देशों में बोली जाती है। अकेले संयुक्त राज्य अमेरिका में ही 10 लाख लोग हिंदी भाषा बोलते हैं अमेरिका और जर्मनी में तो कई बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटी में हिंदी भाषा मुख्य भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही है। विद्यालय के प्रबंधक संतोष त्रिपाठी ने कहा हिंदी पखवाड़ा कार्यालय तक ही सीमित न होकर जनमानस तक लाने की आवश्यकता है। विद्यालय की छात्रा संजना सिंह व छात्र ज्ञानेंद्र सोनी ने कबीर दास की सुंदर कविताओं को प्रस्तुत किया।कार्यक्रम का संचालन अध्यापक धर्मराज कुशवाहा ने किया। मौके पर विद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी बालेंद्र पांडेय शिक्षक मणिशंकर दुबे, सौरभ प्रकाश, पंकज मिश्र,पंकज श्रीवास्तव, मनोज तिवारी, सुधीर नारंग, अखिलेश पांडेय, राजेश गोस्वामी, यज्ञवल्क्य द्विवेदी, रीतू सुसारी, सिम्मी गुप्ता, रीना गोस्वामी रेखा सिंह, मधु,फलक, दीपा, स्मिता, नैना आदि उपस्थित रहीं। इसीतरह एन.एस.के. इंटर. कालेज शंकरगढ़ विद्यालय मे हिंदी पखवाड़ा के उपल्पच्छ मे हिंदी निबंध,लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया प्रतियोगिता प्राइमरी, जूनियर व सीनियर तीन हिस्सों मे आयोजित किया गयी जिसमे सभी विद्यार्थियों ने बढ़ -चढ़ कर हिस्सा लिया जिसमे सीनियर वर्ग में प्रथम स्थान -मांशी ओझा,दूसरे स्थान पर आदर्श मिश्रा,तीसरे स्थान पर आकांक्षा देवी रहीं। इसी तरह जूनियर वर्ग में प्रथम अनामिका सिंह, दूसरे स्थान पर ओमकार वर्मा व तीसरे स्थान पर दुर्गेश यादव रहे। इसी तरह प्राइमरी वर्ग में अंकिता सिंह, दूसरे स्थान पर नैंशी मिश्र व तीसरे स्थान पर तनू सिंह रहीं। इस मौके पर विद्यालय के प्रबंधक संतोष त्रिपाठी, प्राचार्य प्रताप बहादुर सिंह,अशोक कुमार त्रिपाठी, श्याम नारायन दुबे, लक्ष्मी शंकर वर्मा, ज्ञानेंद्र मिश्रा, विजय शंकर मिश्रा, पुष्पराज सिंह,नीता सिंह, कविता सिंह, अर्चना सिंह, सोनाली पाण्डेय, कामनी सिंह आदि उपस्थित रहे।

हमारी सभ्यता और संस्कृति की आत्मा है हिंदी : प्रकाश चंद्र मिश्रा

न्यू चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल में मनाया गया हिंदी दिवस, 25 सितंबर तक चलेगा विविध आयोजन

शंकरगढ़। सिंधी टोला स्थित न्यू चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल में हिंदी दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए, वक्ताओं ने हिंदी का महत्व बताते हुए बच्चों को अपनी मातृभाषा से प्रेम तथा लगाव रखने की बात कही गई। न्यू चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल में आयोजित हिंदी दिवस के मौके पर विद्यालय के प्रबंधक प्रकाश चंद्र मिश्रा ने कहा कि हमारी सभ्यता और संस्कृति की आत्मा हिंदी ही है।बताया कि हिंदी को राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर 1949 को दिया गया। हम सब को चाहिए कि हम हिंदी की उन्नति और विकास के लिए प्रयास करें। विद्यालय की तरफ से बताया गया कि हिंदी दिवस पर हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया है जो 25 सितंबर तक चलेगा। इस बीच बच्चों द्वारा कई कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायेंगे तथा विविध प्रतियोगिताओं द्वारा बच्चों का उत्साहवर्धन किया जाएगा। इस मौके पर विद्यालय के शिक्षक शुसांत वर्मा, वेदप्रकाश मिश्रा ,योगेश पांडे, शिवानी केसरवानी,रीतू सिंह,नीतू सिंह,निकिता पाण्डेय, साक्षी पाण्डेय, राहुल राव,सत्येंद्र द्विवेदी,मुस्कान,जय केसरवानी,अंजू केसरवानी,बी एल सोनी सहित सभी शिक्षक शिक्षिकाएं व छात्र-छात्रा मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

पूर्व सांसद नागेंद्र सिंह पटेल ने डॉ कैलाश नाथ सिंह को किया सम्मानित,जताया आभार

शंकरगढ़। परम श्रद्धेय स्व. डॉक्टर सोनेलाल पटेल ने जब अपना दल एस का गठन किया था, जिससे कमेरा समाज को जागरूक किया जा सके। उस दौर से डॉक्टर सोनेलाल पटेल के कारवां के साथ चलकर अपना दल एस को अग्रणी भूमिका निभाने वाले पार्टी में डॉ कैलाश नाथ सिंह को कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। तब से डॉक्टर कैलाश नाथ सिंह ने अपने कार्य को ईमानदारी के साथ बखूबी से निभाया , जब डॉक्टर सोनेलाल का स्वर्गवास हुआ ,उसके बाद स्वाभिमान को बचाते हुए डॉक्टर कैलाश सिंह ने अन्नदाता पार्टी का गठन किया। लेकिन अपना दल एस के राष्ट्रीय अध्यक्ष के आदेशों का पालन करते हुए शंकरगढ़ क्षेत्र में अपना दल एस के सदस्यता प्रभारी माननीय पूर्व सांसद नागेंद्र सिंह पटेल ने अपना दल एस के पूर्व कोषाध्यक्ष डॉ कैलाश नाथ सिंह के घर जाकर माल्यार्पण करके सम्मानित किया । डॉ कैलाश नाथ सिंह को सम्मानित करते हुए पूर्व सांसद नागेंद्र सिंह पटेल ने कहा की अपना दल एस कार्यकर्ता आधारित पार्टी है , जिसमें एक गरीब और आम आदमी भी अपनी मेहनत से विधायक - सांसद बन सकता है । वहीं देश में बाकी पार्टियां परिवारवाद और जातिवाद की राजनीति करती रही है । इस मौके पर प्रबंधक आनंद जी राठौर , शांती कुँवर सिंह ग्राम प्रधान , शिवेंद्र सिंह , परमानंद सिंह , पूर्व जिला पंचायत मोहम्मद जमील खान , ज्ञानेंद्र सिंह , नंदलाल सिंह , एडवोकेट राम सिंह सहित कई लोगों ने पूर्व सांसद व अपना दल एस के सदस्यता प्रभारी नागेंद्र सिंह पटेल का स्वागत करते हुए आभार प्रकट किया।

अतिबल सिंह महाविद्यालय में स्मार्टफोन का हुआ वितरण

पसना। युवाओं के लिए योगी सरकार की महत्वाकांक्षी टेबलेट एवं स्मार्टफोन वितरण योजना अंतर्गत स्थानीय सीकी कला स्थित अतिबल सिंह महाविद्यालय मेंआज स्नातक एवं विधि अंतिम वर्ष के उत्तीर्ण छात्रों को स्मार्टफोन वितरित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक धनंजय सिंह ने छात्र छात्राओं से भविष्य की पढ़ाई हेतु स्मार्टफोन के सही उपयोग की अपील करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। स्मार्टफोन पाकर छात्र छात्राओं के चेहरों पर खुशी झलक रही थी।इस कार्यक्रम में विद्यालय के स्टाफ आफताब अहमद अरुण कुमार सिंह हिम्मत सिंह सुनील कुमार सिंह आदि लोग उपस्थित रहे।

पीएम के जन्मदिवस पर पार्टी करेगी एक सप्ताह जनसेवा

जसरा। आज बुधवार को ब्लॉक सभागार जसरा में भाजपा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि जिला महामंत्री विजय शंकर शुक्ला ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिवस को पार्टी एक सप्ताह तक जनसेवा करके मनाएगी जिसके तहत साफ-सफाई, रक्तदान, फल वितरण आदि कार्यक्रम प्रमुख रूप से हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष जसरा जगत नारायण शुक्ला ने किया व संचालन महामंत्री भूपेंद्र पाठक ने किया। कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों का मंडल महामंत्री नीरज केसरवानी ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से वरिष्ठ भाजपा नेता राजा बाबू पाठक, जिला पंचायत सदस्य सुरेंद्र सिंह पटेल, शंकर लाल मधुकर, रामबाबू केसरवानी, प्रधान जसरा आशीष सोनकर, आलोक पाठक, दीपचंद मोदनवाल, राम केसरवानी, निधीश पाठक, राकेश पाठक, आकाश केसरवानी, अर्जुन विश्वकर्मा, राहुल पाल, शंकर लाल गुप्ता, शिवाकांत तिवारी, सुरेंद सोनकर, सत्तन निषाद, वीरेंद्र पाठक, प्रवीण मालवीय, सहित दर्जनों लोग मौजूद रहें।

विधायक प्रतिनिधियों का भाजपाइयों ने किया स्वागत

जसरा। आज बुधवार को जसरा ब्लॉक पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने नवनियुक्त विधायक प्रतिनिधियों को माला पहनाकर उनका स्वागत किया। बताते चलें कि बीते सोमवार को क्षेत्रीय विधायक डॉ वाचस्पति ने अपने प्रतिनिधियों का चयन किया था और उनको छः माह के लिए विभाग वार जिम्मेदारी सौंपी थी। उसी के क्रम में आज जसरा ब्लाक पर एकत्रित होकर भाजपा कार्यकर्ताओं ने प्रतिनिधियों को माला पहनाकर भाजपा जिला महामंत्री डॉ विजय शंकर शुक्ला व जिला पंचायत सदस्य सुरेंद्र सिंह पटेल की अगुआई में सम्मान किया। चुने गए विधायक प्रतिनिधियों में जगत नारायण शुक्ला,नीरज केसरवानी ,आलोक पाठक, दीपचंद मोदनवाल ,आशीष सोनकर, सत्तन निषाद रहे। स्वागत करने वालों में मुख्य रूप से राजाबाबू पाठक,राजेश साहू, राम केसरवानी, सत्तन निषाद, हजारी लाल पटेल, संकल्प केसरवानी, बजरंग बहादुर सिंह,आकाश केसरवानी, दिनेश केसरवानी, सुरेश कुशवाहा, बबिता सिंह, राजेश साहू, अमरजीत पटेल, सत्तन निषाद, हजारी लाल पटेल, संकल्प केसरवानी, बजरंग बहादुर सिंह, दिनेश केसरवानी, सुरेश कुशवाहा, बबिता सिंह आदि रहे।

हिंदी जन - मन जन जन की भाषा है

झूंसी। हवेलिया स्थित न्याय नगर पब्लिक स्कूल में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर द्विदिवसीय हिंदी महोत्सव का आयोजन किया गया। द्विदिवसीय कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की सांस्कृतिक विभाग प्रमुख शक्ति सक्सेना द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कक्षा 12 की छात्राओं द्वारा संस्कृत में सरस्वती वंदना से किया गया। इस अवसर पर छात्र छात्राओं द्वारा हास्य व्यंग्य प्रधान प्रहसन जुम्मन मियां की बकरी का मंचन किया गया तथा कक्षा 9 बी के छात्र एकलव्य द्वारा वीर रस की कविता गोरा बादल की कथा का सस्वर पाठ किया गया। इसी उपक्रम में हिंदी अध्यापिका आरती कुशवाहा ने हिंदी दिवस पर अपने विचार रखे साथ में छात्र-छात्राओं द्वारा स्वरचित कविता पाठ तथा विभिन्न नाट्य प्रस्तुतियां दी गई। हिंदी विभाग से चंद्रकला तिवारी तथा प्रीति अग्रवाल के निर्देशन में कक्षा 6 से 8 की कहानी वाचन प्रतियोगिता तथा आरती कुशवाहा तथा सावित्री देवी के निर्देशन में कक्षा 9 से 12 तक चित्र-लेखन प्रतियोगिता रखी गई। विद्यालय प्राचार्या डॉ. बुशरा मुस्तफा ने हिंदी के महत्व तथा वर्तमान युग में प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी के बढ़ते वर्चस्व के बारे में अवगत कराते हुए छात्र छात्राओं को हिंदी को जन - मन और जन -जन की भाषा बनाने के लिए प्रेरित किया।

लीडर रोड पर मल्टीलेवल पार्किंग की कवायद शुरू

प्रयागराज। लीडर रोड पर मल्टी लेवल पार्किंग और व्यावसायिक केंद्र बनाने की कोशिश तेज हो गई है। मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत, पीडीए उपाध्यक्ष अरविंद चौहान, नगर आयुक्त चंद्र मोहन गर्ग ने बुधवार सुबह पार्किंग और व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स निर्माण को लेकर नगर निगम की कर्मशाला का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने कर्मशाला के एक-एक कोने को देखा। सभी ने लगभग तय कर लिया है कि कर्मशाला की जमीन पर पार्किंग और व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स बनेगा। पार्किंग और व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स निर्माण की योजना बनने के बाद नगर निगम का कर्मशाला करेलाबाग स्थानांतरित किया जाएगा। नगर निगम ने कर्मशाला को खाली करना शुरू कर दिया है। कर्मशाला परिसर में नगर निगम के कर्मचारियों के लिए बने मकानों को भी खाली कराया जाएगा। निरीक्षण में साथ रहे नगर निगम के मुख्य अभियंता सतीश कुमार ने बताया कि मल्टीलेवल पार्किंग और व्यावसायिक कांपलेक्स के लिए कर्मशाला का निरीक्षण किया गया। खुसरोबाग के पास होने के कारण निर्माण के लिए पुरातत्व विभाग से अनुमति मांगी गई है। अनुमति मिलने के बाद निर्माण शुरू किया जा सकता है।

पितृ गायत्री के जाप से दूर होता है पितृ दोष

अखंड भारत संदेश

प्रतापपुर। पितृ गण हमारे जन्म का कारण होते हैं और हमें समय समय पर गलत मार्ग से हटा कर सही दिशा देते हैं इसलिए जीवन को सही दिशा में बनाये रखने के लिए समय-समय पर हमें अपने पितरों के लिए पूजा-पाठ व दान धर्म जरुर करना चाहिए। आचार्य धीरज द्विवेदी याज्ञिक ज्योतिष वास्तु धर्मशास्त्र एवं वैदिक अनुष्ठानों के विशेषज्ञ प्रयागराज ने बताया कि कलयुग में पितृ संबंधी दोषों की उत्तपत्ति सबसे ज्यादा होती है इसलिए इस दोष की शांति के लिए समय समय पर आवश्यक कर्म व उपाय अवश्य करना चाहिए। पितृ दोष को शांत करने के लिए और पितरों का आर्शिवाद प्राप्त करने के लिए पितृ गायत्री मंत्र सबसे श्रेष्ठ है। पितृ पक्ष में इस मंत्र का जाप करने से रुष्ट पितृ तृप्त होकर अपनी कृपा मंत्र जाप करने या कराने वाले के ऊपर अवश्य करते हैं।पितृ गायत्री मंत्र ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नम।इस मंत्र का जाप पितृ पक्ष और अमावस्या के दिन करने से तत्काल पितृ शांति होती है।इसी मंत्र से पितरों को तर्पण आदि करने से पितरों को शांति मिलती है। इस मंत्र का जाप करते समय भगवान विष्णु के चरणों का ध्यान करना चाहिए।

टीम ने नकली टाटा नमक का किया भंडाफोड़

उतरांव। शहर के उतरांव क्षेत्र में इन दिनों बिक रहे दुकानों पर नकली टाटा नमक का भंडाफोड़ टाटा नमक के कर्मचारी वह पुलिस ने दुकानों पर पहुंचकर छापेमारी कर हजारों पैकेट नकली नमक बरामद किया। बुधवार को टाटा नमक कम्पनी में नियुक्त ऑपरेशन मैनेजर देवेंद्र प्रताप सिंह व जांच अधिकारी पीयूष श्रीवास्तव ने पुलिस टीम के साथ उतराव क्षेत्र के मकसूदना,दायमगंज,समो धीपुर, उतराव आदि पांच दुकानों पर छापेमारी कर बाजारों में बिक रहे नकली टाटा नमक का भंडाफोड़ किया है। मैनेजर ने बताया कि नकली टाटा नमक लगभग 1000 पैकेट बरामद किया गया है। जिसकी कीमत लगभग बाजारों में 25000 की वर्जिनल के दामों में बेची जाती। वही सूचना पर टीम ने पहुंचकर दुकानों में छापेमारी की। टीम की छापेमारी से क्षेत्र में हड़कंप मचा रहा। ऑपरेशन मैनेजर देवेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि वर्जिनल टाटा नमक 50 पैकेट लगभग 1180 का मिलता है। वही नकली टाटा नमक को बनाने में ?160 रुपये में 50 पीस का होगा। जिसे दुकानदारों द्वारा वर्जिनल बता कर वारा न्यारा किया जा रहा था। ऑपरेशन मैनेजर ने बताया कि नकली टाटा नमक में आयोडीन भी नहीं मिलाया गया है।और सवाल खड़ा होता है कि दुकानदारों को टाटा नमक असली बताकर नकली कौन पहुंचाता है। इसमें खाद्य विभाग की कितनी भूमिका है। दुकानदार जानबूझकर बेचते हैं या अभी तक इससे अनजान थे यह बहुत बड़ा सवाल है। इस पर जांच की जा रही है।

जंघई जंक्शन के सामने ताल-तलैया बनी सड़क आवागमन बाधित

अखंड भारत संदेश

जंघई। बारिश में जंघई जंक्शन के सामने सड़क ताल तलैया बनी हुई है इस समय आवागमन बाधित हो रहा है लोग पानी में आवागमन कर रहे हैं। स्टेशन पर विभिन्न निर्माण कार्य चल रहा है काम करा रहे ठेकेदार की लापरवाही के कारण जंघई स्टेशन पर जाने वाले रास्ते मे जलजमाव हो गया जिससे यात्रियों को पानी से होकर ट्रेन पकड़ने के लिए जाना पड़ रहा है।जिससे यात्रियों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है।वाराणसी प्रतापगढ़ रेलवे रुट पर स्थित जंघई रेलवे स्टेशन ए श्रेणी का स्टेशन है यहा वार्षिक आय 30 करोड़ है। यहां से यात्री वाराणसी प्रतापगढ़ जौनपुर प्रयागराज की तरफ जाने के लिए ट्रेनों की अदला बदली करते है इन दिनों जंघई स्टेशन के सौन्दर्यीकरण का काम चल रहा है। ठेकेदार द्वारा खोदाई किया गया है और पानी निकालकर बाहर किया जा रहा है वही पानी स्टेशन जाने वाले रास्ते मे फैल गया है जिससे यात्रियों को पानी से होकर गुजरना पड़ रहा है ।

शिक्षक महासंघ चुनाव हेतु नागरिक पीजी कॉलेज जंघई में बैठक

अखंड भारत संदेश

जंघई। उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक महासंघ (फुपुक्टा) के चुनाव के निमित्त नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंघई में शिक्षक संघ की बैठक हुई। इकाई अध्यक्ष डॉ गंगेश दीक्षित और महामंत्री डॉ आनंद श्रीवास्तव को सर्वसम्मति से डेलीगेट चुना गया। महाविद्यालय के सभी शिक्षकों ने डॉ गंगेश दीक्षित को आगामी फुपुक्टा चुनाव में संयुक्त मंत्री पद हेतु अग्रिम बधाई और शुभकामना दिया। बैठक में डॉ प्रमोद कुमार तिवारी, डॉ रवि कुमार मिश्र, डॉ रमाकांत, ब्रजेश यादव, डॉ ओम प्रकाश मिश्र, डॉ अरविंद कुमार राय सहित सभी शिक्षक साथी उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप

पूर्व विधायक अनुग्रह नारायण की हर्षवर्धन बाजपेई के चुनाव के खिलाफ याचिका खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रयागराज में शहर उत्तरी के विधायक हर्षवर्धन बाजपेई के 2017 के चुनाव की वैधता के खिलाफ कांग्रेस प्रत्याशी अनुग्रह नारायण सिंह की चुनाव याचिका को अर्थहीन करार देते हुए खारिज कर दिया है।कोर्ट ने कहा है की 2017 में गठित विधानसभा का पांच वर्ष का कार्यकाल समाप्त हो चुका है और 2022 में नया चुनाव हो चुका है। याची ने ऐसे कोई दस्तावेजी साक्ष्य या तथ्य नहीं पेश किए, जिससे विपक्षी विधायक पर भ्रष्ट आचरण के आरोप की पुष्टि होती हो।याचिका में चुनाव अधिकारी पर कर्तव्य पालन ठीक से न करने के आरोप से विपक्षी विधायक का कोई संबंध नहीं है। इसलिए याचिका अर्थहीन होने के नाते निरस्त होने योग्य है। यह आदेश न्यायमूर्ति राजबीर सिंह ने अनुग्रह नारायण सिंह की चुनाव याचिका पर दिया है।विपक्षी विधायक हर्षवर्धन बाजपेई ने अर्जी दी कि विधानसभा भंग हो चुकी है। नया चुनाव हो चुका है। याचिका अर्थहीन करार देकर खारिज की जाए। याची ने आपत्ति की कि यदि विपक्षी पर झूठे तथ्य देकर भ्रष्ट आचरण का आरोप साबित हो जाता है तो उसे अगले छह साल तक चुनाव लड़ने के अयोग्य ठहराया जा सकता है। इसलिए याचिका अर्थहीन नहीं हुई है। दोनो पक्षों की दलीलों और सबूतों पर विचार करते हुए कोर्ट ने कहा याची विपक्षी विधायक के खिलाफ ऐसा सबूत देने में विफल रहा। जिससे कहा जा सके कि विधायक ने भ्रष्ट आचरण किया हो। क्योंकि, विधानसभा भंग हो चुकी है और नया चुनाव हो चुका है। इसलिए चुनाव याचिका अर्थहीन होने के कारण खारिज की जाती है।

अतीक अहमद की 16 करोड़ की तीन संपत्तियां कुर्क

प्रयागराज व लखनऊ स्थित तीन संपत्तियों पर कार्रवाई

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। माफिया अतीक अहमद की 16 करोड़ रुपये मूल्य की तीन संपत्तियां बुधवार को पुलिस ने कुर्क कर दी। इनमें धूमनगंज व लखनऊ के इंदिरापुरम फैजुल्लागंज में स्थित संपत्तियां शामिल हैं। दोनों जगहों पर स्थित संपत्तियों का अनुमानित मूल्य आठ-आठ करोड़ बताया गया है। दोपहर में दो बजे के करीब पुलिस व प्रशासन की संयुक्त टीम कसारी मसारी पहुंची। यहां अतीक के पैतृक मकान से 500 मीटर दूरी पर ही उसके दो बेशकीमती भूखंड चिह्नित किए गए थे। पुलिस टीम ने इन भूखंडों पर नोटिस बोर्ड लगवाया और फिर ढोल बजवाकर मुनादी कराई। कसारी मसारी स्थित जिन दो भूखंडों को कुर्क किया गया, उसका कुल क्षेत्रफल लगभग एक बीघा चार बिस्वा है। दोनों भूखंडों का अलग-अलग अनुमानित मूल्य करीब चार-चार करोड़ रुपये है।

अतीक के नाम पर दर्ज, 2001 में खरीदे गए : जिन दो भूखंडों को कुर्क किया गया वह 2001 में अतीक अहमद के नाम पर खरीदे गए थे। इसका गाटा संख्या 1326 व 1327 है। मौके पर लगवाए गए बोर्ड में यह नोटिस अंकित है कि उक्त दोनों संपत्तियों को गैंगस्टर एक्ट की धारा 14(1) के तहत की गई है। ऐसे में दोनों संपत्तियों पर कोई अतिक्रमण करता है तो उसके खिलाफ विधिक कार्रवाई की जाएगी।

लगभग 800 वर्ग मीटर में बना था आलीशान मकान : उधर अतीक के लखनऊ स्थित मकान पर कार्रवाई के लिए एसपी क्राइम सतीश चंद्र के नेतृत्व में एक टीम सुबह ही लखनऊ के लिए रवाना हो गई। दोपहर बाद टीम वहां पहुंची जिसके बाद लखनऊ पुलिस व प्रशासन की मदद से शेरवानी नगर, फैजुल्लागंज में पहुंची और मकान को कुर्क कर दिया। पुलिस अफसरों ने बताय कि मकान में ताला बंद था। इसका कुल क्षेत्रफल 799.25 वर्ग मीटर है। यह कार्रवाई जिलाधिकारी प्रयागराज के 14 सितंबर को जारी आदेश के तहत की गई। कार्रवाई करने वाली टीम में एसपी क्राइम के अलावा सीओ सिविल लाइंस नरसिंह नारायण सिंह, इंस्पेक्टर धूमनगंज राजेश कुमार मौर्य व अन्य पुलिसकर्मी मौजूद थे। माफिया के खिलाफ चल रहे अभियान के क्रम में यह कार्रवाई की गई है। उसके सहयोगियों की अवैध रूप से अर्जित संपत्तियों का भी पता लगाया जा रहा है।

-शैलेश कुमार पांडेय, एसएसपी

दहेज हत्या के आधा दर्जन मुलजिमों में तीन गिरफ्तार, शेष की तलाश जारी

कोरांव। थाना पुलिस खीरी तहसील कोरांव ने दहेज हत्या में वांछित अभियुक्त कुल छ लोगों में से कुल तीन नामजद मुलजिमों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया,जिससे क्षेत्र में हरकंप मच गया,बाकी तीन मुलजिमों की गिरफ्तारी का प्रयास जारी है। बतादें कि आरती पुत्री जगपति अनुसूचित जाति उम्र बीस वर्ष निवासी ग्राम मझिगवा पोस्ट पवारी प्रयागराज की शादी पिछले साल माह मई में राम बाबू पुत्र बृजलाल ग्राम पनासी पटेहरा थाना खीरी के साथ रीति रिवाज के अनुसार हुई थी, और दहेज भी पर्याप्त माता पिता ने दिया था। किंतु शादी के बाद से ही आरती के पति और ससुराल वाले दहेज कमी का बहाना बना कर परेशान करते रहे। और मारते पीटते थे। आरती ने घर मायके सारी बातें मां बाप भाई आदि से बताई। फिर भी मायके वालों ने आरती को समझा बुझा कर ससुराल भेज दिया। मृतका चार दिन पहले ससुराल अपने जेठ के साथ गई। 12 सितंबर को उसके पति रामबाबू ने दोपहर मार पीट की। किंतु ससुराल के लोग उल्टा उसे ही कोशते रहे। आरोप है कि पति और जेठानी ने मिल कर उसका गला दबा दिया,और जब मर गई तो गले में जेठानी आदि ने अपनी धोती से फंदा गले में फंसा कर लटका दिया और यह शोर किया कि आरती ने आत्म हत्या कर ली है। वैसे मृतका ने मायके दोपहर हत्या के पूर्व फोन से पति और जेठानी द्वारा मार पीट किए जाने की बात भी बताई थी। ससुराल वाले मृतका आरती के भाई से फोन पर 13 सितंबर को शाम छःबजे बताया कि तुम्हारी बहन की मौत हो गई है। घर वाले गए तो लाश फांसी के फंदे सहित जमीन पर पैर टेके लटकी थी। जिसकी प्रथिमिकी मृतका के भाई हरी शंकर ने खीरी थाने में दर्ज कराई। थाना प्रभारी खीरी अनिल कुमार वर्मा ने अभियुक्तों की तलाश कर मृतका की सास सावित्री देवी,ससुर बृजलाल पुत्र जगदेव, पति राम बाबू पुत्र बृजलाल ग्राम पनासी पटेहरा खीरी को लालतारा चौराहे से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया पोस्टमार्टम रिपोर्ट में गले में लटकने से मृत्यु की पुष्टि हो गई है।

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में छात्रों ने विरोध प्रदर्शन कर गधे को जोड़ा हाथ, फीस वृद्धि को वापस करने की लगाई गुहार

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंघ भवन पर फीस वृद्धि के विरोध में जारी आमरण अनशन के दौरान छात्रों ने बुधवार को अनोखा तरीका अपनाया। छात्रों ने कहीं से एक गधा विश्वविद्यालय परिसर में मंगा लिया। इसके बाद वे हाथ जोड़कर गधे के सामने बैठ गए और फीस बढ़ोतरी वापस लेने की विनती करने लगे। गधा लाकर विरोध जताने का पता चला तो पुलिस भागी-भागी पहुंची। पुलिसवालों ने गधे को छात्रों के कब्जे से छुड़ाया और उसको कांजी हाऊस भेज दिया गया। छात्रों ने इस बारे में कहा कि फीस वृद्धि वापस कराने के लिए उन्होंने सांकेतिक विरोध प्रदर्शन किया। अब वे रोज नए तरीकों के जरिए इसका विरोध जताएंगे।

गधे के साथ निकाली सदबुद्धि यात्रा : इवि में गधे को प्रतीक बनाकर छात्र सत्यम कुशवाहा के साथ काफी संख्या में छात्रों ने सदबुद्धि यात्रा निकाली। पुलिस ने छात्रों को छात्रसंघ भवन पर रोक दिया। इसके बाद छात्रों और प्रशासन के बीच तनातनी की स्थिति बन गई। छात्र गधे को विश्वविद्यालय परिसर में घुमा कर चार गुना फीस वृद्धि का विरोध दर्ज कराना चाहते थे। छात्रों ने चेतावनी दी कि फीस वृद्धि का फैसला वापस नहीं लिया गया तो विश्वविद्यालय एक बड़े आंदोलन के लिए तैयार रहे। आदर्श भदौरिया, राहुल पटेल, हरेंद्र यादव, अजय राज त्रिपाठी मौजूद थे।

फीस बढ़ाने के विरोध में शवयात्रा निकालेगी एबीवीपी: फीस वृद्धि का विरोध करने के लिए छात्र संगठन अलग-अलग तरीके अपना रहे हैं। मंगलवार को थाली और शंख बजाकर विरोध करने वाले एबीवीपी कार्यकताओं ने बुधवार को बैठक कर उग्र आंदोलन की ओर आगे बढ़ाने का फैसला लिया गया। साथ ही कार्यकताओं ने बैठक में बुद्धि- शुद्धि यज्ञ कराने और शव यात्रा निकालने का निर्णय लिया है। एबीवीपी काशी प्रांत के प्रांत मंत्री अतेंद्र सिंह. आलोक त्रिपाठी, सुधांशु राय, राज चौधरी, आशुतोष मिश्र, अभिषेक सिंह, देव मौर्य मौजूद थे।

शिक्षकों का चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

अखंड भारत संदेश

मेजा। बुधवार को ब्लॉक संसाधन केंद्र मेजा में चार दिवसीय निपुण भारत मिशन के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का द्वितीय प्रशिक्षण का समापन खंड शिक्षा अधिकारी मेजा, नीरज कुमार श्रीवास्तव की उपस्थिति में संपन्न हुआ। समापन के अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रशिक्षणार्थियों से प्रशिक्षण का फीडबैक प्राप्त करते हुए गणित के कुछ बुनियादी टिप्स पर चर्चा किया। ए आर पी मेजा डॉ गोपाल कृष्ण यादव द्वारा हिंदी भाषा के बुनियादी कौशल जैसे मौखिक भाषा का विकास, डिगोडिग वह समझ के साथ पठन पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया। ए आर पी पुष्पराज सिंह व गिरीश कुमार तिवारी द्वारा गणित ट्रेकर्स पर विस्तार पूर्वक बताया गया। रामनिरंजन द्वारा पाठ योजना पर चर्चा किया गया। कमलाकांत पांडे द्वारा चेतना गीत व विभिन्न गतिविधियां प्रशिक्षणार्थियों को दी गई। प्रवीण कुमार तिवारी द्वारा प्रशिक्षण का निरीक्षण करते हुए प्रशिक्षणार्थियों को निर्देश दिया कि प्रशिक्षण का लाभ बच्चों को होगा तभी प्रशिक्षण सफल होगा। इस दौरान सत्यम कुमार, कमर अब्बास, शरद कुमार, जिलेदार, प्रितपाल कौर त्रिपाठी, पूनम मिश्रा, निधि रघुवंशी, सुपर्णा बटब्याल, सौम्या सिंह, पारूल यादव, सचिन उपाध्याय सहित सभी प्रशिक्षणार्थी उपस्थित रहे।

दुष्कर्म का वांछित आरोपी गिरफ्तार, आधा दर्जन से अधिक लोगों का शांतिभंग में चालान

शंकरगढ़। यमुनापार के शंकरगढ़ थाने की पुलिस ने बलात्कार के आरोपी को गिरफ्तार किया है। इसके अलावा सात लोगों का शांतिभंग की आशंका में चालान किया गया है। शंकरगढ़ के थानाध्?क्ष मनोज कुमार सिंह ने बताया कि बलात्कार के एक प्रकरण में वांछित चल रहे शैलेंद्र कुमार पांडेय पुत्र सतीश पांडेय को क्षेत्र के सेननगर तिराहे के समीप से उस समय गिरफ्तार किया गया, जब शैलेंद्र कहीं भागने की फिराक में था। बलात्कार का आरोपी शैलेंद्र कौंधियारा थाना क्षेत्र के ग्राम घोघवा का रहने वाला है। उसके खिलाफ विधिक कार्रवाई की जा रही है। एसओ ने बताया कि शैलेंद्र के खिलाफ धारा 363, 366, 376, 3/4 पाक्सो एक्ट व 3(2)5 एससीएसटी एक्ट का केस दर्ज किया गया है। इसी क्रम में शंकरगढ़ पुलिस ने सात लोगों का शांतिभंग में चालान किया है।उपनिरीक्षक संतोष कुमार व विवेक कुमार राय की टीम ने सत्येंद्र मांझी पुत्र संतलाल मांझी (राजापुर, सोहागी, रींवा, एमपी), संदीप कुमार पुत्र मंगलाप्रसाद (मौहरिया, शंकरगढ़), कामताप्रसाद पुत्र मंगलाप्रसाद (मौहरिया, शंकरगढ़), बृजेश आदिवासी पुत्र राजू आदिवासी (चौकठा, शंकरगढ़), राज मेहतर पुत्र अशोक कुमार (चाकघाट, रींवा, एमपी), बबलू धरिकार पुत्र छोटेलाल धरिकार (शिक्षकनगर, शंकरगढ़ कस्बा) और सुरेंद्र धरिकार पुत्र चपरी धरिकार (निवासीउपरोक्त) का शांतिभंग में चालान किया गया है।

खण्ड विकास अधिकारी ने खेलकूद प्रतियोगिता का किया उद्घाटन

अखंड भारत संदेश

करछना। प्रयागराज तहसील के चाका ब्लाक में आयोजित युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल विभाग प्रयागराज के तत्वाधान में खंड स्तरीय ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन पूर्व माध्यमिक विद्यालय पिपराव के खेल ग्राउंड में आयोजित किया गया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि खंड विकास अधिकारी चाका देव कुमार ने फीता काटकर खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ किया इस मौके पर कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में चाका प्रधान संघ अध्यक्ष नीलम पथिक प्रधान बालापुर ,महेश कुमार प्रधान तिलखवार के नेतृत्व में खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें खेल विधा में एथलेटिक्स खेलकद प्रतियोगिता में बालक एवं बालिका वर्ग के टीमों ने प्रतिभाग किया वालीबाल खेलकूद भारोत्तोलन कुश्ती कबड्डी आदि का आयोजन में दर्जन भर से अधिक टीमों ने प्रतिभाग किया तथा प्रतिभागी टीम को मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि द्वारा खिलाड़ियों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया कार्यक्रम का संचालन दिनेश कुमार ने किया इस मौके पर ब्लॉक करछना के बीओ संतोष कुमार सिंह सहित बड़ी संख्या में खेल प्रेमियों ने भाग लिया वॉलीबॉल प्रतियोगिता में पिपराव की टीम विजेता रही , दूसरे स्थान पर छरबना की टीम रही वही खेलकूद प्रतियोगिता में कुश्ती कबड्डी भारोत्तोलन वालीबाल एथलेटिक विजेता टीम को प्रतियोगिता में पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया और सभी सभी खिलाड़ियों एवं खेल प्रेमियों को प्रतियोगिता के आयोजक मंडल की तरफ से शुभकामनाएं दी गई।

हिंदी हमारी शान है, देश का अभिमान है : अंकिता खेरा

सेंट पीटर्स स्कूल में हिन्दी दिवस के उपलक्ष में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। क्षेत्र के जानवर स्थित सेन्ट पीटर्स को-एजुकेशनल इंग्लिश मीडियम विद्यालय मे हिन्दी दिवस मनाया गया। इस उपलक्ष्य मे कई प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई हैं। प्रतियोगिता में कक्षा 1 से 4 तक श्रुतिलेख प्रतियोगिता, कक्षा 5 और 6 मे हिन्दी दिवस स्लोगन प्रतियोगिता एवं कक्षा 7 एवं 8 मे हिन्दी दिवस निबंध प्रतियोगिता संपन्न हुई। प्रतियोगिता में सभी बच्चों ने प्रतिभाग किया। मनु यादव, अनन्या केशरी, आसुतोष, आरुषि पटेल आँचल, अदिति, श्रेया, रितिका आदि सभी विद्यार्थी प्रतिभाग में अव्वल रहे। शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की देख-रेख मे प्रतियोगिता संपन्न हुई। विद्यालय प्रधानाचार्य श्रीमती अंकिता खेरा ने 14 सितंबर यानी हिंदी दिवस पर प्रकाश डाला। कहां थी हिन्दी भाषा भारत की राष्ट्रभाषा है। हिन्दी भाषा भारत मे सबसे ज्यादा बोली जाने वाली, चौथी भाषा है। भारत के आजादी के बाद सन 1949 मे 14 सितंबर को संविधान सभा मे एकमत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी भाषा ही भारत की राज्यभाषा तथा राष्ट्रभाषा होगी। इसी निर्णय को महत्व देने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुसार सन 1953 से पूरे भारतवर्ष मे प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को पूरे भारत में हिन्दी दिवस के रूप मे मनाया जाता है। विद्यालय के प्रबंधक अभिषेक खेरा ने बच्चों को बताया कि हिन्दी भाषा हमारा गर्व है, अतः हमे अपने भाषा का सम्मान हृदय से करना चाहिए।

हिन्दी दिवस पर छात्र छात्राओं ने कविता पाठ का किया आयोजन

नैनी। राजर्शी पुरुषोत्तम दास टंडन इंटर कॉलेज महेवा के सभागार में हिंदी दिवस समारोह हर्षोल्लास से मनाया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि शुआट्स के प्रोफेसर डॉ संगीता अल्फ्रेड रही तथा विशिष्ट अतिथि प्रबंधन समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री भगवत प्रकाश कुशवाहा रहे । कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य स्वामी नाथ त्रिपाठी ने तथा कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर राम प्रकाश मिश्रा ने किया। इस अवसर पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा हिंदी कविता पाठ एवं निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया गया तथा प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रोफेसर संगीता अल्फ्रेड ने हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करने का आह्वान किया भगवत प्रकाश कुशवाहा जी ने हिंदी के महत्व एवं राजर्षि टंडन के योगदान पर प्रकाश डाला । प्रधानाचार्य ने स्वागत भाषण में अतिथियों का स्वागत किया एवं आभार सुभाष चंद जी ने व्यक्त किया। इस अवसर पर कार्यक्रम को विद्यालय के शिक्षक अतुल कुमार सिंह विनोद कुमार सिंह श्री अशोक मिश्रा श्रीमती आकांक्षा कुशवाहा अजीत जी श्रीमती रचना सिंह सतीश भारतीया मनोज आदि ने संबोधित किया।

शिक्षक सहित बच्चों ने मनाया राष्ट्रीय हिन्दी दिवस

सहसों। क्षेत्र के भरद्वाज गुरुकुलम संस्थान देवनहरी रुदापुर के प्रांगण में 14 सितंबर राष्ट्रीय हिन्दी दिवस पर संस्थान के प्रबंधक विनय उपाध्याय ने राष्ट्रीय हिन्दी दिवस के बारे में बच्चों को बताते हुए कहा कि हम आजादी के 75 साल के बाद भी अपनी राष्ट्रभाषा नहीं दे सके। अगर इंसान के पास अपनी मात्रिभाषा ना हो तो वह गूंगा कहलाता है। जबकि हिन्दी भाषा अनेकता में एकता को स्थापित करने की सूत्रधार है। हिन्दी भाषा की यह विशेषता है कि यह जो लिखी जाती है ठीक वही बोली जाती है जबकि अन्य भाषा में लिखा कुछ जाता है पढ़ने पर वह कुछ होता है। आज हिन्दी विश्व स्तर पर नेपाल, भूटान, वर्मा, मारीशस, दुबई, अमेरिका आदि देशों में भी बोली जाती है। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसमें समरसता, भाईचारा एवं प्रेम सौहार्द की झलक साफ साफ दिखाई देती रहती है। इस मौके पर आदि वक्ताओं ने भी हिन्दी के महत्व और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सुरक्षा निषाद, किरण दूबे, संजय शर्मा, संयोगिता सिंह, राजन कुमार, आशा शुक्ला, प्रमुदित यादव, रंजन चौरसिया, प्राची श्रीवास्तव, सुमित्रा सिंह सहित छात्र-छात्राएं तथा अभिभावक उपस्थित रहे।

हिंदी भाषा के उन्नति के लिए हिंदी दिवस मनाया जाता हैं

सिरसा। मेजा क्षेत्र हिंदी दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। श्री राम प्रताप इंटरमीडिएट कॉलेज सिरसा, श्री लालाराम लाल अग्रवाल इंटर मीडिएट कॉलेज सिरसा, लाला लक्ष्मी नारायण डिग्री कॉलेज सिरसा, श्री के एस चौधरी गर्ल्स इंटरमीडिएट कॉलेज छतवां रोड सिरसा, सेंट पीटर स्कूल छटतवां सिरसा ,एसडी पब्लिक स्कूल एंड कॉलेज रामनगर , विलियन्ट पब्लिक स्कूल बरी,श्री श्रीनाथ इंटरमीडिएट कॉलेज खानपुर ,सरस्वती शिशु मंदिर सिरसा,मनोमय प्लेवे स्कूल हनुमान पर सिरसा, आर ए मॉडर्न पब्लिक स्कूल लोहारी,श्री श्रीधर सिंह पीजी कालेज एंड विधि महाविद्यालय गोसौरा कला मेजारोड, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और प्रोत्साहित करने के लिए हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है. विश्व में करीब 420 मिलियन लोग हिंदी को मातृ भाषा के रूप में और करीब 120 मिलियन लोग दूसरी भाषा के रूप में बोलते हैं. इसी क्रम में 14 सितंबर से 21 सितंबर तक हिंदी सप्ताह या राजभाषा सप्ताह के रूप में मनाया जाता है.।

डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय को मिला शब्द शिल्पी सम्मान

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। हिंदी दिवस के पावन अवसर पर यमुनापार प्रयागराज से विगत चार दशक से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका साहित्यांजलि प्रभा के संपादक डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय को अखिल भारतीय साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था प्रेरणा परिवार पुवायां शाहजहाँपुर द्वारा *शब्द शिल्पी सम्मान* से अलंकृत किया गया है। उपरोक्त जानकारी पत्रिका के संपादकीय विभाग से डॉ राम लखन चौरसिया ₹ वागीश ₹ द्वारा दी गई है। डॉ वागीश ने बताया कि पत्रिका के संपादक को इस माह विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक सम्मान पत्र मिले हैं जिसमें यह सम्मान आज हिंदी दिवस के अवसर पर दिया गया है इससे पूर्व डॉ उपाध्याय को साहित्य सर्जन मंच कौशांबी द्वारा सारस्वत प्रशस्ति पत्र एवं अनिल अभिव्यक्ति धामपुर बिजनौर द्वारा अमृत महोत्सव साक्षी सम्मान प्रदान किया गया है डॉ उपाध्याय स्वयं अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा देशभर के साहित्यकारों पत्रकारों कवियों को निरंतर सम्मानित करते रहते हैं हिंदी दिवस पखवारा समापन के अवसर पर अनन्य हिंदी सेवी सम्मान देने की योजना पर कार्य चल रहा है अवध है साहित्य अकादमी एवं तारिका विचार मंच प्रयाग तथा भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ द्वारा भी निरंतर सम्मान की श्रृंखला चलती रहती है डॉ उपाध्याय को शब्द शिल्पी सम्मान प्राप्त होने पर श्री मुनेश्वर मिश्र मथुरा प्रसाद धुरिया अजय कुमार पांडेय जयशंकर त्रिपाठी राजेश कुमार मिश्र श्याम सुंदर सिंह पटेल कुलदीप शुक्ल पवनेश कुमार पवन रमाकांत त्रिपाठी मुनेश मिश्र शिवम मिश्र उत्कर्ष उपाध्याय आदि ने सहर्ष बधाई दी है।

हिन्दी को अपनाइये, हिन्दी है आसान : मिश्र

हिन्दी दिवस पर जुटे कवियों ने बांधी समां

करछना। क्षेत्र के रामपुर स्थित श्रीबृज मंगल सिंह इंटर कालेज के पंडित श्रीनारायण मिश्र सभागार में हिन्दी दिवस के मौके पर कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता प्रवक्ता प्रदीप कुमार ने किया। इस दौरान वीणा पाणी वंदना करते हुए लोक गायिका मोहिनी श्रीवास्तव ने पढ़ा- शब्द, स्वर, सुचि, शारदे मां, ज्ञान दे उद्धार दे।संचालन कर रहे वरिष्ठ गीतकार राजेन्द्र शुक्ल ने कहा हिंदी को अपनाइये,हिंदी है आसान। हिंदी सबको जोड़ती हिंदी बहुत महान। जितेन्द्र जलज ने हमारी बात,बोली,ज्ञान का आधार है हिंदी जैसे शब्द सुमन अर्पित कर मात्रृभाषा की अर्चना की। लोककवि रामलोचन सांवरिया ने कहा कि-रहे स्वस्थ हिंदी सदा करेगें अंतर योग।सांस्कृतिक सहयोग से रखिए देश निरोग। संयोजक हास्य कवि अशोक बेशरम ने छंद प्रस्तुत करते हुए कहा-सावन कै कजरी झुलना,अउर फागुन फाग की तान है हिंदी।कवि संतोष शुक्ल समर्थ ने हिंदी का अभिनंदन करते हुए कहा कि,हिंदी है अभिव्यक्ति हमारी,भाषा हिंदुस्तान की। आओ मिलकर बात करें हम नित इसके उत्थान की। सबरेज अहमद ने पढ़ा हिंदी भुला दिए तो तुम्हे जानेगें कैसे,वंशज रहीम, तुलसी के पहचानेगें कैसे। इसके बाद कवि विपिन विहारी त्रिपाठी और मोहन जी शुक्ल द्वारा प्रस्तुत काव्य ने हिंदी का अभिनंदन किया।स्कूल की छात्राओं ने भी स्वरचित कविताएं सुनाई। अध्यक्षता कर रहे प्रदीप कुमार ने कहा कि हम सबको चाहिए कि अपने घर आंगन और मन की इस बोली का सौ फीसदी प्रयोग करते हुए पूरी तरह से अमल में लाएं।उन्होने सभी आमंत्रित कवियों और बाल कवियों को अंगवस्त्रम प्रदान कर सम्मानित किया।इस मौके पर जगतपाल,विजय सिंह,सुधा,मो0परवेज,सुरेश कुमार,रमेश चंद्र तिवारी,विश्वेश ओझा,कमला शंकर त्रिपाठी,वेद श्रीवास्तव समेत शिक्षक,कर्मचारी और बच्चे मौजूद रहे।

कार्यालय ग्राम पंचायत हर्रई, वि. ख. करछना प्रयागराज

टेण्डर/कोटेशन

वित्तीय वर्ष 2022–23 मे ग्राम पंचायत हर्रई विकास खण्ड करछना में कराये जाने वाले विकास कार्यो में मनरेगा, राज्य वित्त/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत अद्योलिखित कार्यो के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति एवं कार्य की मयमजदूरी सहित आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 15–09–2022 से दिनांक 22–09–2022 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत हर्रई में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 23–09–2022 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला 23–09–2022 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्तें लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	प्राथमिक विद्यालय हर्रई बाउण्ड्री वॉल निर्माण कार्य	2.15 लाख	1 माह

विजय शंकर तिवारी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत हर्रई
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/ग्राम पं. वि. अ./टेण्डर/ कोटेशन/ 2022-23/ दिनांक

रामरूप सिंह
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत हर्रई
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

बच्चों के व्याकरण के ज्ञान को करें स्थायीः डा0 बृजभानु

सरस्वती शिशु मंदिर में हुआ हिन्दी दिवस कार्यक्रम का आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सरस्वती शिशु मंदिर चिलबिला पूर्वी में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पीबीपीजी कालेज के पूर्व प्राचार्य डा0 बृजभानु सिंह ने दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बाल कल्याण समिति के मंत्री संजीव आहूजा ने किया। इस दौरान डा0 बृजभानु सिंह ने कहा कि बच्चों के व्याकरण के ज्ञान को स्थायी करने को विद्यालय की विशेषता बताया। इस मौके पर भैया-बहिनों के माडल और प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए उनकी प्रषंसा किया। भैया-बहिनों में कार्तिकेय यादव, अखिल विष्वकर्मा, अथर्वदेव, निखिल दुबे, रौनक पटेल, आदर्ष उमरवैष्य, पूर्णेन्दु शुक्ला, अंश सिंह मौजूद रहे। इस मौके पर विद्यालय के अध्यक्ष रोषनलाल उमरैवष्य ने विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था को और सुदृढ़ करने का आष्वासन दिया। इस अवसर पर नेहा, मंजू, सविता, पिंकी, आरती, सुनीता, विभा शुक्ला, बृजेश तिवारी मौजूद रहे। अंत में प्रधानाचार्य दिग्विजय नाथ पाण्डेय ने सभी के प्रति आभार जताया।

सरस्वती शिशु मंदिर में दीप प्रज्जवलित करते पूर्व प्राचार्य डा0 बृजभानु सिंह

सृजनशीलता कार्यशाला एवं बालकवि सम्मेलन सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सृजना साहित्यिक संस्था उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में हिन्दी दिवस पर शारदा संगीत महाविद्यालय प्रतापगढ़ में बच्चों में कविता, निबंध, कहानी इत्यादि विधाओं के लेखन के विकास हेतु सृजनशीलता कार्यशाला एवं बालकवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। बाल-किशोर कवियों ने एकमत से हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा घोषित करने की मांग की। लेखन का प्रशिक्षण देते हुए कार्यशाला के अध्यक्ष डॉ. दयाराम मौर्य रत्न ने कहा कि कविता, कहानी तथा निबंध लिखने के लिए विषय पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है। मुख्य अतिथि ट्रस्टी आनन्द मोहन ओझा ने कहा कि हिन्दी बहुत मधुर भाषा है। हिन्दी अब वैश्विक भाषा बन चुकी है। भारतीय संस्कृति की यह संवाहक है। बाल-किशोरों ने एक से बढ़कर एक रचनाएं सुनाई। उनके नाम आंचल सिंह, जयंती मिश्रा, रोहित, रेखा मौर्य,शिवम तिवारी, अर्नव आनन्द, अभिनव पाल, नन्दिनी शर्मा, पाण्डेय, प्रभाकर पाण्डेय अदिति केसरवानी हैं। इस अवसर पर कुसुम लता श्रीवास्तव, विशाल यादव, अशोक कुमार तिवारी, बीना श्रीवास्तव, प्रज्ञा श्रीवास्तव ने विचार व्यक्त किए। संचालन प्रभाकर पाण्डेय ने किया। अंत में हिन्दी गान का सामूहिक गायन किया गया।

बाल कवि सम्मेलन में अपनी कविता कहते बाल किशोर।

स्नातकोत्तर महाविद्यालय में धूमधाम से मनाया गया हिंदी दिवस

पट्टी, प्रतापगढ़। बुधवार को पट्टी नगर स्थित स्नातकोत्तर महाविद्यालय में धूमधाम से हिंदी दिवस मनाया गया। इस दौरान वक्ताओं ने हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उसे अपने जीवन में हिंदी को अपनाने की बात कही। कार्यक्रम में महाविद्यालय के सैकड़ों छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्राचार्य डॉ अखिलेश पांडे ने कहा कि हिंदी आम जनमानस की भाषा है, इसे अपनाने से ही इसका महत्व और बढ़ेगा। 14 सितंबर 1949 को इसे राजभाषा के रूप में दर्जा दिया गया उन्होंने बताया कि विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी को मनाया जाता है।

विश्व की भाषा बनने की ओर अग्रसर है हिंदीः भदंत शांति मित्र

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनपद हिंदी साहित्य सम्मेलन के कार्यक्रम में एमडीपीजी के सभागार में बोलते हुए अंतरराष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान के अध्यक्ष भदंत शांति मित्र ने कहा कि आज विश्व में योग शब्द को लोगों ने सम्मान दिया है। योग हिंदी का ही एक शब्द है। आज हिंदी विश्व की भाषा बनने की ओर अग्रसर है। भदंत शांति मित्र बुधवार को जनपद हिंदी साहित्य सम्मेलन के कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उद्घाटन अतिथि के रूप में सदर विधायक राजेंद्र कुमार मौर्य ने कहा कि संस्कृत से उत्पन्न हुई हिंदी आज दुनिया में कई देशों की भाषा बन चुकी है। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन करके सदर विधायक राजेंद्र कुमार मौर्य ने किया। मुख्य अतिथियों एवं कवियों को माला पहनाकर एवं शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। मुख्य वक्ता के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर योगेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि हिंदी को किसी सहारे की जरूरत नहीं है। जैसे नदी अपने मार्ग को स्वयं प्रशस्त कर लेती है उसी तरह हिंदी भी निर्बाध रूप से आगे बढ़ रही है।

महाविद्यालय में हिन्दी दिवस पर आयोजित हुई संगोष्ठी

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। हिन्दी एक ऐसी वैज्ञानिक भाषा है जिसने युगों युगो से हमारी संस्कृति को उन्नत किया है उपरोक्त बातें बुधवार को हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में प्रोफेसर इन्दु रेखा सिंह ने कही।

उन्होंने कहा कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जिसमें जो लिखा जाता है,वही पढ़ा जाता है। गोष्ठी के दौरान प्रो. राम लखन सिंह ने कविता कुटिल ध्येय की राजनीति से पीड़ित हिन्दी भाषा पर प्रकाश डाला। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कालेज के प्राचार्य प्रो. शिवम श्रीवास्तव ने कहा कि पिछले कई वर्षों से हिन्दी के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है यदि हिन्दी को सही महत्व दिया जाता तो आज हिन्दी के संरक्षण के लिए हिन्दी दिवस की जरुरत नहीं होती। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए पूर्व प्राचार्य प्रो. सूर्य भान सिंह ने कहा कि हिन्दी भाषा का प्रयोग हमें अधिकता से करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन डा0 सृष्टि ने किया। इस अवसर पर प्रो0 उग्रसेन सिंह, प्रो0 रामकरन, प्रो0 रेखा सिंह, प्रो0 शिव भूषण, अफसार अहमद, मुन्ना लाल पांडे, मीना आदि सहित महाविद्यालय के छात्र छात्राएं उपस्थित रही।

संगोष्ठी में बोलते प्राचार्य प्रो शिवम श्रीवास्तव।

राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन 12 नवम्बर को

प्रतापगढ़। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अनुपम दुबे ने बताया है कि उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के निदेर्शानुसार एवं जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रदीप कुमार सिंह के आदेशानुसार 12 नवम्बर 2022 दिन शनिवार को पूर्वान्ह 10 बजे से जनपद मुख्यालय के साथ ही साथ समस्त तहसील मुख्यालयों पर राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया है। इस राष्ट्रीय लोक अदालत में विशेष रूप से आपराधिक शमनीय वाद, धारा 138 पराक्रम्य लिखित अधिनियम वाद, आर्बिटेज्शन वाद, बैंक वसूली वाद, मोटर दुर्घटना प्रतिकर याचिकायें, पारिवारिक वाद, श्रम वाद, भूमि अधिग्रहण वाद, विद्युत एवं जल बिल विवाद (चोरी से सम्बन्धित विवादों सहित), सर्विस में वेतन सम्बन्धित विवाद एवं सेवानिवृत्ति लाभों से सम्बन्धित विवाद, राजस्व वाद, अन्य सिविल वाद (किराया, सुखाधिकार, व्यादेश, विशिष्ट अनुतोष वाद), आपसी सुलह समझौते के आधार पर निस्तारित हो सकने वाले समस्त प्रकार के वादों का निस्तारण किया जायेगा। वादकारी अपने सम्बन्धित न्यायालय में सम्पर्क कर अपने वादों को राष्ट्रीय लोक अदालत हेतु सन्दर्भित कराकर लोक अदालत का लाभ उठाएं।

प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले मेधावियों को किया सम्मानित

मेधावियों को सममानित करते अतिथिगण।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। संस्कार ग्लोबल स्कूल टेउंगा में बुधवार को अलग-अलग प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले स्कूल के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। स्कूल की प्रिंसिपल समीना अख्तर और उमा सिंह ने जेईई एडवांस परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले शशांक सिंह, उत्कर्ष सिंह, जेईई मेन्स उत्तीर्ण करने वाले श्लोक श्रीवास्तव, अभिरुप शर्मा, मोहम्मद अरशद, संचित सिंह, दिव्यांश सिंह, वंशिका सिंह सोमवंशी एवं नीट की परीक्षा में सफल हुए ऋषभ नारायण उपध्याय को माल्यार्पण और मुंह मीठा कराकर सम्मानित किया। स्कूल की चेयरपर्सन डॉ. अंजना सिंह सेंगर, निदेशक संजय सिंह ने छात्र-छात्राओं को बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना किया। संचालन अविनाश सिंह ने किया। प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी, हिमांशु श्रीवास्तव, राहुल श्रीवास्तव, अमित सोनी आदि उपस्थित रहे।

आपत्ति 21 सितम्बर तक प्रस्तुत करेंः एडीएम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा ने जनसामान्य को सूचित किया है कि उत्तर प्रदेश स्टाम्प (सम्पत्ति का मूल्यांकन) (तृतीय संशोधन) अधिसूचना 01 दिसम्बर 2015 उत्तर प्रदेश स्टाम्प (सम्पत्ति का मूल्यांकन) 2022 तथा महानिरीक्षक निबन्धन उत्तर प्रदेश लखनऊ के निर्देश के क्रम में जनपद के समस्त उप निबन्धक कार्यालयों के 01 अक्टूबर 2022 से प्रभावी होने वाले मूल्यांकन सूची में संशोधन का प्रस्ताव समस्त उप निबन्धक कार्यालयों में उपलब्ध है। मूल्यांकन सूची में आपत्ति आमंत्रित करने हेतु दिनांक 21 सितम्बर 2022 तक का समय निर्धारित किया गया है। मूल्यांकन सूची के सम्बन्ध में यदि किसी भी व्यक्ति को आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0), सहायक महानिरीक्षक निबन्धन, समस्त तहसीलदारों, समस्त उप निबन्धकों के कार्यालय में विलम्बतम 21 सितम्बर तक आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है ताकि दिनांक 24 सितम्बर तक आपत्तियों का निस्तारण करते हुये 01 अक्टूबर 2022 से मूल्यांकन सूची प्रभावी किया जा सके। निर्धारित तिथि के उपरान्त किसी भी आपत्ति पर विचार नही किया जायेगा।

उपभोक्ताओं की समस्या के लिए आयोजित समाधान दिवस

परियावां, प्रतापगढ़। विद्युत उपकेंद्र कालाकांकर, कुसुवापुर,व संग्रामगढ़ में बिजली उपभोक्ताओं की समस्या के लिए 12 सितम्बर से 19 सितम्बर 22 तक विद्युत समाधान दिवस का आयोजन किया गया है जिसमे नया कनेक्शन, खराब मीटर को बदलवाना, नए मीटर को लगाना बिल सम्बन्धी शिकायत, लोड बढ़वाना, विधा परिवर्तन जैसी समस्याओं का निस्तारण उप केंद्रों पर किया जा रहा है। कालाकांकर नोडल अधिकारी सुनील कुमार यादव ने बताया कि उपभोक्ताओं की समस्या के लिए विभाग ने एक सप्ताह के लिए सभी उपकेंद्रों पर समाधान दिवस का आयोजन किया है ताकि उपभोक्ताओं को बिजली की समस्या से परेशान न होना पड़े।

पट्टी में विद्युत समाधान सप्ताह का आयोजन

सभी प्रकार की समस्यायों का होगा निस्तारण-एसडीएम

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। विद्युत समाधान सप्ताह का आयोजन पट्टी नगर में किया जा रहा है। इसके लिए विद्युत महकमे के आला अधिकारी मॉनिटरिंग भी कर रहे है। उत्तर प्रदेश के ऊर्जा मंत्री की तरफ से विद्युत उपभोक्ताओं की समस्याओं को देखते हुए 12 सितंबर से 19 सितंबर तक विद्युत समाधान सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

सभी विद्युत उपकेंद्र पर इसके लिए मौजूद एसडीओ जहां शिविर लगा कर के विद्युत से संबंधित समस्याओं के समाधान का निस्तारण कर रहे हैं वहीं लोगों को इस संबंध में जागरूक कर रहे हैं कि सभी उपभोक्ता एक सप्ताह के अंदर वह अपनी समस्याओं को लेकर के शिविर में समाधान करवा सकते हैं।

इस संबंध में एसडीओ पट्टी एसबी प्रसाद से बात करने पर उन्होंने बताया कि विद्युत समाधान योजना एक सप्ताह के लिए चलाया जा रहा हैं जिसमें बिल में हुई त्रुटियों तथा विद्युत कनेक्शन में किसी प्रकार की दिक्कत या फिर लोड घटाने बढ़ाने तथा तार के डैमेज होने संबंधी समस्या के लिए भी यह शिविर का आयोजन किया जा रहा है । उन्होंने पट्टी विद्युत उपकेंद्र से जुड़े हुए सभी लोगों से अपील किया कि यह सभी 19 सितंबर तक चलने वाले इस विद्युत समाधान सप्ताह के तहत आयोजित शिविर में आकर के अपनी समस्याओं रख सकते हैं उन्होंने बताया कि सुबह 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक शिविर में विद्युत विभाग के सभी मौजूद अधिकारियों के समक्ष अपनी समस्याओं को रख सकते हैं जिसका जल्द से जल्द निस्तारण किया जाएगा।

पट्टी में ब्लाक संसाधन केंद्र परिसर में भरा पानी

निपुण भारत मिशन प्रशिक्षण केंद्र तक पहुंचना हुआ मुश्किल

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी नगर स्थित बीआरसी केंद्र पर परिसर में पानी भरा हुआ है। इस समय निपुण भारत मिशन के तहत प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापक प्रधानाध्यापकों तथा शिक्षामित्रों का प्रशिक्षण कार्यक्रम बीआरसी केंद्र पर चल रहा है, लेकिन जल जमाव होने के कारण जहां एक तरफ प्राथमिक विद्यालय तथा कम्पोजिट विद्यालय के बच्चे के घुटने तक पानी में विद्यालय पहुचने के लिए मजबूर दिखाई दे रहे हैं, वही प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक किसी तरह प्रशिक्षण केंद्र तक पहुंच पा रहे हैं।

पट्टी नगर मेन रोड पर स्थित राम राज इंटर कॉलेज के बगल प्राथमिक विद्यालय तथा कम्पोजिट विद्यालय स्थित है। परिसर में ब्लॉक संसाधन केंद्र बनाया गया है। निपुण भारत मिशन के तहत भारत सरकार ने प्राथमिक विद्यालय के सभी प्रधानाध्यापक शिक्षामित्र तथा सहायक अध्यापकों का प्रशिक्षण कराने के लिए प्रत्येक बीआरसी केंद्र पर प्रशिक्षण केंद्र बनाया गया है। इस समय पट्टी में स्थित ब्लॉक संसाधन केंद्र पर प्रशिक्षण चल रहा है, लेकिन मंगलवार की रात हुई हल्की बारिश से ही पूरा परिसर जलमग्न हो गया। सुबह 10 बजे जब विद्यालय में छात्र-छात्राओं का आना शुरू हुआ तो वह घुटनों तक पानी में जाने के लिए मजबूर दिखाई दिए तो वहीं कई बच्चे फिसल कर पानी तथा कीचड़ में गिरते नजर आए तो वहीं पट्टी तहसील के प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक शिक्षामित्र सहायक अध्यापक बहुत मुश्किल से प्रशिक्षण केंद्र तक पहुंचते हुए नजर आए।

इस संबंध में प्राथमिक विद्यालय पट्टी प्रथम के प्रधानाध्यापक शिवपूजन पांडे ने बताया कि घुटनों तक पानी में चलकर बीआरसी केंद्र तथा प्राथमिक विद्यालय तक पहुंचना बहुत ही मुश्किल है। वही इस संबंध में कई बार नगर पंचायत पट्टी को शिकायती पत्र खंड शिक्षा अधिकारी द्वारा दिया गया लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई। वही कम्पोजिट विद्यालय के प्रधानाध्यापक सर्वेश कुमार मिश्रा से बात करने पर उन्होंने बताया कि बाजार तथा राम राज इंटर कॉलेज परिसर का पानी यहीं से होकर बहता है जिसके कारण शिक्षकों को दिक्कत होती है वही बीआरसी केंद्र तक पहुंचने वाले शिक्षक शिक्षिकाओं को भी काफी मुश्किल का सामना करना पड़ता है इस संबंध में नगर पंचायत ईओ मनोज प्रियदर्शी से बात करने पर उन्होंने बताया कि शिक्षा विभाग की तरफ से हमें कोई भी शिकायती पत्र नहीं मिला है।

अचानक हुई जोरदार बारिश से मिली लोगों को राहत

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। अचानक हुई बारिश से जहाँ लोगो को राहत मिली तो वही दूसरी तरफ गली मोहल्ले में बारिश के पानी से जल जमाव हो गया।बुधवार की शाम लगभग 3 बजे कड़ाके की बिजली के चटकने के साथ 1 घण्टे लगातार बारिश होने से किसानों के मुरझाए चेहरे पर खुशी की मुस्कान देखने को मिली झमाझम बारिश के होने से जनजीवन अस्त ब्यस्त हो गया जो जहां था वही रह गया परियावां बाजार में लोकनिर्माण विभाग की देख रेख में ठेकेदार द्वारा बनाकर छोड़ी गई आधी अधूरी सीसी नाली से पानी का कही निकासी न होने से बाजार के मोहल्ले के गलियों में लबालब पानी भर गया जिसकी निकासी न होने से लोग पानी मे हिल कर आ जा रहे थे। बाजार में बनाई गई दोनों तरफ सीसी नाली जगह जगह मिट्टी से बन्द हो गई है जिससे स्टेट बैंक परिसर के अंदर लबालब पानी भर गया। स्थानीय व्यापारियों ने लोकनिर्माण विभाग के अधिशाषी अभियंता से बाजार में ठेकेदार द्वारा दोनों तरफ की नाली के पानी की निकासी की ब्यवस्था कराने के लिए ध्यान आकृष्ट कराया है।

श्री रामलीला समिति के अध्यक्ष बने संजय खंडेलवाल

नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर सदर विधायक ने किया स्वागत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रामलीला समिति प्रतापगढ़ का वार्षिक चुनाव गोपाल मंदिर में राम भक्तों की मौजूदगी में शुरू हुआ। सर्वसम्मति से चुनाव प्रभारी समिति के संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य को बनाया गया। अध्यक्षता सदर विधायक राजेंद्र मौर्य ने किया। प्रेक्षक के रूप में सुरेश अग्रवाल व प्रहलाद खंडेलवाल रहे। अध्यक्ष पद चुनाव की घोषणा चुनाव अधिकारी ने की। अध्यक्ष पद के लिए चार प्रत्याशी ने नामांकन किया 4 नाम आने पर चुनाव अधिकारी ने मतदान कराकर चुनाव कराने के लिए सभी से कहा। उपस्थित राम भक्तों ने अपने-अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

मतदान पूर्ण होने पर अध्यक्ष के लिए 70 वोट संजय खंडेलवाल को मिले, 7 राजेश कुमार व 1 बंटी को मिला। मंत्री के लिए भी 4 राम भक्तों ने नामांकन किया जिसमें 64 वोट विपिन गुप्ता, मनीष सिंह 8वोट, प्रेम सिंह 3 वोट, मनीष रावत को 2 वोट मिले। कोषाध्यक्ष के लिए मनीष गुप्ता को निर्विरोध चुना गया। इस प्रकार चुनाव समाप्त होने पर अध्यक्ष पद पर संजय खंडेलवाल, मंत्री पद पर विपिन गुप्ता व कोषाध्यक्ष मनीष गुप्ता का चुनाव अधिकारी रोशनलाल उमरवैश्य ने निर्वाचित घोषित किया। अध्यक्षता कर रहे सदर विधायक राजेंद्र मौर्य ने कहा कि सभी पदाधिकारी को बधाई और रामलीला समिति का चुनाव मतदान कराकर करवाना यह मिसाल बनी है।

श्रीरामलीला समिति के नवनिर्वाचित पदाधिकारीगण।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष संजय खंडेलवाल ने कहा कि हम सभी राम भक्तों को मिलकर ऐतिहासिक दशहरा, भरत मिलाप को संपन्न कराकर एक कीर्तिमान स्थापित करना है। संचालन व संयोजक दिनेश सिंह दिन्नू द्वारा किया गया। इस अवसर पर दिनेश सिंह, सुरेश अग्रवाल, प्रहलाद, श्याम शंकर सिंह, राजू शर्मा, रोहित, पंकज शुक्ला, राजेश खंडेलवाल, पंकज अग्रहरि, पप्पू चैरसिया, धीरज शर्मा, शिवम गुप्ता, बंटी नेता, प्रकाश, सूरज, अमन, पवन, तेजस, विवेक कुमार, शुभम आदि उपस्थित रहे।

पल्स पोलियो अभियान को प्रभावी ढंग से संचालित कराएंः सीडीओ

डिस्ट्रिक टास्क फोर्स की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया की अध्यक्षता में कलेक्टेज्ट सभागार में 18 सितम्बर 2022 को पल्स पोलियो एस0एन0आई0डी0 अभियान के सफल संचालन/क्रियान्वयन हेतु डिस्ट्रिक टास्क फोर्स की बैठक सम्पन्न हुई।

बैठक में जिला सहायक प्रतिरक्षण अधिकारी डा0 महेश सिंह द्वारा बताया गया कि 18 सितम्बर 2022 से प्रातः 8 बजे से अपरान्ह 4 बजे तक पल्स पोलियो का ड्राफ जनपद के 2296 बूथों पर पिलाया जायेगा। इस अवधि में 4 लाख 50 हजार 208 जीरो से 05 वर्ष तक के बच्चों को ड्राफ पिलाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिये 1021 टीमों का गठन किया गया है तथा टीमों के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु 327 सुपरवाइजर एवं तहसील स्तर पर 44 टीमें लगायी गयी है। प्रभारी चिकित्साधिकारी सेक्टर प्रभारी के रूप में तैनात किये गये है। प्रभावी टीकारण हेतु 29 मोबाईल टीमों का गठन किया गया है। इस दौरान 966 अति संवेदनशील क्षेत्र चिन्हित किये गये है जहां पोलिया ड्राप पिलाने हेतु विशेष व्यवस्थायें की गयी है। ए टीम 19 सितम्बर से 23 सितम्बर तक घर-घर अभियान चलाकर वैक्सीनेशन का कार्य करेगी, फिर छुटे हुये बच्चों का वैक्सीनेशन किया जायेगा। मुख्य चिकित्साधिकारी ने बताया कि दिनांक 17 सितम्बर को पल्स पोलियो अभियान के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु जनपद स्तर पर महिला चिकित्सालय से जन जागरूकता रैली निकाली जायेगी। इसी के साथ ही सभी विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों पर जागरूकता रैली का आयोजन किया जायेगा। मुख्य विकास अधिकारी ने जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिला विद्यालय निरीक्षक एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देशित किया कि विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों के माध्यम से जन जागरूकता रैली का आयोजन किया जिसके माध्यम से लोग अपने बच्चों को पल्स पोलियो बूथ डे के दिन बूथ पर अवश्य ले जाये। उन्होने सहायक जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देशित किया कि सभी ग्राम प्रधानों को निर्देशित करें कि ग्राम प्रधान अपने गांव स्थित पोलियो बूथ पर प्रातः 8 बजे उपस्थित रहकर पोलियो ड्राफ पिलाकर उद्घाटन करें तथा प्रभारी चिकित्साधिकारी को निर्देशित किया कि अपने-अपने पीएचसी/सीएचसी अन्तर्गत जन प्रतिनिधियों को आमंत्रित कर पोलियो बूथ का उद्घाटन करायें तथा कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से संचालित करायें।

खबर संक्षेप

रॉड के हमले से युवक घायल

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के कांसीराम कालोनी में निवास करने वाले युवक पर लोहे के रॉड से हमले किया गया है जिससे वह गम्भीर रूप से घायल हो गया परिजन उसे इलाज के लिए फतेहपुर ले गए। जानकारी के अनुसार राकेस कुमार पुत्र हरिराम निवासी ग्राम सभा कोरू नगर पंचायत अझुवा कांसीराम कालोनी के ब्लॉक 8 कमरा नम्बर 93 में पिछले 2 वर्षो से रहता है यह मकान की छतों में सिलेप में जाल बांधने का ठेका लेता है बीती शाम वग मोटरसाइकिल से फतेहपुर जिला के रामपुर अफोई सिलेप में जाल बांधने गया था वहां से वह अवैध रूप से रह रहे कांसीराम कालोनी आ रहा था टाण्डा पुल के पास 4 व्यक्ति मोटरसाइकिल आड़ा तिरक्षा खड़े होकर रोकने का प्रयास किया किंतु राकेश बगल से मोटरसाइकिल भगाने लगा राकेश के अनुसार आरोपियों ने लोहे की रॉड से उसके हाथ मे हमला कर दिया जिससे वह लगभग 50 मीटर आगे जाकर गिर गया इस दौरान चारों युवक फरार हो गए फोन कर कर के वह अपने हमदर्दो को बुलाया और उनके साथ कालोनी पहुंचा जिसे लोग फतेहपुर हड्डी डॉक्टर को दिखाने ले गए।वहीं इस सम्बंध में चौकी इंचार्ज अझुवा गौरव त्रिवेदी ने बताया अभी तक ऐसी कोई सूचना नही है,मामले को पता लगाकर समुचित कार्रवाई की जाएगी।

विकास खंड कार्यालय मूरतगंज का सीडीओ ने किया निरीक्षण, मिली तमाम अव्यवस्थाएं

अखंड भारत संदेश

खंड विकास अधिकारी कार्यालय का निरीक्षण करते सीडीओ

कौशाम्बी। मुख्य विकास अधिकारी डॉ रवि किशोर त्रिवेदी ने विकास खण्ड मूरतगंज का मंगलवार को आकस्मिक निरीक्षण किया निरीक्षण के समय संजय गुप्ता खण्ड विकास अधिकारी मूरतगंज मानसिंह अवर अभियन्ता ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग मूरतगंज प्रदीप कुमार कुशवाहा लेखाकार उपस्थित मिले बीडीओ ने बताया कि अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी राहुल मिश्र एवं वीरेन्द्र प्रताप यादव प्रधान सहायक मनरेगा की यू०सी० सबमिट करने हेतु उपायुक्त (श्रम रोजगार) कार्यालय जिला ग्राम्य विकास अभिकरण कौशाम्बी गये हैं। राजेश कुमार मौर्य सहायक विकास अधिकारी सहकारिता आकस्मिक अवकाश में एवं कु० नाजुक जहां बी०ओ० (पी०आर०डी०) प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने हेतु पटियाला गयी हैं। शेष सभी कर्मचारी निरीक्षण के दौरान उपस्थित मिले विकास खण्ड परिसर में स्थित मनरेगा सेल का उन्होंने निरीक्षण किया जिसमें पुराने अभिलेखों का रखाव ठीक नहीं पाया जिसके सम्बन्ध में खण्ड विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि समस्त अभिलेख सुव्यवस्थित ढंग से रखवाना सुनिश्चित करे विकास खण्ड परिसर में स्थित पक्का तालाब का उन्होंने निरीक्षण किया जिसके सम्बन्ध में निर्देश दिये गये कि तालाब की साफ-सफाई हेतु दिनांक 19 सितम्बर को श्रमदान कराते हुए सफाई करायें विकास खण्ड परिसर में स्थित खण्ड विकास अधिकारी का आवास और सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) का सरकारी आवास भी मरम्मत योग्य मिला जिसके सम्बन्ध में खण्ड विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि सभी सरकारी आवास, जो मरम्मत योग्य है, उनकी अवलिम्ब नियमानुसार मरम्मत कराये एवं विकास खण्ड मुख्यालय में सरकारी आवास में सभी खण्ड विकास अधिकारी निवासित करे एवं अपने अधीनस्त विकास खण्ड स्तरीय अधिकारी एवं कर्मचारियों को भी सरकारी आवासों में निवासित रहने हेतु निर्देशित करें उन्होंने कहा कि इसका अनुपालन कड़ाई से सुनिश्चित करें निरीक्षण के दौरान सीडीओ को विकास खण्ड परिसर कार्यालय में काफी ज्यादा गन्दगी मिली जिसके सम्बन्ध में खण्ड विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि अभियान चलाकर विकास खण्ड परिसर एवं कार्यालय की साफ-सफाई कराना सुनिश्चित करें।

छात्रों से सीट पर बैठने को लेकर हुए विवाद में दो अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। चरवा थाना अन्तर्गत मंहगाव चौकी के समीप स्थित मंहगाव इण्टर कालेज में दो दिन पूर्व सीट पर बैठने को लेकर छात्रों में विवाद हो गया था जिसमें एक छात्र ने अपने साथियों को बुलाकर कमल कुमार छात्र के ऊपर जानलेवा हमला करवाया,पीड़ित के पिता ने चरवा थाने में सात नामजद व दस अज्ञात लोगों के खिलाफ तहरीर देकर मुकदमा पंजीकृत करवाया था,इसी क्रम में थाना चरवा पुलिस उपनिरीक्षक बलराम सिंह हमराह पुलिस बल द्वारा मु०अ०संख्या-238/22 धारा, 147/ 148/ 149/ 323/ 504/ 308/भादवि से सम्बंधित दो अभियुक्त अफान उल्ला,तल्हा उल्ला पुत्रगण मतलूब उल्ला निवासीगण उजहिनी खालसा थाना चरवा को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

न्यूज झरोखा

जर्जर हुआ घर का छज्जा गिरा,दबकर महिला की मौत

कौशाम्बी। बारिश के चलते जर्जर हो चुका पुराने घर का छज्जा देर रात अचानक भरभरा कर गिर गया,बाथरूम के लिए छज्जे पर गई महिला की गिरकर मलबे में दबकर मौत हो गई,महिला की मौत से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है,सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच में जुट गयी है घटना नगर पंचायत पश्चिम सरीरा की है। घटनाक्रम के मुताबिक नगर पंचायत पश्चिम शरीरा के चमन सिंह के स्कूल के सामने रहने वाली महिला राबिया बेगम उम्र लगभग 45 वर्ष पत्नी मुस्तकीम बीती रात 2 बजे अपने घर की पहली मंजिल पर बने छज्जे पर बाथरूम गई थी,तभी दूसरी मंजिल पर बना जर्जर छज्जा उसके ऊपर गिर गया, जिससे महिला की दबकर मौके पर ही मौत हो गई, महिला अत्यंत गरीब है और उसका पति मानसिक बीमार रहता है, महिला सिलाई कढ़ाई करके अपने बच्चों का पेट पालती थी, महिला की मौत से बच्चों को संकट ने चारों तरफ से घेर लिया है।सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पंचनामा कर पीएम के लिए भेज दिया है।

सर्प दंश से युवक की मौत परिजन झाड़-फूंक में जुटे

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के नगर पंचायत अझुवा कांसीराम कालोनी में एक युवक की सर्प दंश से मौत हो गयी है। लोधन का पुरवा मजरे धुमाई का श्रवण कुमार उम्र तकरीबन 35 वर्ष पुत्र होरीलाल कांशीराम कालोनी ब्लॉक न 8 कमरा नम्बर 4 में अपनी पत्नी और डेढ़ माह के मासूम बच्चे के साथ पिछले 2 वर्षों से रहता था उसकी पत्नी ने बताया कि वह और बच्चा चारपाई में सो रहे थे श्रवण कुमार जमीन में सो रहा था भोर 3.30 बजे सर्प ने पैर में डंस लिया उठकर पेशाब करने गया जब वापस आया तो सर्प देखा जिसे पिलास से कुचलने का प्रयास किया सर्प ने हांथ में डंस लिया श्रवण ने सर्प को उसी समय मारकर कुचल दिया और झाड़ फूक करवाने कोरू गया गम्भीर स्थिति होने पर परिजन उसे जिला अस्पताल लेकर भागे जहां युवक की स्थिति और गम्भीर हो गयी जहां डॉक्टरों ने पता नही किन वजहों से तेजमती अस्पताल रिफर किया जहां उसकी मौत हो गयी। परिजन शव धुमाई झाड़ फूंक के लिए ले गए हैं। मृतक युवक गांव के दूसरी जाति की लड़की को 2 वर्ष पहले भगा ले गया था उसी के साथ नगर पंचायत अझुवा की कांशीराम कालोनी में अवैध रूप से निवास कर रहा था वहीं सूचना पर मौके पर पहुंची अझुवा चौकी पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

चाकू से हमला करने वाले युवक को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

कौशाम्बी। अपराधियों को राहत देने का लगातार सराय अकिल पुलिस पर आरोप लगता चला रहा है एक बार फिर सराय अकिल पुलिस पर गंभीर आरोप लगे हैं 3 लोगों ने मिलकर युवक पर चाकू से प्राणघातक हमला किया था एक युवक पर मामूली धारा में मुकदमा दर्ज कर पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है दो आरोपियों को पुलिस ने क्लीनचिट दे दी है दिनदहाड़े बाइक सवार युवक पर चाकू से प्राणघातक हमला करने के मामले में सराय अकिल पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद मामूली धाराओं में मुकदमा दर्ज कर उसे जेल भेज दिया है पुलिस के इस खेल के पीछे साजिश की बू आ रही है गंभीर अपराध में मामूली धारा दर्ज करने वाले सराय अकिल पुलिस के कारनामों की उच्चाधिकारियों ने जांच कराई तो सराय अकिल पुलिस की मुसीबत बढ़ना तय है। घटनाक्रम के मुताबिक सराय अकिल कस्बे के करन चौराहे पर 10 सितंबर को दिनदहाड़े मोनू त्रिपाठी पुत्र भगवानदीन त्रिपाठी निवासी रकसराई पर साइकिल चोर युवकों ने अपने साथियों के साथ मिल कर चाकुओं से प्राणघातक हमला कर दिया था इस हमले में मोनू त्रिपाठी गंभीर हालत में लहूलुहान होकर सड़क पर गिर पड़े थे आनन-फानन में लहूलुहान मोनू त्रिपाठी को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां उनकी हालत गंभीर है। साईकल चोरी के विवाद में करन चौराहा में चाकू मारकर मोनू को घायल कर फरार हुए सचिन गौतम पुत्र सर्वेश गौतम निवासी ग्राम रकसराई को मुखबिर की सूचना पर उपनिरीक्षक अवधराज यादव ने मय फोर्स बीती रात पावरहाउस तिराहे के पास से गिरफ्तार कर लिया है पुलिस ने चाकू भी बरामद कर लिया है अभियुक्त के खिलाफ सराय अकिल पुलिस ने अपराध

सराय अकिल पुलिस ने फिर किया खेल हमलावर पर नहीं लगाई प्राणघातक हमले की धारा एक की गिरफ्तारी के बाद अन्य को दे दिया क्लीनचिट

संख्या 344 सन 2022 धारा 324/506 एवं अपराध संख्या 346 सन 22 धारा 4/25 आर्म्स एक्ट के तहत मुकदमा पंजीकृत किया है अब सवाल उठता है कि साइकिल चोर ने दिनदहाड़े चाकू से प्राणघातक हमला किया है जिससे उन्हें गंभीर चोटें आई हैं लेकिन पुलिस ने मामूली धाराओं में मुकदमा दर्ज कर एक तरफ मुख्य हमलावर को राहत दिया तो दूसरी तरफ घटना में शामिल अन्य लोगों को क्लीन चिट दे दी है सराय अकिल पुलिस का यह कारनामा बेहद संवेदनशील है और इस मामले में पुलिस आला अधिकारियों को जांच कराकर सराय अकिल पुलिस के कारनामों को बेनकाब करते हुए इन्हें दण्डित किए जाने की जरूरत है।

नवीन थाना संदीपनघाट के भवन निर्माण हेतु आवंटित भूमि का एसपी ने किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

नवीन थाना भवन के लिए आवंटित भूमि का निरीक्षण करते एसपी

कौशाम्बी। पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के समाप्त होने के बाद थाना क्षेत्र में आने वाले कई गांव को थाना चरवा से जोड़ दिया गया था, इसके बाद नवीन थाना संदीपनघाट बनाने के लिए काजीपुर गांव का मजरा जुनैपुर में स्थित भूमि को आवंटित किया गया था, शासना के निर्देश पर बुधवार को पुलिस अधीक्षक हेमराज मीणा ने जुनेदपुर में स्थित संदीपन घाट थाना के लिए आवंटित भूमि का स्थलीय निरीक्षण किया, इस दौरान उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव गृह के निर्देश पर थाना की स्वीकृति हो गई है। बहुत जल्द ही इसके भवन निर्माण का कार्य शुरू हो जाएगा, जुनैपुर में थाना बन जाने से आस पास में गांव में अपराध और अपराधियों की कमी आयेगी, पुलिस के साथ साथ यह स्थानीय लोगों के लिए भी खुशी की बात है, इस दौरान अपर पुलिस अधीक्षक समर बहादुर सिंह थाना प्रभारी चरवा आलोक सिंह चौकी इंचार्ज मोहन गांव ग्राम प्रधान काजीपुर जयप्रकाश समेत तमाम पुलिस और स्थानीय ग्रामीण मौजूद रहे।

शटर का ताला तोड़कर लाखों की साड़ी नगदी चोरी

भरवारी कौशाम्बी। जिले में बेखौफ चोरी ने बारिश का फायदा उठाते हुए साड़ी की दुकान का शटर और ताला तोड़कर दुकान में घुसे और लाखों रुपए की साड़ी और नगदी पार कर दिया,सुबह दुकान का शटर टूटा हुआ ग्रामीणों ने देखा तो दुकानदार को सूचना दी,ग्रामीणों की सूचना पर बदहवास हालत में पहुंचे दुकानदार ने दुकान की हालत देखी तो वह रो पड़ा,चोर दुकान से सैकड़ो साडियो के साथ नगदी भी उठा ले गए थे। घटनाक्रम के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के रसूलपुर गिरसा पेट्रोल पंप के पास हिमेंद्र कुमार ने साडियो की दुकान खोल रक्खी है बीती रात चोरों ने दुकान का शटर और ताला तोड़कर लाखों रुपए की साड़ी व नकदी पार कर दिया सुबह दुकानदार को मालूम चला तो उसने इसकी सूचना पुलिस को दी,चोरी की सूचना पर पहुंची भरवारी चौकी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल शुरू कर दी है।

ब्यापारी ने नेशनल कालेज के छात्रों को दिया पैंट शर्ट

भरवारी कौशाम्बी। नेशनल इन्टर कालेज भरवारी के छात्रों को कस्बे के मेहता रोड के प्रतिष्ठित व्यापारी नीरज कुमार कौशल ने 30 छात्रों को शर्ट एव 5 छात्रों को पैंट दिया है विद्यालय के छात्रों के अनुशासन से प्रभावित होकर ब्यापारी ने छात्रों को शर्ट एवं पैंट दान में दिया है इस अवसर पर प्रधानाचार्य कलीम अहमद ने माला पहनाकर ब्यापारी नीरज कुमार कौशल का स्वागत किया सभी शिक्षकों ने ब्यापारी श्री कौशल का आभार व्यक्त किया इस अवसर पर शिक्षक भुवनेश्वर कुमार तिवारी अरुण कुमार द्विवेदी करुणेश कुमार त्रिपाठी चन्द्र कान्त शुक्ला विनोद कुमार मिश्र,डॉ0 प्रदीप कुमार सिंह स्वतंत्र कुमार श्रीवास्तव आदि शिक्षक मौजूद रहे।

सीबीएसई बोर्ड जनपदीय स्काउट गाइड की बैठक संपन्न

कौशाम्बी। आर्या पब्लिक स्कूल घना का पुरवा मंझनपुर में भारत स्काउट गाइड उत्तर प्रदेश जिला संस्था कौशांबी के अध्यक्ष उप शिक्षा निदेशक डायट प्राचार्य अनिल कुमार की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई। सबसे पहले प्रार्थना से इस बैठक की शुरूआत हुई समस्त उपस्थित पदाधिकारियों को स्कार्फ पहना कर स्वागत किया गया इस बैठक की अध्यक्षता कर रहे अध्यक्ष अनिल कुमार ने जनपद के समस्त सीबीएसई बोर्ड के स्कूलों में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के आदेशों का अनुपालन करते हुए समस्त सीबीएसई स्कूलों में कब बुलबुल, स्काउट /गाइड यूनिट गठन पर जोर दिया साथ ही साथ यूनिट के सभी लीडरों के बेसिक कोर्स हेतु प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने के लिए कहा। यूनिट का गठन सितंबर के अंतिम सप्ताह तक कराना सुनिश्चित करने के लिए जोर दिया साथ-साथ समस्त सीबीएसई बोर्ड स्कूलों से कम से कम एक व्यक्ति को आजीवन सदस्य भारत स्काउट गाइड उत्तर प्रदेश संस्था का सदस्यता ग्रहण करने पर जोर दिया । जिला मुख्यायुक्त जिला विद्यालय निरीक्षक संतोष कुमार मिश्रा ने आर्य पब्लिक स्कूल प्रिंसिपल को धन्यवाद ज्ञापित किया । इस बैठक में जिला सचिव राम सुंदर सिंह, जिला आयुक्त स्काउट/गाइड चुन्नीलाल सरोज, डॉ संगीता, डायट प्रवक्ता डॉ देवेश यादव, जिला संगठन आयुक्त श्याम बाबू यादव, जिला प्रशिक्षण आयुक्त स्काउट गाइड अभिषेक कनौजिया, प्रेमलता वर्मा ,जिला स्काउट मास्टर अभय सिंह ,जिला गाइड कैप्टन सुधा गौड़ व ट्रेनिंग काउंसलर वंदना कुशवाहा आदि उपस्थित रहे।इस कार्यक्रम का संचालन जिला संगठन आयुक्त श्याम बाबू यादव के द्वारा किया गया।

हिंदी दिवस पर जीएस कान्वेंट स्कूल में छात्रों को संबोधित करती प्रधानाचार्य

अंग्रेजी के साथ अपनी मातृभाषा हिंदी पर भी होनी चाहिए पूरी पकड़ : प्रधानाचार्य

जीएस कान्वेंट पब्लिक स्कूल में हिंदी दिवस का उल्लास पूर्वक हुआ आयोजन

कौशाम्बी। चायल तहसील के सेवथा दुर्गा पुर स्थित जीएस कान्वेंट पब्लिक स्कूल के प्रांगण में हिंदी दिवस का उल्लास पूर्वक आयोजन हुआ मातृ भाषा हिंदी दिवस के अवसर पर बच्चों के बीच में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय राष्ट्रभाषा हिंदी था बच्चों ने उत्साहित होकर हिंदी दिवस पर निबंध लिखा। विद्यालय के प्रबंधक विवेक शुक्ला ने बच्चों को हिंदी की सार्थकता और उसकी उपयोगिता का महत्व समझाया, प्रधानाचार्या योगमाया बाजपेयी ने बच्चों को बताया की विद्यालय कि हर छोटी-छोटी गतिविधियों में भाग लेकर वह अपनी शिक्षा को और अधिक मजबूत कर सकते हैं उन्होंने कहा कि अंग्रेजी पढ़ने के साथ-साथ अपनी मातृभाषा हिंदी पर भी पूरी पकड़ होनी चाहिए।। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हरिओम द्विवेदी क्लास 9, द्वितीय स्थान कृषि सिंह क्लास 7 एवं तृतीय स्थान विनायक शुक्ला क्लास 6 ने प्राप्त किया। इस मौके पर विद्यालय स्टाफ शिक्षक मनोज सागर काजमा रोशन खान नेहा पाल जया सिंह पूनम आशुतोष त्रिपाठी राजेश आदि शिक्षक उपस्थित रहे।

रेलवे ट्रैक पर मिला अज्ञात बालिका का शव

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के सिराथू पावर हाउस के पास दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग पर एक अज्ञात बालिका उम्र तकरीबन 18 वर्ष का छिन्न भिन्न रूप में शव मिला है सूचना पर मौके पर पहुंची सिराथू पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज शिनाख्त की प्रकिया में जुट गई है किंतु खबर लिखे जाने तक शव की शिनाख्त नही हो सकी है।

पॉक्सो एक्ट का आरोपी गिरफ्तार

अझुवा कौशाम्बी। अपराध एवम अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत अझुवा पुलिस चौकी इंचार्ज गौरव त्रिवेदी ने पॉक्सो एक्ट एवं विभिन्न गम्भीर धाराओं में वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। चौकी इंचार्ज अझुवा गौरव त्रिवेदी मय हमराहियों टाण्डा पुल की तरफ गस्त पर थे टाण्डा पुल के पास पुलिस को देख दूर जा रहे एक संदिग्ध युवक की पुलिस ने जब सघन जांच की तो पता चला कि सैनी थाना का मुकदमा अपराध स.113/22 - 363,366,376 व पॉक्सो एक्ट का आरोपी अंकुल उर्फ प्रियांशु पुत्र अरविंद कुमार निवासी हथगाम जिला फतेहपुर है नगर पंचायत अझुवा के वार्ड नं 7 की किशोरी के साथ अपराध कारित किया था पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

वैशिवक परिप्रेक्ष्य में कई चुनौतियों से संघर्ष कर रही है हिंदी : प्रो भूरेलाल

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। महामाया राजकीय महाविद्यालय मे हिंदी दिवस के अवसर पर एक दिवसीय मातृ भाषा एवम संस्कृति विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रो0 भूरेलाल प्रोफेसर हिंदी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद ने संगोष्ठी का शुभारंभ माँ सरस्वती की मूर्ति पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलित कर किया। प्रो0 भूरेलाल ने मातृ भाषा एवं संस्कृति पर बोलते हुए कहा कि वैशिवक परिप्रेक्ष्य में कई चुनौतियों से हिंदी संघर्ष कर रही है। हमारी मातृ भाषा हम को आत्मविश्वास प्रदान करती है। आज जनसंपर्क की भाषा हिंदी जन जन की भाषा होने की शुरुवाती दौर से कहीं आगे है। यदि हम अपनी भाषा को नही बचा पाएंगे तो हमारी संस्कृति भी नष्ट हो जाएगी दुनिया मे लगभग छः हजार भाषाएँ अपनी अस्मिता के संघर्ष को चुनौती के रूप में स्वीकार कर रही है। जनसंख्या बढ़ने के साथ साथ भाषाएँ कम हुई है। मध्यकाल में कबीर, रैदास राजसत्ता के साथ साथ भाषा के संघर्ष को भी चुनौती के रूप में स्वीकार किया है। हमारी अभिव्यक्ति की सबसे सुंदर भाषा हमारी मातृ भाषा है। हमारी तकनीकी शवदावली की भाषा को और सुरुचिपूर्ण बनना होगा। तभी हम उसके प्रयोग में रुचि बढ़ाएंगे इसी कड़ी में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 विनय कुमार सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हमारी मातृ भाषा हिंदी हमारी लोक भाषा के अधिक निकट है। हमारी क्षेत्रीय बोलियों को बढ़वा देने की जरूरत है। क्योंकि हमारे विचार हमारे परिवेश से जन्म लेते है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि और प्राचार्य ने राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवियो को प्रमाणपत्र प्रदान किया कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी के संयोजक डॉ अजय कुमार ने किया कार्यक्रम में डॉ नीलम बाजपेई डॉ रीता दयाल, डॉ नीरज सिंह, डॉ संतोष कुमार डॉ0 अमित कुमार शुक्ल, डॉ0 शैलेश मालवीय डॉ0 पवन कुमार डॉ0 अनिल कुमार डॉ0 तरित अग्रवाल डॉ0 नीरज कुमार सिंह एवं रमेश चन्द्र तथा महाविद्यालय की छात्र छात्राएं उपस्थित रही।

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवियो को दिया गया प्रमाणपत्र

महामाया विद्यालय में उपस्थित लोगों को संबोधित करते प्राचार्य

दैनिक जीवन में अधिकाधिक प्रयोग कर हिंदी को समृद्ध बनाए : प्राचार्य

भरवारी कौशाम्बी। भवन्स मेहता महाविद्यालय भरवारी में 14 सितंबर को राजभाषा हिंदी दिवस के अवसर पर कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और इसके साथ भवंस मेहता महाविद्यालय भरवारी 14 सितंबर से लेकर 20 सितंबर तक हिंदी सप्ताह राजभाषा हिंदी सप्ताह का आयोजन कर रहा है इसी क्रम में 14 सितंबर को महाविद्यालय में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्र छात्राओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया प्रतिभागियों ने राष्ट्रभाषा हिंदी भारतीय संस्कृति राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति से भरी हुई देश भक्ति के भाव से भरी हुई कविताएं प्रस्तुत की गयी इस प्रतियोगिता में शोभा पाल बीए प्रथम वर्ष की छात्रा ने प्रथम रिंकी और पूजा इन दोनों छात्राओं ने संयुक्त रुप से द्वितीय स्थान तथा शालिनी पांडे ने बीए तृतीय वर्ष की छात्रा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया राजभाषा हिंदी दिवस के अवसर पर महाविद्यालय के विभिन्न प्राध्यापकों ने अपने अपने अपने विचार रखें हिंदी के प्राध्यापक डॉ सीपी श्रीवास्तव ने राष्ट्रभाषा राजभाषा हिंदी को भारत की पहचान की भाषा माना और छात्र छात्राओं से कहा कि वह हिंदी को वैसे सम्मान दें जैसे कोई व्यक्ति अपनी मां को सम्मान देता है साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा अन्य भाषाओं को भी हमें पढ़ना और जानना चाहिए लेकिन अपनी राष्ट्रभाषा को सबसे पहला स्थान रख देना चाहिए इसी प्रकार समाज शास्त्र के प्राध्यापक डॉ दीपक कुमार ने भारत के विविध भाषाओं पर अपनी बात कही इतिहास के प्राध्यापक डॉक्टर मोहम्मद आदिल ने भाषा की शुद्धता पर बल देते हुए उच्चारण की शुद्धता पर विशेष जोर दिया वरिष्ठ प्राध्यापिका प्रोफेसर श्वेता यादव ने हिंदी के प्रति बच्चों में नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदलने की बात कही कार्यक्रम के अंत में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर प्रबोध श्रीवास्तव ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए राजभाषा हिंदी के व्यवहारिक पक्ष पर जोर दिया उन्होंने कहा कि दैनिक जीवन में अधिकाधिक प्रयोग कर हिंदी को समृद्ध बनाए।

कबड्डी की संभागीय स्तरीय प्रतियोगिता में श्री दुर्गा देवी के छात्रों ने मारी बाजी

अखंड भारत संदेश

खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन करते प्रधानाचार्य राम सुंदर सिंह

कौशाम्बी। श्री दुर्गा देवी इंटर कॉलेज ओसा में संभागीय स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें श्री दुर्गा देवी इंटर कॉलेज ओसा ने सीनियर बालक वर्ग के फाइनल मैच में कृषक इंटर कॉलेज हिनौता को 22 अंक के मुकाबले 20 अंकों से पराजित करके बाजी अपने नाम कर ली, जबकि सीनियर बालिका वर्ग में करारी इंटर कॉलेज करारी ने श्री दुर्गा देवी इंटर कॉलेज को पराजित किया, उसी तरह जूनियर बालक वर्ग में एटीएस बरैसा ने जवाहरलाल नेहरू इंटर कॉलेज सरसवां को पराजित कर फाइनल मुकाबला अपने नाम किया, इससे पहले प्रतियोगिता का उद्घाटन देशबन्धु इंटर कॉलेज बैंसकांटी के प्रधानाचार्य एवं प्रधानाचार्य परिषद के अध्यक्ष रामसुंदर सिंह ने फीता काटकर उद्घाटन किया, उन्होंने खिलाड़ियों से औपचारिक परिचय प्राप्त कर खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि खेल हमारे सामाजिक भाईचारे को बढ़ावा देता है एवं समाज में सौहार्द स्थापित करता है, इस अवसर पर मेजबान श्री दुर्गा देवी इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य चुन्नीलाल एवं एटीएस बरैसा के प्रधानाचार्य केशन सिंह ने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया, जिला क्रीड़ा सचिव श्यामलाल ने बताया कि विजेता टीमें सरदार पटेल इंटर कॉलेज सराय अकिल में आयोजित हो रहे जिला स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेंगी, संदीप कुमार एवं ओम प्रकाश मैच रेफरी रहे, सभी प्रतियोगिताएं श्री दुर्गा देवी इंटर कॉलेज के क्रीड़ाध्यक्ष अवध कुमार के नेतृत्व में संपन्न कराई गई इस अवसर पर रामबाबू गुप्ता, सीपी शुक्ला,कमलेश कुमार, छोटेलाल,अमित त्रिपाठी, डॉ रविंदर सिंह सहित तमाम शिक्षक मौजूद रहे।

सामाजिकता का प्राण है हिंदुत्व : नरेशचंद्र

राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवैद्यनाथ जी महाराज की 8 दिवसीय पुण्य तिथि पर संगोष्ठी का आयोजन

अखंड भारत संदेश

विश्व हिंदू महासभा के कार्यक्रम में उपस्थित पदाधिकारी

कौशाम्बी। विश्व हिंदू महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष भिखारी प्रजापति के निर्देशन में राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवैद्यनाथ जी महाराज की 8 दिवसीय पुण्य तिथि कार्यक्रम के उपलक्ष में जिला कार्यालय में विश्व हिंदू महासंघ के जिला अध्यक्ष नरेश चन्द्र केसरवानी के अध्यक्षता में पुण्य तिथि की पावन स्मृति में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि राम प्रसाद यादव मण्डल प्रभारी प्रयागराज, मुख्य वक्ता जिला अध्यक्ष प्रयागराज राजकुमार केशरवानी, विशिष्ट अतिथि मातृ शक्ति जिला अध्यक्ष प्रयागराज श्रीमती रोशनी अग्रवाल एवं विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय परिषद सदस्य भाजपा राजेन्द्र बहादुर नरेश चन्द्र केसरवानी जिला अध्यक्ष निरंजन लाल मिश्रा जिला प्रभारी जिला महामंत्री पं0 सीताराम विश्वकर्मा अधिवक्ता हाई कोर्ट, जिला मातृ शक्ति जिला अध्यक्ष श्रीमती रिंकू सिंह जिला, मातृ शक्ति जिला महामंत्री श्रीमती रेनू प्रजापति वीरेन्द्र कुमार पाण्डेय जिला उपाध्यक्ष, ऋषभ देव मिश्रा वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष एवं सुभाष चन्द्र केसरवानी जिला मंत्री ने सामूहिक रूप से युग पुरुष राष्ट्र संत ब्रह्मलीन महन्त अवैद्यनाथ जी महाराज को पुष्पांजल अर्पित किया संगोष्ठी में मंचासिन विशिष्ठ अतिथि एवं मुख्य अतिथि एवं समस्त पदाधिकारीगणों ने अपने संबोधन में राष्ट्र सन्त महन्त अवैद्यनाथ जी महाराज के राष्ट्र के प्रति समर्पण और त्याग तथा हिंदुत्व के विकास के विषय मे संबोधन किया। संगोष्ठी में आए हुए वक्ताओं ने कहा कि हिंदुत्व सामाजिकता का प्राण है और इस विषय पर व्यापक रूप से संगठन के माध्यम से हिंदुत्व को मजबूत करने का आवाह्न किया संगोष्ठी का संचालन पं० सीताराम विश्वकर्मा अधिवक्ता हाई कोर्ट व महामंत्री ने किया तथा संगोष्ठी का समापन जिला अध्यक्ष नरेश चन्द्र केसरवानी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन के पश्चात ज्ञापित किया इस संगोष्ठी में सैकड़ों की संख्या में पदाधिकारी एवं संगठन के कार्यकता गण मौजूद रहे।

पिपरी में ट्रक ड्राइवर को बदमाशों ने बनाया निशाना

कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र मे लूट चोरी की घटनाएं कम नही हो रही है बीती रात एक और बालू व्यापारी बद्री प्रसाद निवासी भाखंदा के चालक सुबराती को लूट लिया गया है यमुना पार का ट्रक ड्राइवर सुबरती बालू लाद कर प्रयागराज बालू मंडी जा रहा था चौराहा पर गाडी खराब हो गई वही गाडी खडी? करके चालक सो गया बीती रात बंद गाडी से अज्ञात लुटेरे आये और गाडी का दरवाजा खोलकर पैंट मे रख्खा 28 हजार रुपए लूट कर भाग निकले चौराहे पर चालक से लूट की घटना होती है लेकिन कहीं गस्त की पुलिस का पता नहीं था

संपादकीय

देश के विकास के धुरी हैं इंजीनियर

इंजीनियरिंग अब विस्तृत क्षेत्र है। देशभर के महत्वपूर्ण विषयों में इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी कराई जाती है। भारत में प्रतिवर्ष 15 सितंबर को अभियंता दिवस मनाया जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य देश के विद्यार्थियों को इस क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित करना है। भारत आज इंजीनियरिंग तथा आईटी के क्षेत्र में दुनिया का अग्रणी देश है। सही मायनों में देश के विकास के धुरी इंजीनियर हैं। दरअसल आपदा प्रबंधन से लेकर निर्माण तक कोई भी कार्य इंजीनियरों के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता। आजादी के बाद प्रतिभावान इंजीनियरों ने नए भारत के निर्माण तथा विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इंजीनियरिंग के बारे में अमेरिका के जाने-माने इंजीनियर हेनरी पेट्रोस्की ने कहा था कि विज्ञान का अर्थ है जानना जबकि इंजीनियरिंग का अर्थ है करना अथवा करके दिखाना। भारत के महान अभियंता और भारत रत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के जन्म दिन पर अभियंता दिवस मनाया जाता है। यह वास्तव में अभियंताओं का संकल्प दिवस है। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का इंजीनियरिंग के क्षेत्र में असाधारण योगदान अविस्मरणीय है। उन्हें भारतीय सिविल इंजीनियरिंग का जनक तथा आधुनिक भारत का विश्वककर्मा कहा जाता है। देशभर में बने कई बांधों और पुलों को सफल बनाने के पीछे कर्नाटक के मैसूर के कोलार जिले में 15 सितंबर 1860 को जन्मे विश्वेश्वरैया का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने मैसूर में कृष्णाराज सागर बांध, पुणे के खड़कवासला जलाशय में बांध, ग्वालियर में तिगरा बांध इत्यादि कई महत्वपूर्ण बांध बनवाए हैं। हैदराबाद शहर को बनाने का पूरा श्रेय भी फादर ऑफ मॉडर्न मैसूर स्टेट कहे जाने वाले विश्वेश्वरैया को ही जाता है। विश्वेश्वरैया की बहुत सी परियोजनाओं के कारण देश आज गर्व का अनुभव करता है। उन्होंने एक बाढ़ सुरक्षा प्रणाली तैयार की थी, जिसके बाद वे देशभर में विख्यात हो गए थे। विशाखापत्तनम बंदरगाह की समुद्री कटाव से सुरक्षा के लिए एक प्रणाली विकसित करने में उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। घर-घर में प्राकृतिक जल स्रोतों से पानी पहुंचाने की व्यवस्था करने के अलावा गंदे पानी की निकासी के लिए नाली-नालों की समुचित व्यवस्था भी विश्वेश्वरैया की देन है। तिरुमला और तिरुपति के बीच सड़क निर्माण के लिए योजना को अपनाने में उन्होंने बड़ी भूमिका निभाई। 1955 में उन्हें सर्वोच्च भारतीय सम्मान ह्यभारत रत्न से सम्मानित किया गया। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में विश्वेश्वरैया के उल्लेखनीय योगदान के मद्देनजर वर्ष 1968 में उनकी जन्मतिथि को भारत सरकार द्वारा अभियंता दिवस घोषित किया गया था। शुरूआती पढ़ाई मैसूर में करने के बाद विश्वेश्वरैया ने 1881 में मद्रास यूनिवर्सिटी के सेंट्रल कॉलेज से बीए की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके बाद मैसूर सरकार से उन्हें सहायता मिली और उन्होंने पूना के साइंस कॉलेज में इंजीनियरिंग के लिए दाखिला लिया। 1883 की एल.सी.ई. और एफ.सी.ई. परीक्षा में उन्होंने प्रथम स्थान हासिल किया और उनकी योग्यता को देखते बॉम्बे सरकार ने उन्हें नासिक में सहायक अभियंता के पद पर नियुक्त किया। एक इंजीनियर के रूप में उसके बाद उन्होंने अनेक अद्भुत कार्यों को अंजाम दिया। विश्वेश्वरैया एक आदर्शवादी और अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे, जो अपने हर कार्य को परफैक्शन के साथ करते थे। 92 वर्ष की आयु में भी वे बिना किसी सहारे के चलते थे। भाषण देने से पहले वे स्वयं उसे लिखते थे और फिर कई बार उसका अभ्यास करते थे। अपनी योग्यता से उन्होंने बड़े-बड़े ब्रिटिश इंजीनियरों के समक्ष भी अपनी योग्यता और प्रतिभा का लोहा मनवाया। 1905 में उन्हें ब्रिटिश शासन द्वारा कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द इंडियन एंपायर से सम्मानित किया गया।

हिंदी को अधिक सरल बनाएं

कृष्ण

हिंदी दिवस से दो दिन पूर्व कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री देवगौड़ा का ब्यान आया कि कर्नाटक के वर्तमान सीएम को हिंदी दिवस का आयोजन नहीं करना चाहिए। एकदम प्रश्न कौंधा कि क्या हिंदी,हिंदी दिवस की मोहताज है क्योंकि अपने मस्तिष्क में एक बाद याद रखिए कि जिसका भी दिवस मनाया जाता है,वह सबसे निरीह होता है लेकिन यहाँ उत्तर यह है कि हिंदी अब दिवसों की मोहताज नहीं है क्योंकि आज हिंदी एक ऐसे शिखर पर है,जहाँ से उसका लौटना मुश्किल है और उसे अब कोई रोक भी नहीं सकता। इसलिए इस ब्यान की निंदा-विंदा में पड़ने की जरूरत नहीं है पर चूंकि हिंदी,भारत की पहचान है तो विश्लेषण करना भी बहुत जरूरी है। जब विश्लेषण की बात आती है तब एक सीधा सवाल है कि निरंतर आगे बढ़ती हुई हिंदी की दुर्दशा के लिए कौन जिम्मेदार है?यह प्रश्न भारत के संदर्भ में है।इसका उत्तर भी उतना ही सीधा है कि जो हिंदी की खाते हैं पर हिंदी के लिए करते कुछ नहीं,सिर्फ वो और सिर्फ वो?अब सवाल यह है कि आखिर हिंदी के विकास के लिए हमें करना क्या होगा? सीधा जबाब एक ही कि हिंदी को अपनाना होगा और विदेशी का मोह छोड़ना होगा। यह प्रचारित करना होगा जो कि सत्य भी है कि हिंदी में रोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं,हिंदी में वो सब कुछ है जो आज की नई पीढ़ी को चाहिए। हिंदी में संस्कार है,हिंदी में मानवीय सभ्यता है और हिंदी केवल एक देश की भाषा नहीं है बल्कि हिंदी एक वैश्विक भाषा है और हिंदी अंतर्राष्ट्रीय भाषा बन सकती है,अंग्रेजी का स्थान ले सकती है। बस शर्त केवल इतनी-सी है कि हम हिंदी के विकास पर भाषणबाजी करने की बजाय कुछ ऐसा करें जो हिंदी को उस स्थान पर आसीन कर सके। हम शुक्रिया करें उन तमाम विज्ञापन एजेंसियों का जो हिंदी को घर-घर तक पहुँचा रही है।बॉलीवुड की उन फिल्मों का जो हिंदी को वैश्विक पहचान दिला रही है।

जीवित्पुत्रिका: पुत्र के कल्याण की कामना

सुरेश गांधी

जितिया व्रत के पहले दिन महिलाएं सुबह सूर्योदय से पहले जागकर स्नान करके पूजा करती हैं और फिर एक बार भोजन ग्रहण करती हैं और उसके बाद पूरा दिन कुछ भी नहीं खातीं। दूसरे दिन सुबह स्नान के बाद महिलाएं पूजा-पाठ करती हैं और फिर पूरा दिन निर्जला व्रत रखती हैं। व्रत के तीसरे दिन महिलाएं पारण करती हैं। सूर्य को अर्घ्य देने के बाद ही महिलाएं अन्न ग्रहण कर सकती हैं

पौराणिक कथाओं के अनुसार, इस व्रत का महत्व महाभारत काल से है। महाभारत के युद्ध में पिता की मौत के बाद अश्वत्थामा बहुत नाराज था। उसके हृदय में बदले की भावना भड़क रही थी। इसी के चलते वह पांडवों के शिविर में घुस गया। शिविर के अंदर पांच लोग सो रहे थे। अश्वत्थामा ने उन्हें पांडव समझकर उन्हें मार डाला। वे सभी द्रोपदी की पांच संतानें थीं। फिर अुर्जन ने उसे बंदी बनाकर उसकी दिव्य मणि छीन ली। अश्वत्थामा ने बदला लेने के लिए अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ में पल रहे बच्चे को मारने की साजिश रची। उसने ब्रह्मास्त्र का इस्तेमाल कर उत्तरा के गर्भ को नष्ट कर दिया। ऐसे में भगवान श्रीकृष्ण ने अपने सभी पुण्यों का फल उत्तरा की अजन्मी संतान को देकर उसको गर्भ में फिर से जीवित कर दिया। गर्भ में मरकर जीवित होने के कारण उस बच्चे का नाम जीवित्पुत्रिका पड़ा। तब से ही संतान की लंबी उम्र और मंगल के लिए जितिया का व्रत किया जाने लगा। आगे चलकर यही बच्चा राजा परीक्षित बना। तभी से स्त्रियां आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को निर्जला व्रत रखती हैं। कहते है इस व्रत के प्रभाव से भगवान श्रीकृष्ण व्रती महिलाओं के संतान की रक्षा करते हैं। माना जाता है कि जो मां ये व्रत रखती है, उसकी संतान को जीवन में किसी तरह का दुख नहीं उठाना पड़ता है। उसके घर में हमेशा सुख-शांति बनी रहती है। जो भी महिला इस व्रत की कथा सुनती है उसे कभी भी अपनी संतान के वियोग का सामना नहीं करना पड़ता है। जीवित्पुत्रिका व्रत को जिउतिया या जितिया व्रत के नाम से भी जाना जाता हैं। इस दिन माताएं अपनी संतान की सुरक्षा और सुखी जीवन के लिए निर्जला व्रत रखती हैं और पुत्र के कल्याण की कामना करती हैं। जितिया पर्व विशेष रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में मनाया जाता है। कहते हैं जीवित्पुत्रिका व्रत रखने से वंश वृद्धि होती है। इस व्रत को गंधर्व राजकुमार जीमूतवाहन के नाम पर रखा गया है। सभी व्रतों में जितिया व्रत को सबसे पवित्र माना गया है। इस दिन भगवान जीमूतवाहन की कुशा से निर्मित प्रतिमा को धूप-दीप, चावल, पुष्प आदि अर्पित किए जाते हैं। इस व्रत के दौरान मिट्टी या गोबर से चील या सियारिन की मूर्ति बनाते हैं। माथे पर लाल सिंदूर क टीका लगाया जाता है। जितिया व्रत के दौरान व्रत कथा सुनना आवश्य होता है। इस दिन पूजा के दौरान व्रत कथा सुनें। मां को 16 पेड़ा, 16 दूब की माला, 16 खड़ा चावल, 16 गांठ का धागा, 16 लौंग, 16 इलायची, 16 पान, 16 खड़ी सुपारी व श्रृंगार का सामान अर्पित करें। साथ ही वंश वृद्धि के लिए व्रत कर बांस के पत्रों से पूजन किया जाता है। नवमीं के दिन सूर्योदय के बाद ही व्रत का पारण किया जाता है। आश्विन कृष्ण अष्टमी के प्रदोषकाल में पुत्रवती महिलाएं जीमूतवाहनकी पूजा करती हैं। कैलाश पर्वत पर भगवान शंकर माता पार्वती को कथा सुनाते हुए कहते हैं कि आश्विन कृष्ण अष्टमी के दिन उपवास रखकर जो स्त्री सायं प्रदोषकाल में जीमूतवाहनकी पूजा करती हैं और कथा सुनने के बाद आचार्य को दक्षिणा देती है, वह पुत्र-पौत्रों का पूर्ण सुख प्राप्त करती है। व्रत का पारण दूसरे दिन अष्टमी तिथि की समाप्ति के बाद किया जाता है। यह व्रत अत्यंत फलदायी है। जितिया व्रत हर साल आश्विन महीने के कृष्णपक्ष अष्टमी को मनाया जाता है। इसे पुत्र की लंबी आयु के लिए किया जाता है। कई विवाहित महिलाएं इसे पुत्र प्राप्ति के लिए भी करती हैं। कहते है जितिया व्रत करने से भगवान जीऊतवाहन, पुत्र पर आने वाली सभी समस्याओं से उसकी रक्षा करतें हैं। इस व्रत की कथा सुनने वाली महिला को कभी संतान वियोग नही होना पड़ता। साथ ही घर में सुख-शांति एवं देवी-देवताओं की कृपा बनी रहती है।

जितिया व्रत की पूजा विधि

जितिया व्रत के पहले दिन महिलाएं सुबह सूर्योदय से पहले जागकर स्नान करके पूजा करती हैं और फिर एक बार भोजन ग्रहण करती हैं और उसके बाद पूरा दिन कुछ भी नहीं खातीं। दूसरे दिन सुबह स्नान के बाद महिलाएं पूजा-पाठ करती हैं और फिर पूरा दिन निर्जला व्रत रखती हैं। व्रत के तीसरे दिन महिलाएं पारण करती हैं। सूर्य को अर्घ्य देने के बाद ही महिलाएं अन्न ग्रहण कर सकती हैं। मुख्य रूप से पर्व के तीसरे दिन झोर भात, मरुवा की रोटी और नोनी का साग खाया जाता है। अष्टमी को प्रदोषकाल में महिलाएं जीमूतवाहन की पूजा करती है। जीमूतवाहन की कुशा से निर्मित प्रतिमा को धूप-दीप, अक्षत, पुष्प, फल आदि अर्पित करके फिर पूजा की जाती है। इसके साथ ही मिट्टी और गाय के गोबर से सियारिन और चील की प्रतिमा बनाई जाती है। प्रतिमा बन जाने के बाद उसके माथे पर लाल सिंदूर का टीका लगाया जाता है। पूजन समाप्त होने के बाद जीवित्पुत्रिका व्रत की कथा सुननी चाहिए।

पुत्रों की संख्या दर से बनती है जिउतिया

मान्यता यह भी है कि माताएं रसोईघर की चैखट को अन्नपूर्णा और मातृपक्ष के पितरों की स्मृति में टीका देती हैं। पुत्रवती होने के प्रतीक स्वरूप गले में धागे से बनी जिउतिया पहनती हैं, जिसमें पुत्रों की संख्या से एक अधिक गांठ लगाई जाती हैं। अधिक वाली गांठ जिउतबन्हन की गांठ कहलाती है जिसे जीमूतवाहन नाम से समझा जा सकता है। स्वयं पहनने के पहले उसे कुछ देर पुत्र को पहना कर रखा जाता है। उसके बाद विविध पकवानों के साथ पारण किया जाता है।

जिउतिया व्रत की कथाः माताएं इस व्रत को अपार श्रद्धा के साथ करती हैं। जीवित्पुत्रिका व्रत के साथ जीमूतवाहन की कथा जुडी है। कहते है गन्धर्वों के राजकुमार का नाम जीमूतवाहन था। वे बड़े उदार और परोपकारी थे। जीमूतवाहन के पिता ने वृद्धावस्था में वानप्रस्थ आश्रम में जाते समय इनको राजसिंहासन पर बैठाया, किन्तु इनका मन राज-पाट में नहीं लगता था। वे राज्य का भार अपने भाइयों पर छोड़कर स्वयं वन में पिता की सेवा करने चले गए। वहीं पर उनका मलयवती नाम की राजकन्या से विवाह हो गया। एक दिन जब वन में भ्रमण करते हुए जीमूतवाहन काफी आगे चले गए, तब उन्हें एक वृद्धा विलाप करते हुए दिखी। पूछने पर वृद्धा ने रोते हुए बताया, ह्लमैं नागवंश की स्त्री हूं और मुझे एक ही पुत्र है। पक्षीराजगरुड़ के सामने नागों ने उन्हें प्रतिदिन भक्षण हेतु एक नाग सौंपने की प्रतिज्ञा की हुई है। आज मेरे पुत्र शंखचूड़ की बलि का दिन है। जीमूतवाहन ने वृद्धा को आश्वस्त करते हुए कहा, ह्लडरो मतह्य। मैं तुम्हारे पुत्र के प्राणों की रक्षा करूंगा। आज उसके बजाय मैं स्वयं अपने आपको उसके लाल कपड़े में ढककर वध्य-शिला पर लेटूंगा। इतना कहकर जीमूतवाहन ने शंखचूड़ के हाथ से लाल कपड़ा ले लिया और वे उसे लपेटकर गरुड़ को बलि देने के लिए चुनी गई वध्य-शिला पर लेट गए। नियत समय पर गरुड़ बडे वेग से आए और वे लाल कपड़े में ढके जीमूतवाहनको पंजे में दबोचकर पहाड़ के शिखर पर जाकर बैठ गए। अपने चंगुल में गिरफ्तार प्राणी की आंख में आंसू और मुंह से आह निकलता न देखकर गरुड़जी बड़े आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने जीमूतवाहन से उनका परिचय पूछा। जीमूतवाहन ने सारा किस्सा कह सुनाया। गरुड़जी उनकी बहादुरी और दूसरे की प्राण-रक्षा करने में स्वयं का बलिदान देने की हिम्मत से बहुत प्रभावित हुए। प्रसन्न होकर गरुड़जी ने उनको जीवनदान दे दिया तथा नागों की बलि न लेने का वरदान भी दे दिया। इस प्रकार जीमूतवाहन के साहस से नाग-जाति की रक्षा हुई। तभी से पुत्र की सुरक्षा हेतु जीमूतवाहन की पूजा की प्रथा शुरू हो गई। एक अन्य कथानुसार, नर्मदा नदी के पास कंचनबटी नाम का नगर था। वहां का राजा मलयकेतु था। नर्मदा नदी के पश्चिम दिशा में मरुभूमि थी, जिसे बालुहटा कहा जाता था। वहां विशाल पाकड़ का पेड़ था। उस पर चील रहती थी। पेड़ के नीचे खोधर था, जिसमें सियारिन रहती थी। चील और सियारिन, दोनों में दोस्ती थी। एक बार दोनों ने मिलकर जितिया व्रत करने का संकल्प लिया। फिर दोनों ने भगवान जीऊतवाहन की पूजा के लिए निर्जला व्रत रखा। व्रत वाले दिन उस नगर के बड़े व्यापारी की मृत्यु हो गयी। अब उसका दाह संस्कार उसी मरुस्थल पर किया गया। काली रात हुई और घनघोर घटा बरसने लगी। कभी बिजली कड़कती तो कभी बादल गरजते।

एससीओ: मजबूत भारत की बुलंद तस्वीर

किशन भावनानी

वैश्विक स्तरपर पिछले कुछ वर्षोंसे भारत की अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जिस शक्तिशाली रुतबे प्रमुखता अपेक्षाकृत अधिक पूछपरख मानसम्मान के साथ उपस्थिति पर दुनिया की नजरें उठ जाती है और भारत की तेजी के साथ बढ़ती प्रौद्योगिकी स्वास्थ्य शिक्षा परिवहन सहित अन्य क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के जबरदस्त विकास और खासकर कोविड महामारी में 135 करोड़ देशवासियों की सुरक्षा, 200 करोड़ पार वैक्सीनेशन, भारत की पहल पर 70 से अधिक देशों के समर्थन के साथ संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पोशाक अनाज वर्ष 2023 को घोषित करना, एक दिसंबर से 30 नवंबर 2023 तक जी-20 की अध्यक्षता जिसमें देश भर में 200 से अधिक जी-20 बैठक की मेजबानी करने की उम्मीद है, एससीओ सम्मेलन से पूर्व वाराणसी को क्षेत्र की पहली पर्यटन और सांस्कृतिक राजधानी 2022-23 के रूप में चुना जाना सहित अनेक ऐसी उपलब्धियां गिनाई जा सकती है। इस बीच 12 से 15 सितंबर 2022 को एससीओ सम्मिट जिसमें 8 देश शामिल हैं में भारत के पीएम की उपस्थिति जबकि जिनमें रूस यूक्रेन युद्ध, लद्दाख पर चीन के साथ तल्खी, पाक के नए पीएम की उपस्थिति, रूस के साथ नाटो देशों द्वारा पाबंदी के बावजूद राहतों पर तैलीय पदार्थों की खरीदी ऊपर से कुछ सदस्यों के साथ द्विपक्षीय वार्ता की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। इसीलिए आज हम इस आर्टिकल के माध्यम से इस होने वाले एससीओ सम्मिट पर चर्चा करेंगे। साथियों बात अगर हम इस एससीओ शिखर सम्मेलन के भारत के लिए महत्वपूर्ण होने की करें तो,भारत इस शिखर सम्मलेन में सदस्य देशों के साथ द्विपक्षीय वार्ता भी करने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता, जो वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अति महत्वपूर्ण हो जाती है।चीन के साथ वार्ता- भारत हाल के सीमा विवादों के मद्देनजर चीन के साथ अन्य द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा कर सकता है। यह भारत के पीएम और चीन के राष्ट्रपति के साथ, नवंबर 2019 के बाद पहली बैठक होगी। उनकी द्विपक्षीय बैठक नवंबर 2019 में ब्राजील में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान हुई थी। रूस के साथ वार्ता- इसके अतिरिक्त भारत रूस के साथ द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा कर सकता है, और दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय रिश्तों को एक नया आयाम देने की भी प्रयास करेगा। गौरतलब है कि भारत रूस-यूक्रेन संघर्ष के कारण पश्चिमी देशों के दबाव के बावजूद रूस से सस्ते कीमत पर कच्चे तेल का आयात कर रहा है।

साथियों बात अगर हम उज्बेकिस्तान के समरकंद जो राजधानी ताशकंद से 300 किलोमीटर दूर है, में हो रहे 22 वें एससीओ शिखर सम्मेलन की करें तो एक टीवी चैनल पर ग्राउंड रिपोर्टिंग दिखाई गई, जिसमें वहां के नागरिकों पर भारत की अमिट शाप पड़ी हुई दिखी!! वो भारत की बहुत तारीफ और शक्तिशाली रुतबे बौद्धिक क्षमता में अग्रणी डिजिटल इंडिया और समृद्ध देश बताकर बहुत तारीफ कर रहे थे। उनका कहना था वह भारतीय नागरिकों से बहुत प्यार करते हैं, उनकी प्रथम पसंद भारत है यह टीवी चैनलों पर ग्राउंड रिपोर्टिंग देखकर हमारा सीना गर्व से चौड़ा हो गया ऐसा है मेरा महान भारत। साथियों बात अगर हम इस शिखर सम्मेलन की सामायिक परिस्थितिकी की करे तो, यह बैठक ऐसे समय हो रही है जब लद्दाख सीमा पर भारत-चीन के बीच विवाद है, यूक्रेन युद्ध में उलझे हैं पुतिन, पाकिस्तान नई सरकार बनी है, नए प्रधानमंत्री इस बैठक में शामिल हो रहे हैं, अफगानिस्तान में तालिबान की सरकार है, कई देशों के बीच के आपसी समीकरण फिलहाल बदले नजर आ रहे हैं। वर्तमान समय में शंघाई सहयोग संगठन की अध्यक्षता उज्बेकिस्तान कर रहा है। जून 2019 के बाद यह पहला मौका है जब यह शिखर सम्मेलन फेस टू फेस या फिजिकल रूप में आयोजित किया जा रहा है, इससे पहले यह 2019 में किर्गिस्तान के बिश्केक में फिजिकल रूप में आयोजित किया गया था।

साथियों बात अगर हम एससीओ शिखर सम्मेलन में भारत की उपस्थिति की विशेषता की करें तो, शिखर सम्मेलन में भारत की उपस्थिति महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत शिखर सम्मेलन के अंत में एससीओ की रोटेशनल प्रेसीडेंसी ग्रहण करेगा। भारत सितंबर 2023 तक एक साल के लिए समूह की अध्यक्षता करेगा। अगले साल भारत एससीओ सम्मेलन की मेजबानी करेगा, जिसमें चीन,रूस और पाकिस्तान के नेता शामिल होंगे। साथियों बात अगर हम एससीओ की संरचना की करें तो, इसकी संरचना में एससीओ सचिवालय क्षेत्रीयआतंकवाद रोधी संरचना (आरएटीएस) शासन प्रमुखों की परिषद आदि शामिल है।पर्यवेक्षक- वर्तमान में इसमे तीन पर्यवेक्षक देश अफगानिस्तान, मंगोलिया और बेलारूस है, जो इस संगठन की पूर्ण सदस्यता में रूचि रखते है। डायलॉग पार्टनर्स एससीओ के और छह डायलॉग पार्टनर्स आर्मेनिया, अजरबैजान, कंबोडिया, नेपाल, श्रीलंका और तुर्की है।महासचिव-एससीओ महासचिव को तीन वर्ष के कार्यकाल के लिए चुना जाता है। एससीओ के वर्तमान महासचिव चीन के हैं, जिन्होंने 1 जनवरी 2022 को अपना पद ग्रहण किया था। आधिकारिक भाषा-एससीओ की आधिकारिक भाषाएँ रूसी और चीनी हैं। एससीओ एक स्थायी अंतर-सरकारी अंतर्राष्ट्रीय संगठन है।यह यूरेशियाई राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य संगठन है जिसका लक्ष्य इस क्षेत्र में शांति, सुरक्षा एवं स्थिरता बनाए रखना है।इसका गठन वर्ष 2001 में किया गया था।एससीओ चार्टर वर्ष 2002 में हस्ताक्षरित किया गया था और यह वर्ष 2003 में लागू हुआ।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 22 वें एससीओ शिखर सम्मेलन 15-16 सितंबर 2022 पर विशेष है मजबूत भारत की बुलंद तस्वीर, वैश्विक मंचों पर भारत के शक्तिशाली रुतबे से दुनिया में भारत का डंका, भारत का 2023 के लिए समूह की अध्यक्षता ग्रहण करना सराहनीय उपलब्धि हैं।

कमजोर पड़ते विपक्ष से भारतीय लोकतंत्र खतरे में

डॉ सत्यवान सौरभ

प्रेस पर बढ़ते हमले और न्यायिक स्वायत्तता के क्षरण से लोकतंत्र के रूप में भारत की वैश्विक छवि को खतरा है। दुनिया भर में लोकतंत्र पीछे हट रहा है। 21वीं सदी में कई लोकतंत्र लोकतंत्र के सिद्धांतों की अवहेलना करते रहे हैं। प्रेस की स्वतंत्रता, राज्य के अन्य सार्वजनिक संस्थानों की स्वतंत्रता जैसे सिद्धांतों का अक्सर उल्लंघन किया जाता है। उदाहरण के लिए, कई विश्व नेताओं जैसे व्लादिमीर पुतिन (रूस), रेसेप तईप एर्दोआन (तुर्की), ट्रम्प (यूएसए) ने सत्ता बनाए रखने के लिए इन्हीं संस्थानों पर एक निरंतर, हमले की शुरूआत की थी। पश्चिमी शैक्षणिक संस्थानों, फ्रीडम हाउस (यूएस) और वैरायटीज ऑफ डेमोक्रेसी प्रोजेक्ट (स्वीडन) ने भारत की लोकतांत्रिक रेटिंग को डाउनग्रेड कर दिया। संप्रभु शक्ति पर पहली बार संस्थागत जांच इंग्लैंड में शानदार क्रांति के माध्यम से प्रदान की गई थी। इससे संसद की स्थापना हुई और इंग्लैंड पूर्ण राजतंत्र से संवैधानिक राजतंत्र में स्थानांतरित हो गया। बाद में, फ्रांसीसी क्रांति और अमेरिकी क्रांति ने अपने नागरिकों को अपरिहार्य अधिकारों का आश्वासन दिया। हालाँकि, उपनिवेशवाद के युग में, महिलाओं के साथ-साथ नस्लीय और धार्मिक अल्पसंख्यकों का बहिष्कार 1950 के दशक तक जारी रहा। 1950 के दशक के बाद सार्वभौमिक मताधिकार चुनावों का संस्थानीकरण, सरकार की शक्तियों पर संवैधानिक जाँच, स्वतंत्र न्यायपालिका को न्यायिक समीक्षा का अधिकार, सरकारी कार्यों की जांच करने के लिए अधिकार प्राप्त प्रेस जैसे उपायों से लोकतंत्र मजबूत हुआ। अंत में, शीत युद्ध की समाप्ति के बाद, सोवियत संघ के पतन के कारण, कई सत्तावादी देशों को चुनाव कराने के लिए मजबूर होना पड़ा। इससे दुनिया के अधिकांश देशों में उदार लोकतंत्र शासन की स्थापना हुई। भारत की लोकतांत्रिक रेटिंग को डाउनग्रेड क्यों किया गया? फ्रीडम हाउस और वी-डेम बहुआयामी ढांचा दोनों ही प्रेस की स्वतंत्रता और न्यायपालिका की स्वतंत्रता को काफी महत्व देते हैं। इन संस्थागत जांच और संतुलन को कम करने के बारे में चिंताओं ने दोनों संस्थानों को अपने सूचकांक पर भारत के स्कोर को कम करने के लिए प्रेरित किया। भारत में कमजोर लोकतंत्र क्वाड या डी-10 का पूर्ण सदस्य बनने की भारत की महत्वाकांक्षाओं को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। यह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने के भारत के दावे को भी कमजोर करेगा। ऐसे में क्या किये जाने की आवश्यकता है? सबसे पहले, सरकार को आलोचना को सिरे से खारिज करने के बजाय सुनना चाहिए। लोकतांत्रिक मूल्यों को खत्म करने के सुझावों पर एक विचारशील और सम्मानजनक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। दूसरा, प्रेस और न्यायपालिका जिन्हें लोकतंत्र के स्तंभ के रूप में माना जाता है, को किसी भी कार्यकारी हस्तक्षेप से स्वतंत्र होने की आवश्यकता है। तीसरा, मजबूत लोकतंत्र के लिए मजबूत विपक्ष की जरूरत होती है। वैकल्पिक विकल्प के बिना, मनमानी शक्ति पर रोक लगाने के चुनाव का उद्देश्य ही विफल हो जाता है। लोकतांत्रिक मूल्य और सिद्धांत भारत की पहचान के मूल हैं। हमें अपने लोकतंत्र के स्तंभों - विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और मीडिया को मजबूत करके उसकी रक्षा करने की आवश्यकता है। लोकतंत्र के चार स्तंभों के प्रति आम आदमी के विश्वास और सम्मान ने पिछले सात वर्षों में एक गंभीर चोट की है। भारत को अपनी छवि में बदलने की अपनी हड़बड़ी में लोकतंत्र और सामाजिक ताने-बाने की इमारत को नष्ट कर रहे हैं, यह महसूस किए बिना कि हम सभी भी दफन हो जाएंगे। राजनेता केवल चुनाव के बारे में चिंतित हैं, बाबू "सही" पोस्टिंग के बारे में हैं और कुछ न्यायाधीश "माई लॉर्ड" के बजाय "योर ऑनर" कहे जाने पर नाराज हैं। आज आम आदमी को यह महसूस करना होगा कि आखिरकार वह राष्ट्र की नियति को गढ़ता है। लोग अपनी मनचाही सरकार चुनते हैं लेकिन उन्हें वह सरकार मिलती है जिसके वे हकदार होते हैं। हमें कैसे आकलन करना चाहिए कि क्या हम भारत में लोकतांत्रिक प्रथा का क्षरण देख रहे हैं - जिसे राजनीतिक वैज्ञानिक 'लोकतांत्रिक बैकस्लाइडिंग' कहते हैं?

यदि भारत का लोकतंत्र खतरे में है, तो यह दर्शाता है कि केंद्र सरकार ने लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों का उल्लंघन किया है। राज्य की संस्थाएं, जो लोकतांत्रिक राजनीतिक अभिनेताओं के लिए निष्पक्ष होनी चाहिए, का उपयोग सत्तारूढ़ दल की सेवा में किया रहा है।

विज्ञान का शोर : अंधआस्था पर जोर ?

निर्मल रानी

1965 में दिल्ली के रामलीला मैदान में एक रैली को संबोधित करते हुए देश को एक अति प्रचलित व अति लोकप्रिय नारा दिया था 'जय जवान -जय किसान '। इसके बाद पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 1998 में पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद 'जय जवान, जय किसान के नारे के साथ ही जय विज्ञान' का नारा भी जोड़ दिया था। और अब पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले तो जनवरी 2019 में जालंधर में भारतीय विज्ञान कांग्रेस में 'जय अनुसंधान' का नारा दिया फिर लाल किले पर तिरंगा झंडा फहराने के बाद देश को संबोधित करते हुए 'जय जवान', 'जय किसान' और जय विज्ञान के साथ ही इस नारे में 'जय अनुसंधान' शब्द भी जोड़ दिये। इसमें कोई संदेह नहीं कि दुनिया की तरक़्क़ी का आधार केवल विज्ञान ही है। यह मानव को न केवल विकास पथ पर ले जाता है बल्कि अन्धविश्वास व रूढ़ीवादिता से भी दूर करता है। यह विज्ञान ही था जिसने कोविड जैसी वैश्विक महामारी में यथाशीघ्र संभव वैक्सीन तैय्यार कर पूरी मानव जाति का सफाया होने से बचा लिया। इसलिये विज्ञान और तमाम क्षेत्रों में इसपर निरंतर होने वाले अनुसंधानों से भला कौन इनकार कर सकता है।

इसलिये 'जय जवान, जय किसान के नारे के साथ ही जय विज्ञान' और अब प्रधानमंत्री मोदी द्वारा इस नारे में 'जय अनुसंधान' शब्द का जोड़ा जाना निश्चित रूप से स्वागत योग्य है। परन्तु सवाल यह है कि वर्तमान सरकार, विज्ञान व इससे जुड़े अनुसंधान पर जितना जोर दे रही है।

18वीं प्री उत्तर प्रदेश राज्य निशानेबाजी प्रतियोगिता : बनारस शूटिंग एकेडमी के खिलाड़ियों ने 4 स्वर्ण सहित जीते 7 पदक

वाराणसी। बनारस शूटिंग एकेडमी के खिलाड़ियों ने 18वीं प्री उत्तर प्रदेश राज्य निशानेबाजी प्रतियोगिता में 7 पदक हासिल किये, जिनमें 4 स्वर्ण 1 रजत पदक और 2 कांस्य पदक शामिल है। इस प्रतियोगिता का आयोजन 7 सितंबर से 11 सितंबर तक दादरी में

हुआ था। इसके अलावा एकेडमी के अजीत यादव, हिमांशु रघुवंशी, जय प्रकाश ,शुभम रघुवंशी ने आगामी राज्य निशानेबाजी प्रतियोगिता के लिए अहर्ता प्राप्त की है जोकि 17 सितंबर से 24 सितंबर तक नई दिल्ली में आयोजित की जा रही है। इस मौके पर अंतरराष्ट्रीय निशानेबाज राहुल पुनिया ने विजेता खिलाड़ियों को पदक पहनाकर सम्मानित किया और राज्य राइफल संघ के महासचिव जी एस सिंह ने खिलाड़ियों और कोच विशाल विश्वकर्मा व आशीष विश्वकर्मा को आगामी प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दीं।

विश्व कुश्ती चैंपियनशिप 2022 के रेपेचेज दौर में पहुंची विनेश फोगाट

बेलग्रेड। राष्ट्रमंडल खेलों की स्वर्ण पदक विजेता विनेश फोगाट ने सर्बिया के बेलग्रेड में चल रहे विश्व कुश्ती चैंपियनशिप 2022 के रेपेचेज दौर में प्रवेश किया। 2019 विश्व चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता विनेश फोगाट को क्वालिफिकेशन राउंड में 2022 एशियाई चैंपियनशिप की रजत पदक विजेता मंगोलिया के खुलन बत्खुयाग से 7-0 से हार मिली थी।

विनेश शुरुआती दौर के अंत में बत्खुयाग से 3-0 से पीछड़ रहीं थीं और अंतिम क्षणों में चार और अंक गंवाकर मुकाबला हार गई। खुलन बत्खुयाग ने अपना अगला मैच जीतकर फाइनल में प्रवेश किया, जिससे विनेश को कांस्य पदक जीतने का मौका मिल गया। विनेश अब रेपेचेज में 2018 एशियाई खेलों की रजत पदक विजेता कजाकिस्तान की ज़ुल्दिज़ एशिमोवा से भिड़ेंगी। हालांकि अन्य चार भारतीय महिलाएं आगे बढ़ने में विफल रहीं। अप्रैल में एशियाई चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीतने वाली सुषमा शौकीन महिलाओं के 55 किग्रा में रेपेचेज दौर में मोल्दोवा की मारियाना ड्रैगुटन से हार गई। सुषमा शोकीन ने सोमवार को क्यूबा की पैन-अमेरिकन चैंपियन यानेलिस सान्ज़ वर्देसिया को हराया, लेकिन पिछले संस्करण की कांस्य पदक विजेता यूक्रेन की ओलेक्ज़ेंड्रा खोमेनेट्स से हार गई। वहीं, 50 किग्रा में प्रतिस्पर्धा करने वाली नीलम मंगलवार को जीत दर्ज करने वाली एकमात्र भारतीय थीं। अंडर -23 एशियाई रजत पदक विजेता भारतीय ने मुख्य ड्रॉ के लिए क्वालीफाई करने के लिए स्ज़िमोनेटा टिमिया स्ज़ेकर को 4-2 से हराया।

ICC रैंकिंग में विराट की बड़ी छलांग : एशिया कप में शानदार प्रदर्शन का मिला फायदा

नई दिल्ली। एशिया कप में अपनी धमाकेदार बल्लेबाजी से फॉर्म में वापसी करने वाले टीम इंडिया के पूर्व कप्तान विराट कोहली को बड़ा फायदा हुआ है। वह ICC टी-20 रैंकिंग में 14 पायदान की बड़ी छलांग लगाते हुए 15वें स्थान पर पहुंच गए हैं। वहीं, प्लेयर ऑफ द सीरीज रहे वानिंदु हसरंगा टी-20 गेंदबाजों की रैंकिंग में तीन पायदान की छलांग के साथ छठे स्थान पर पहुंच गए हैं। टी20 बल्लेबाजों की रैंकिंग में भारत के सूर्यकुमार यादव चौथे स्थान पर हैं, जबकि कप्तान रोहित शर्मा 14वें पायदान पर हैं। पाकिस्तान के विकेटकीपर बल्लेबाज मोहम्मद रिजवान टी-20 रैंकिंग में टॉप पर हैं, जबकि पाकिस्तानी कप्तान बाबर आजम तीसरे पायदान पर खिसक गए हैं। साउथ अफ्रीका के एडेन मार्करम दूसरे पायदान पर पहुंच गए हैं। गेंदबाजी रैंकिंग की बात करें तो भुवनेश्वर कुमार को एक पायदान का नुकसान हुआ है।

स्मृति के अर्धशतक से दूसरा टी20 जीता भारत, श्रृंखला बराबर

डर्बी। सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना के नाबाद अर्धशतक और ऑफ स्पिनर स्नेह राणा के तीन विकेट से भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में यहां इंग्लैंड को आठ विकेट से हराकर तीन मैच की श्रृंखला 1-1 से बराबर कर दी। इंग्लैंड का पहले बल्लेबाजी करने का फैसला गलत साबित हुआ जब भारतीय गेंदबाजों ने पहले मैच की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते हुए 10 ओवर के अंदर मेजबान टीम का स्कोर पांच विकेट पर 54 रन कर दिया। इंग्लैंड की बल्लेबाजों को शुरुआत में रन बनाने में परेशानी हुई और टीम ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाए। फ्रेया केंप (37 गेंद पर नाबाद 51) और माइया बाउचियर (26 गेंद पर 34 ने) ने छठे विकेट के लिए 65 रन जोड़कर पारी को संभाला और इंग्लैंड को छह विकेट पर 142 रन के चुनौतीपूर्ण स्कोर तक पहुंचाया। 17 वर्षीय फ्रेया ने अपनी पारी में तीन चौके और इतने ही छक्के लगाए जबकि माइया ने चार बार गेंद को बाउंड्री के दर्शन कराए। स्नेह (24 रन पर

तीन विकेट) ने खतरनाक दिख रही इस साझेदारी को 18वें ओवर में माइया को विकेटकीपर रिचा घोष के हाथों स्टंप कराके तोड़ा। फ्रेया ने हालांकि एक छोर संभाले रखा और सोफी एक्लेस्टोन (नाबाद 07) के साथ मिलकर बाकी बची 15 गेंद पर 23 रन बटोरे। भारत की ओर से रेणुका सिंह (30 रन एक विकेट) और दीप्ति शर्मा (21 रन पर दो विकेट) ने स्नेह का अच्छा साथ निभाया। भारत ने इसके जवाब में स्मृति (53 गेंद पर नाबाद 79 रन), कप्तान हरमनप्रीत कौर (नाबाद 29) और शेफाली वर्मा (20) की पारियों की बदौलत 3.2 ओवर शेष रहते दो विकेट पर 146 रन बनाकर आसान जीत दर्ज की। स्मृति और शेफाली ने पावरप्ले के छह ओवर में 55 रन जोड़कर टीम को शानदार शुरुआत दिलाई। सोफी ने आखिरकार इंग्लैंड को सफलता दिलाई जब उन्होंने अपनी ही गेंद पर गोता लगाते हुए शेफाली का कैच लपका। डायलन हेमलता (09) ने एक बार फिर निराश किया। उन्हें फ्रेया ने बोल्ड किया। उन्होंने 16 गेंद खेली। हरमनप्रीत और उप कप्तान स्मृति ने इसके बाद तीसरे विकेट के लिए नाबाद 69 रन की साझेदारी निभाकर भारत को लक्ष्य तक पहुंचाया। स्मृति ने 17वें ओवर में फ्रेया पर तीन चौके लगाकर भारत को लक्ष्य तक पहुंचाया। भारतीय बल्लेबाजों ने कोई छक्का नहीं मारा लेकिन स्मृति के बल्ले से 13 चौके निकले जबकि हरमनप्रीत और शेफाली ने भी चार-चार चौके मारे। मेजबान टीम की ओर से सोफी (22 रन पर एक विकेट) और फ्रेया (30 रन पर एक विकेट) ही विकेट चटका पाए। तीन मैच की श्रृंखला का तीसरा और अंतिम मैच 15 सितंबर को ब्रिस्टल में खेला जाएगा।

कोई उपलब्धि व्यक्तिगत नहीं है, बल्कि टीम के प्रयासों का परिणाम है : सविता

बेंगलुरु। भारतीय महिला हॉकी टीम की गोलकीपर सविता ने एफआईएच महिला गोलकीपर ऑफ द ईयर अवार्ड 2021-22 के लिए नामित होने पर आभार व्यक्त किया और कहा कि उन्हें लगता है कि वह सही दिशा में आगे बढ़ रही हैं। पिछले संस्करण में इसी श्रेणी में पुरस्कार जीतने वाली सविता ने कहा कि उनके साथियों और कोचिंग स्टाफ का समर्थन मददगार साबित हुआ है। सविता ने कहा, लगातार वर्षों में नामांकित होने के बारे में मुझे काफी अच्छा लग रहा है। हमने पूरे साल टोक्यो 2020 ओलंपिक के बाद कड़ी मेहनत की। नामांकन प्राप्त करने से मुझे लगता है कि मैं प्रशिक्षण में सही दिशा में आगे बढ़ रही हूं।

32 वर्षीय सविता ने कहा, कोचिंग स्टाफ और खिलाड़ियों ने काफी सहयोग किया है। हमने हमेशा हर प्रतियोगिता में एक साथ काम किया है। हम में से किसी के लिए कोई उपलब्धि व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि टीम के प्रयासों का परिणाम है। एक गोलकीपर के रूप में, मेरा काम यह सुनिश्चित करना है टीम मेरे प्रदर्शन से खुश है और हम सभी परिणाम प्राप्त करने में एक-दूसरे की मदद करने का प्रयास करते हैं। यदि हम में से एक को नामांकित किया जाता है, तो टीम के प्रत्येक सदस्य को प्रशंसा मिलती है और यही मुझे खुश करता है। सविता ने एफईएच प्रो लीग 2021/22 के डेब्यू सीज़न में कप्तान के रूप में भारतीय महिला हॉकी टीम का नेतृत्व किया, जहाँ टीम तीसरे स्थान पर रही। उन्होंने बर्मिंघम 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में कप्तान के रूप में टीम का नेतृत्व किया, जहां भारत ने न्यूजीलैंड को 1-1 (शूट आउट में 2-1) से हराकर प्रतिष्ठित कांस्य पदक जीता। दोहरी जिम्मेदारियों पर बोलते हुए, सविता ने कहा, गोलकीपर की स्थिति एक अलग जिम्मेदारी है। एक अनुभवी गोलकीपर के रूप में, मैं हमेशा इस मानसिकता के साथ प्रशिक्षण लेती हूं कि मुझे टीम की मदद करनी है। एक कप्तान के रूप में, आपकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है क्योंकि आपको अपने खेल का ध्यान भी रखना पड़ता है और अपनी टीम के प्रदर्शन को भी संभालें रखना होता है। उन्होंने कहा, यह संभव है कि किसी दिन आपकी टीम अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रही हो, इसलिए आपको उन्हें एक कप्तान के रूप में प्रेरित करना होगा।

अर्शदीप के टी-20 वर्ल्ड कप टीम में चुने जाने पर गौरवान्वित हुए माता-पिता, कहा-

गर्व का एक पल जिसने हमें भावुक कर दिया

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने ऑस्ट्रेलिया में खेले जाने वाले टी-20 वर्ल्ड कप 2022 के लिए भारतीय टीम का ऐलान कर दिया है। एशिया कप में आलोचकों का शिकार हुए बांए हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह को इस टीम में जगह मिली है, जबकि जसप्रीत बुमराह और हर्षल पटेल की टीम इंडिया में वापसी हुई है। 16 अक्टूबर से शुरू होने वाले इस घमासान में भारत की 15 सदस्यीय टीम के लिए चुने जाने पर अर्शदीप के परिवार ने खुशी जताई है और अब वे उन्हें वर्ल्ड कप जीतते हुए देखना चाहते हैं। इस सिलसिले में स्टार स्पोर्ट्स इंडिया ने स्वदेशी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म कू ऐप पर एक वीडियो शेयर किया है जिसमें अर्शदीप के माता-पिता गौरवान्वित महसूस करते हुए अंडर 19 वर्ल्ड कप के बाद उन्हें टी-20 वर्ल्ड कप में भी जीतते हुए देखना चाहते हैं। चैनल ने इस वीडियो के साथ कैप्शन में लिखा, गर्व का एक पल जिसने हमें

भावुक कर दिया है! अर्शदीप के माता-पिता के साथ आईसीसी टी-20 विश्व कप में टीम इंडिया में उनके चयन का जश्न एकसाथ मनाएं! अर्शदीप की मां बताती हैं कि जब बेटे के भारतीय टीम में चयन की खबर सामने आई तो उस वक्त वह प्रार्थना कर रही थी। वो कहती हैं, ऐसा लगता है जैसे उनकी प्रार्थना स्वीकार हो गई हो। डेथ ओवर स्पेशलिस्ट माने जाने वाले अर्शदीप ने इस साल की शुरुआत में आईपीएल में असाधारण कौशल का प्रदर्शन करते हुए भारतीय टीम में अपनी जगह बनाई और लगातार सभी को अपने प्रदर्शन से प्रभावित करना जारी रखा है। बता दें कि अर्शदीप के साथ टी-20 विश्व कप के लिए 5 तेज गेंदबाजों का चयन किया गया है। अर्शदीप सिंह के अतिरिक्त भुवनेश्वर कुमार और हार्दिक पांड्या भी टीम में शामिल हैं। इस विश्व कप में भारत अपना पहला मैच 23 अक्टूबर को पाकिस्तान के खिलाफ मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर खेलेगा।

मोहम्मद सिराज का काउंटी में शानदार प्रदर्शन, पदार्पण पर लिए पांच विकेट

लंदन। काऊंटी चैम्पियनशिप में वारविकशायर की ओर से खेल रहे भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने सरमसेट के खिलाफ खेले गए अहम मुकाबले में महज 82 रन देकर 5 विकेट चटका लीं जिससे समरसेट की टीम महज 219 रन पर ऑल आऊट हो गई। सिराज ने इंगलैंड की उछाल भरी पिचों का भरपूर फायदा उठाया और कई बाऊंसर मारकर विकेट निकाले। सिराज के लिए यह चैम्पियनशिप अहम है क्योंकि वह भारतीय टेस्ट टीम के प्रमुख गेंदबाजों में से एक हैं ऐसे में इंगलैंड में होने वाले भविष्य के कार्यक्रम में उन्हें फायदा हो सकता है। वारविकशायर की ओर से सिराज के अलावा भारत से जयंत यादव भी खेल रहे हैं। उन्होंने गेंदबाजी करते हुए 14 ओवर में 42 रन देकर एक विकेट हासिल किया था। बाद में बल्लेबाजी करते हुए भी उन्होंने हाथ दिखाए। बहरहाल, यह मैच सिराज के लिए अहम रहा। उनकी आग उगलती गेंदों के आगे एक समय समरसेट मत्र 87 रन पर ही सात विकेट गंवा चुकी थी लेकिन पुछल्ले

बल्लेबाजों डेवी 31, साजिद खान 53 तो जे. ब्रूक्स ने 15 रन बनाकर टीम का स्कोर 219 तक पहुंचा दिया।

हाल ही में सिराज ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा था कि वह अपनी लाइन और लेंथ में निरंतरता के लिए सुधार करने पर विचार कर रहे हैं। उन्होंने कहा- वेस्टइंडीज और इंग्लैंड में मैंने अच्छी गेंदबाजी की, पहले मैच में भी मेरी लय अच्छी थी, इसलिए मेरी योजना इस बात की चिंता किए बिना कि मुझे विकेट मिलेंगे या नहीं, लगातार एक क्षेत्र में हिट करने की थी। सिराज ने कहा- मैंने सिर्फ खुद पर विश्वास रखा, क्योंकि उतार-चढ़ाव हर किसी के जीवन का हिस्सा हैं, इसलिए मैंने सिर्फ यह विश्वास रखा कि मैं इसे कर सकता हूं, चाहे वह एक भी हो सफेद गेंद या लाल गेंद।

ऑस्ट्रेलिया ने टी20 विश्व कप के लिए नए किट का किया अनावरण

कैनबरा। ऑस्ट्रेलियाई पुरुष क्रिकेट टीम ने ऑस्ट्रेलिया में 16 अक्टूबर से शुरू होने वाले टी 20 विश्व कप के लिए अपने नए क्रिकेट किट का अनावरण किया है। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने बुधवार को अपने ट्विटर हैंडल से उक्त जानकारी दी। नई जर्सी के चारों ओर शानदार कलाकृति है, जिसमें काली आस्तीन है और ट्रंक पर हरे और गोल्डन कलर की ढाल है। काली ट्राउजर और काली टोपी के किनारों पर आदिवासी और टोरेस स्ट्रेट आइलैंडर झंडे के रंग होंगे।

ये किट आंटी फियोना क्लार्क और कोर्टनी हेगन ने डिजाइन की है। इससे पहले इस जोड़ी ने पहले ऑस्ट्रेलिया द्वारा पहने गए अन्य स्वदेशी डिजाइनों पर एक साथ काम किया है। पिछले डिज़ाइनों की तरह, वॉकबाउट विकेट्स कलाकृति जो

एक प्रमुख रूप बन गई है, फिर से शर्ट के सामने की तरफ केंद्रीय है। वॉकबाउट विकेट्स के कलाकार क्लार्क हैं, जो किर्रा व्हरौंन्ग महिला हैं और जेम्स मॉस्किटो कूजेंस की परपोती हैं, जिन्होंने 1866 में एमसीजी में एक ऐतिहासिक मैच में एबोरिजिनल इलेवन के लिए खेला था और पहली ऑस्ट्रेलियाई टीम के हिस्से के रूप में 1868 में इंग्लैंड की यात्रा की थी। 2016 के बॉक्सिंग डे टेस्ट से पहले, क्लार्क ने 1866 के खेल की 150 वीं वर्षगांठ का सम्मान करने के लिए कलाकृति तैयार की थी।

जिसे शर्ट के कॉलर पर दिखाया गया है। बता दें कि आईसीसी टी20 विश्व कप ऑस्ट्रेलिया की मेजबानी में 16 अक्टूबर 2022 से 13 नवंबर 2022 तक खेली जाएगी।

इगा स्विएटेक और ओन्स जबूर ने डब्ल्यूटीए फाइनल के लिए किया क्वालीफाई

लंदन। विश्व की नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी इगा स्विएटेक, यूएस ओपन फाइनलिस्ट ओन्स जबूर और बारबोरा क्रेजसिकोवा व कतेरीना सिनियाकोवा की युगल जोड़ी ने 2022 डब्ल्यूटीए फाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया है।

सीज़न-एंडिंग टूर्नामेंट, जिसका आयोजन 2005 के बाद पहली बार संयुक्त राज्य अमेरिका में हो रहा है, में जबूर की पहली और स्विएटेक की दूसरी भागीदारी होगी। क्रेजसिकोवा और सिनियाकोवा की जोड़ी गत चैंपियन के रूप में टूर्नामेंट में वापसी करेगी। स्विएटेक ने कहा, मैं इस साल अपने करियर में दूसरी बार डब्ल्यूटीए फाइनल के लिए क्वालीफाई करने के लिए वास्तव में उत्साहित हूं और मैं वास्तव में फोर्ट वर्थ में प्रशंसकों

के सामने खेलने के लिए उत्सुक हूं। 21 वर्षीय पोलिश खिलाड़ी स्विएटेक ने रोलांड गैरोस, मियामी ओपन, पोर्श टेनिस ग्रां प्री, कतर ओपन और बीएनपी परिबास ओपन में बैक-टू-बैक चैंपियनशिप जीती। शनिवार को यूएस ओपन में उन्होंने अपनी तीसरी ग्रैंड स्लैम चैंपियनशिप जीती।

ट्यूनीशिया की जबूर, डब्ल्यूटीए फाइनल (बर्लिन) के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली अरब महिला बन गई हैं। जबूर ने कहा, डब्ल्यूटीए फाइनल के लिए क्वालीफाई करना सम्मान की बात है। सीजन की शुरुआत से ही मेरा लक्ष्य टूर्नामेंट खेलना था और मैं दुनिया के शीर्ष 8 खिलाड़ियों में से एक के रूप में प्रतिस्पर्धा करने का इंतजार नहीं कर सकती। चेक गणराज्य की बारबोरा क्रेजसिकोवा और कतेरीना सिनियाकोवा ने सप्ताहांत में यूएस ओपन युगल चैंपियनशिप जीतकर डब्ल्यूटीए फाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया है। यह टूर्नामेंट उनकी लगातार चौथी उपस्थिति होगी।

डब्ल्यूबीबीएल : सिडनी सिक्सर्स ने सोफी एक्लेस्टोन के साथ किया करार

मेलबर्न। सिडनी सिक्सर्स ने महिला बिग बैश लीग (डब्ल्यूबीबीएल) के आठवें सीजन के लिए विश्व नंबर 1 रैंकिंग वाली टी20 अंतरराष्ट्रीय गेंदबाज सोफी एक्लेस्टोन के साथ करार किया है। 17 साल की उम्र में 2016 में पाकिस्तान के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने के बाद से, न्यूजीलैंड की एक्लेस्टोन ने केवल 58 मैचों में 78 विकेट लेकर दुनिया के प्रमुख टी20 गेंदबाज के रूप में अपनी प्रतिष्ठा कायम की है।

सिडनी सिक्सर्स द्वारा जारी एक आधिकारिक बयान में एक्लेस्टोन ने कहा, सिक्सर्स की टीम मेरे पसंदीदा रंग में खेलती है- इसलिए यह एक शानदार शुरुआत है। उन्होंने कहा,जाहिर है कि उनके पास एलिसा हीली, एलिस पेरी और ऐश गार्डनर जैसी महान खिलाड़ी हैं, इसलिए मैं वास्तव में उनके साथ खेलने के लिए उत्साहित हूं। उन्होंने कहा, यह अच्छा है कि उनके खिलाफ गेंदबाजी नहीं करना पड़ेगा ... यह अच्छा है कि सभी इस बार मेरी टीम में होंगी! मैं उन्हें जानने और उनके साथ प्रशिक्षण शुरू करने और खेलने के लिए उत्साहित हूं। कोच चार्लोट एडवर्ड्स ने कहा कि वह एक्लेस्टोन की अचूक सटीकता और

बेहतरीन आर्थिक दर से खुश हैं। एडवर्ड्स ने कहा कि एक्लेस्टोन को मुख्य रूप से सिक्सर्स लाइन-अप में एक महत्वपूर्ण खाली जगह को भरने के लिए लक्षित किया गया था, ऑस्ट्रेलियाई परिस्थितियों में बाएं हाथ की गेंदबाज को जोड़ने का मतलब है कि उसे आत्मविश्वास के साथ सीजन की शुरुआत करनी चाहिए। एडवर्ड्स ने कहा, सोफी दुनिया की अग्रणी टी20 गेंदबाज है - पिछले कुछ वर्षों में उसका रिकॉर्ड खुद के लिए बोलता है - और हम उसे सिक्सर्स में पाकर खुश हैं। मेरी राय में, हमने सर्वश्रेष्ठ की भर्ती की है। उन्होंने कहा, वह खेल के सभी चरणों में गेंदबाजी कर सकती है; उसके पास महत्वपूर्ण समय पर विकेट लेने की क्षमता है, और वह हर समय रन-स्कोरिंग को कम कर सकती है। मुझे पता है कि डब्ल्यूबीबीएल एक ऐसी प्रतियोगिता है जिसमें सोफी खेलना चाहती है, और तथ्य यह है कि उसे ऑस्ट्रेलिया में खेलने का काफी अनुभव है, जो उसे अच्छी स्थिति में रखेगा।

सिडनी सिक्सर्स की टीम: एलिसे पेरी (कप्तान), जेड एलन, निकोल बोल्टन, मैटलन ब्राउन, एरिन बर्न्स, स्टेला कैंपबेल, लॉरेन चीटल, सोफी एक्लेस्टोन, ऐश गार्डनर, एंज जेनफोर्ड और एलिसा हीली।

मुंबई इंडियंस ने जहीर खान और महेला जयवर्धने को सौंपी नई जिम्मेदारी

मुंबई। पूर्व क्रिकेटरों जहीर खान और महेला जयवर्धने को मुंबई इंडियंस (एमआई) ने नई जिम्मेदारी सौंपी है। एमआई सवनफेमिली के विस्तार के साथ, जिसमें अब मुंबई इंडियंस के साथ एमआई अमीरात और एमआई केप टाउन शामिल हैं, टीम प्रबंधन अब एक केंद्रीय टीम का निर्माण करने जा रही है, जिसके लिए दो एमआई दिग्गजों महेला जयवर्धने और जहीर खान को नई भूमिकाएं सौंपी जा रही हैं। महेला जयवर्धने को ग्लोबल हेड ऑफ परफॉर्मेंस, एमआई के रूप में नियुक्त किया गया है। जिसके तहत महेला के पास समग्र रणनीतिक योजना, एक एकीकृत वैश्विक उच्च-प्रदर्शन इको-सिस्टम का निर्माण, साथ ही प्रत्येक टीम की कोचिंग, समर्थन संरचनाएं, तालमेल सुनिश्चित करने के लिए टीम के मुख्य कोचों के साथ मिलकर काम करना, क्रिकेट का एक सुसंगत ब्रांड, और एमआई द्वारा निर्धारित सर्वोत्तम योजनाओं के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी होगी। वहीं, जहीर खान को क्रिकेट डेवलपमेंट, एमआई के ग्लोबल हेड के रूप में नियुक्त किया गया है। जहीर के पास एमआई के मजबूत कार्यक्रमों के जरिये प्रतिभा की पहचान करने और उन्हें तैयार करने की जिम्मेदारी होगी। आकाश अंबानी (चेयरमैन, रिलायंस जियो इन्फोकॉम) ने कहा, मैं महेला और जहीर को हमारी वैश्विक कोर टीम के हिस्से के रूप में पाकर खुश हूं। दोनों एमआई परिवार का एक अभिन्न हिस्सा रहे हैं और क्रिकेट एमआई की भावना का प्रतीक हैं। मैं मुझे विश्वास है कि वे विश्व स्तर पर हमारी सभी टीमों के माध्यम से समान प्रवाह सुनिश्चित करने में सक्षम होंगे और दुनिया भर में क्रिकेट पारिस्थितिकी तंत्र में बदलाव लाएंगे। वहीं, जयवर्धने ने कहा, एमआई के वैश्विक क्रिकेट संचालन का नेतृत्व करना मेरे लिए एक पूर्ण सम्मान की बात है। श्रीमती अंबानी और आकाश के नेतृत्व और मार्गदर्शन ने एमआई को सबसे मूल्यवान वैश्विक क्रिकेट फ्रेंचाइजी बना दिया है और मैं यह देखकर बहुत खुश हूं। मैं क्रिकेट के एक मजबूत एकजुट वैश्विक ब्रांड के निर्माण के लिए इस नई जिम्मेदारी के लिए तत्पर हूं।

भारतीय सेना का कमाल- सिंधु नदी पर मिनटों में बना दिया पुल, दुनिया कर रही जम कर तारीफ

लद्दाख सेक्टर । विश्व में भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा के साथ हा भारतीय सेना दिन-ब-दिन खुद को अपग्रेड करने में लगी है। वह अपने आप को स्वचालित हथियारों से लैस कर रही है और समय-समय पर अपने विरोधियों को अपने साहसी कारनामों से आगाह कर रही है। इसका ताजा उदाहरण दिया है भारतीय सेना के कोर ऑफ इंजीनियर्स ने जिन्होंन चंद घंटों में ही लद्दाख सेक्टर में सिंधु नदी पर

पुल का निर्माण कर दिया । इस ब्रिज को फ्लोटिंग ब्रिज कहा जाता है। इस पुल के निर्माण के बाद तकनीक के किंग चीन की आंखें भी फटी रह गई है। सिंधु नदी पर सेना द्वारा बनाए गए अस्थाई पुल का एक वीडियो भी सामने आया है। वीडियो में दिख रहा है कि कई वाहन पुल का माल ढो रहे हैं। एक-एक कर वाहन नदी में चले जाते हैं और माल गिर जाता है। यह अस्थायी पुल एक तरह से स्वचालित है। पानी में गिराने के बाद यह अपने आप खुल जाता है। इसके बाद एक-एक कर सभी को जोड़ा जा रहा है।

देखते ही देखते पुल पल भर में बनकर तैयार हो गया और उस पर सेना के वाहनों की आवाजाही भी शुरू हो गई। इस पुल का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है और दुनिया जमकर इसकी तारीफ कर रही है।उधर, भारतीय सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने रविवार को लद्दाख सेक्टर में भारतीय वायु सेना के अपाचे हेलीकॉप्टर से उड़ान भरी। सेना प्रमुख का अपाचे हेलीकॉप्टर उड़ाते हुए एक वीडियो भी सामने आया है। इसके साथ ही सेना प्रमुख हेलीकॉप्टर की जानकारी भी लेते नजर आ रहे हैं।

पाक रक्षा मंत्री का आरोप- सत्ता के लिए सेना के साथ 'बातचीत' को उतावले इमरान खान

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने आरोप लगाया है कि पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ''सत्ता के लिए बेताबी' में शक्तिशाली प्रतिष्ठान के साथ ''बातचीत के दरवाजे' खोलने की कोशिश कर रहे हैं। आसिफ का यह दावा पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के गुजरांवाला में एक रैली में इमरान द्वारा प्रतिष्ठान (सेना) को यह चेतावनी दिए जाने के कुछ दिन बाद आया है कि अगर देश तथा अर्थव्यवस्था मौजूदा सरकार के तहत और भी खराब स्थिति में पहुंचते हैं तो उसे जिम्मेदार ठहराया जाएगा। उन्होंने समा समाचार चैनल को दिए एक साक्षात्कार में कहा, एक तरफ, वह उस (प्रतिष्ठान) पर हमला कर रहे हैं और दूसरी तरफ, वह बातचीत या संवाद के दरवाजे भी खोलना चाहते हैं। रक्षा मंत्री ने कहा कि इमरान खान के बयान से पता चलता है कि वह बंदूक की बल पर और जबरन प्रतिष्ठान से बात करना चाहते हैं।

अमेरिका ने बाढ़ प्रभावित पाकिस्तान में 10 मानवीय सहायता मिशन भेजे: पेंटागन

वाशिंगटन। अमेरिका ने कहा है कि उसने पाकिस्तान में भारी मानसूनी बारिश के कारण आई विनाशकारी बाढ़ से प्रभावित लोगों को दस लाख पाउंड से अधिक की महत्वपूर्ण मानवीय आपूर्ति और उपकरण पहुंचाने के लिए 10 मिशन भेजे हैं। पाकिस्तान में बाढ़ से लगभग 1,400 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 12,728 अन्य घायल हुए हैं और 17 लाख से अधिक घर, 40 लाख एकड़ से ज्यादा कृषि भूमि तथा 6,674 किलोमीटर लंबी सड़कें नष्ट हो गई हैं। अमेरिकी रक्षा विभाग (डीओ डी) पाकिस्तान में विनाशकारी बाढ़ से उपजे मानवीय संकट के मद्देनजर उसे मदद मुहैया कराने के 'यूएस एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट' (यूएसएआईडी) के प्रयासों का समर्थन कर रहा है।पेंटागन के प्रवक्ता पैट्रिक राइडर ने मंगलवार को एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'हमारी संवेदनाएं निश्चित रूप से उन लोगों के साथ हैं, जो इस भयानक प्राकृतिक आपदा से प्रभावित हुए हैं।' उन्होंने कहा, 'डीओडी ने अभी तक महत्वपूर्ण एयरलिफ्ट (हवाई निकासी) और स्टेजिंग (अस्थाई पट्टियां या चबूतरे) सहायता प्रदान करके अमेरिकी प्रशासन की यूएसएआईडी के नेतृत्व वाली प्रतिक्रिया का समर्थन किया है।

अमेरिकी विश्वविद्यालय में डाक से पहुंचा बम, विस्फोट में एक घायल

बोस्टन। अमेरिकी के बोस्टन स्थित नॉर्थ ईस्टर्न विश्वविद्यालय में डाक से बम की डिलिवरी की गयी। उसे खोलते समय हुए विस्फोट से एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

अमेरिका के बोस्टन स्थित नॉर्थ ईस्टर्न विश्वविद्यालय में रात डाक से कुछ सामान की आपूर्ति हुई थी। एक पैकेट खोलते समय तेज धमाका हुआ। धमाके में एक व्यक्ति घायल हो गया। धमाका होते ही पुलिस एवं दमकल विभाग को सूचना दी गयी। पुलिस का बम निरोधक दस्ता विस्फोटक की जांच के लिए विश्वविद्यालय पहुंचा। उक्त विस्फोटक लिफाफे के साथ कुछ अन्य लिफाफे भी थे, इसलिए उन सभी की जांच की गयी।

विश्वविद्यालय परिसर को तुरंत खाली करा लिया गया। जिस समय धमाका हुआ, उस समय तमाम विद्यार्थी सांध्यकालीन कक्षा के लिए विश्वविद्यालय के होम्स हॉल में एकत्र हुए थे। उस समय वहां पत्रकारिता संकाय की कक्षा शुरू होने जा रही थी। कक्षा निरस्त कर परिसर खाली कराया गया। अभी विश्वविद्यालय में

धमाके वाले स्थान पर पुलिस पड़ताल कर ही रही थी, तभी विश्वविद्यालय परिसर के बाहरी क्षेत्र में स्थित फाइन आर्ट म्यूजियम के पास एक संदिग्ध पैकेट की जानकारी मिली। बम निरोधक दस्ते ने जाकर जांच की तो पता चला कि उस पैकेट में भी बम था। बम निरोधक दस्ते ने उस पैकेट में मौजूद बम को निष्क्रिय कर दिया। बोस्टन पुलिस ने बताया कि विश्वविद्यालय के होम्स हॉल के पास छोड़े गए दो संदिग्ध पैकेट की जांच की जा रही है। अधिकारियों ने विस्तृत जानकारी देने से इनकार कर दिया।

बताया गया कि धमाके में घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाया गया है। मामले की पड़ताल में अमेरिकी खुफिया एजेंसी एफबीआई की मदद भी ली जा रही है।

आर्मेनिया-अजरबैजान सीमा पर संघर्ष में 99 सैनिक मारे गए

येरेवान । करीब दो साल शांति के बाद आर्मेनिया और अजरबैजान के बीच सीमा पर फिर संघर्ष शुरू हो गया है। इस संघर्ष में आर्मेनिया के 49 सैनिकों की मौत हुई है। अजरबैजान का कहना है कि उसके भी 50 सैनिक हताहत हुए हैं। आर्मेनियाई रक्षा मंत्रालय के मुताबिक, सोमवार आधीरात बाद अजरबैजानी फौजों ने तोपखाने और ड्रोन का इस्तेमाल करते हुए उसके इलाके में एक साथ कई स्थानों पर ताबड़तोड़ हमला शुरू किया है। आर्मेनियाई फौज ने माकूल जवाब दिया दिया है। इस संघर्ष में उसके 49 जवानों की मौत हो गई।

अजरबैजान के विदेश मंत्रालय ने कहा कि अर्मेनिया ने सोमवार देररात और मंगलवार तड़के उनके इलाके में गोलाबारी की गई। आर्मेनियाई सैनिकों ने इलाके में बारूदी सुरंगें बिछाने के साथ सैन्य ठिकानों पर गोले बरसाए हैं। इस हमले में उसके 50 सैनिकों की जान चली गई। इस बीच रूस ने दोनों के बीच संघर्ष विराम कराने का प्रयास किया है। मगर रूस को कामयाबी नहीं मिल सकी है। गोलाबारी जरूर कुछ कम हुई, लेकिन अजरबैजान की फौज दिनभर आर्मेनिया में घुसने का प्रयास करती रही। अजरबैजान की गोलाबारी में कई नागरिक ढांचों को भी क्षति पहुंची हैं। उल्लेखनीय है कि नागोर्नो-काराबाख अजरबैजान का हिस्सा है। 1994 में अलगावावादी युद्ध समाप्त होने के बाद से आर्मीनिया समर्थित बलों का यहां नियंत्रण है। दोनों के बीच 2020 में छह सप्ताह तक चले युद्ध में 6,600 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है।

विलियम रूटो केन्या के नए राष्ट्रपति, शपथ ग्रहण समारोह में भगदड़ से 60 घायल

नैरोबी। विलियम रूटो ने केन्या के नए राष्ट्रपति के रूप में काम संभाल लिया है। रूटो के शपथ ग्रहण समारोह में मची भगदड़ में कम से कम 60 लोगों के घायल होने की जानकारी भी सामने आई है।मंगलवार को केन्या के नए राष्ट्रपति विलियम रूटो ने समारोह पूर्वक शपथ ली। वे केन्या के पांचवें राष्ट्रपति बने हैं।

केन्या में नए राष्ट्रपति के लिए पिछले महीने चुनाव हुआ था। विलियम रुटो ने अपने प्रतिद्वंद्वी रैला ओडिंगा को हराया था। रूटो को 7,176,141 (50.49 प्रतिशत) और ओडिंगा को 6,942,930 (48.85 प्रतिशत) मिले थे। ओडिंगा ने इस फैसले को स्वीकार करने से इनकार किया था और सर्वोच्च न्यायालय की शरण में गए थे। पिछले सप्ताह सर्वोच्च न्यायालय

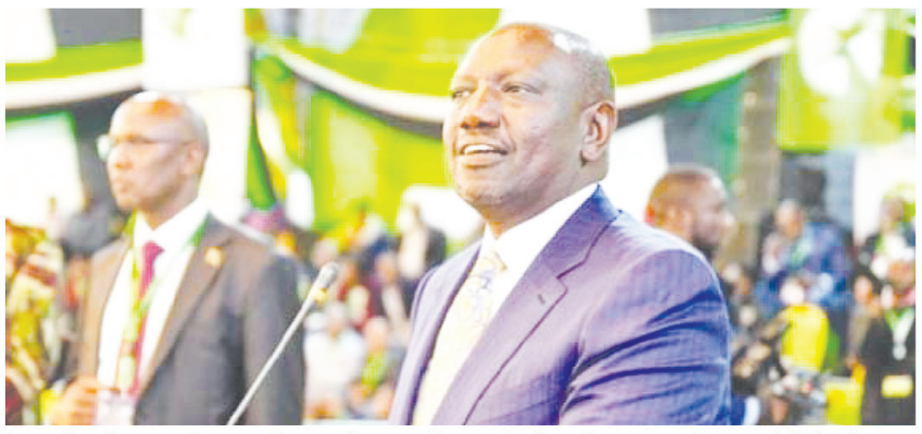

ने उनकी याचिका खारिज कर दी थी, जिससे विलियम रूटो के राष्ट्रपति बनने का रास्ता साफ हो गया था। रूटो इससे पहले केन्या के उपराष्ट्रपति रहे हैं। केन्या के नए राष्ट्रपति विलियम रूटो ने समारोह पूर्वक शपथ ली। वे केन्या के पांचवें राष्ट्रपति बने हैं। उनके पास केन्या की सेना के मुख्य कमांडर का दायित्व भी रहेगा। शपथ ग्रहण समारोह में भारी संख्या में लोग उमड़े, इस कारण खचाखच भरे स्टेडियम में जगह कम पड़ गई। हालात इतने खराब हो गए कि स्टेडियम की एक दीवार गिर गयी, जिस कारण वहां भगदड़ भी मच गयी। कुछ लोगों ने पुलिस पर उन्हें स्टेडियम में प्रवेश न करने देने और उन पर बल प्रयोग करने का आरोप भी लगाया। इस हादसे में कम से कम 60 लोगों के घायल होने की जानकारी सामने आई है। घायलों को नैरोबी के मुख्य अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

दांव: मसूद अजहर की गिरफ्तारी को पाकिस्तान ने अफगानिस्तान को लिखा पत्र

इस्लामाबाद। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान की सरकार को एक पत्र लिखकर जैश-ए-मोहम्मद के सरगना आतंकी मसूद अजहर को गिरफ्तार करने की मांग की है। माना जा रहा है कि पाकिस्तान का यह दांव उज्बेकिस्तान में होने वाले शंघाई सहयोग संगठन की बैठक से पहले नई चाल है। हालांकि, अफगानिस्तान की तालिबान सरकार के वरिष्ठ नेता और सयुंक्त राष्ट्र में स्थाई प्रतिनिधि सुहैल शाहीन ने पाकिस्तान से ऐसी किसी भी चिट्ठी के मिलने से इनकार किया है। सुहैल ने कहा कि अफगानिस्तान में मसूद अजहर की मौजूदगी के बारे में कोई जानकारी नहीं है। हम अपने देश में ऐसे किसी भी व्यक्ति का समर्थन नहीं करते हैं जो हमारे देश में रहकर किसी और देश के लिए साजिशें रचता हो। जानकारी के अनुसार मसूद अजहर अफगानिस्तान में मौजूद है और पाकिस्तान ने पड़ोसी देश को पत्र लिखकर उसकी गिरफ्तारी की मांग की है, यही नहीं पाकिस्तान के खुफिया विभाग ने पत्र में अजहर के संभावित ठिकानों के बारे में भी जानकारी भी साझा की है। माना जा रहा है कि भारत एससीओ समिट में आतंक के खिलाफ साझा एक्शन की बात जरूर उठाएगा। अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकारों का यह भी मानना है कि पाकिस्तान मसूद अजहर के खिलाफ ऐसी चिट्ठी इसलिए लिख रहा है क्योंकि उसको भय है कि कहीं फाइनेंसिएल एक्शन टॉस्क फोर्स उस पर कोई कार्रवाई नहीं कर दे। मसूद अजहर जैश-ए-मोहम्मद का सरगना है और भारत में हुए कई आतंकी हमलों के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार है।

चीन-नेपाल के बीच छह समझौतों पर हस्ताक्षर, बीआरआई को प्रमुखता

काठमांडू। चीन और नेपाल ने छह समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। इन समझौतों में चीन ने अपने महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड पहल (बीआरआई) का खासकर जिक्र किया है। समझौते के पांचवें बिंदु के मुताबिक, दोनों देशों की सरकारें बीआरआई समेत एक-दूसरे को प्राथमिकता, आपसी लाभ और प्रतिबद्धता को बढ़ावा देंगी। बीआरआई की प्रमुख परियोजनाचीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) है। भारत लंबे समय से सीपीईसी का विरोध कर रहा है।

भारत 26 अप्रैल, 2019 को बीआरआई की सीपीईसी परियोजना के मुद्दे पर फोरम की बैठक का बहिष्कार कर चुका है। दरअसल, 60 अरब डॉलर से तैयार होने वाला चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से होकर गुजरेगा।

चीन की संसद के प्रमुख ली झांशु ने मंगलवार को नेपाल के शीर्ष नेताओं से मुलाकात की है। झांशु ने पूर्व प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली और पुष्प कमल दहल प्रचंड से मुलाकात कर द्विपक्षीय संबंधों और आपसी हित के मुद्दों

पर चर्चा की है। ली-ओली वार्ता में अश्ट लक्ष्मी शाक्य, सुभाष नेमवांग और राजन भट्टराई भी मौजूद रहे। प्रचंड के साथ कृष्ण बहादुर महारा, देव गुरुंग भी मौजूद थे। ली और नेपाल के स्पीकर सपकोटा में अंतर-संसदीय सहयोग पर एमओयू भी साइन किया गया। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) की अक्टूबर में होने वाली 20वीं कांग्रेस और नेपाल में नवंबर में होने वाले आम और प्रादेशिक चुनाव से पहले ली झानसू सोमवार को नेपाल के आधिकारिक दौरे पर पहुंचे थे। मार्च में चीन के विदेश मंत्री वांग यी नेपाल की यात्रा कर चुके हैं। नेपाल के विदेश मंत्री ने भी मार्च में चीन का दौरा किया था। चीन की नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्टैंडिंग कमेटी के चेयरमैन ली झानसू ने आधिकारिक दौरे के दौरान नेपाल की संसद के साथ छह सूत्री समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

नेपाल की ओर से प्रतिनिधि सभा के स्पीकर अग्नि प्रसाद सपकोटा ने इस पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के लिए संघीय संसद भवन में कार्यक्रम आयोजित किया गया। समझौते के तहत दोनों देश एक-दूसरे को विधायी, पर्यवेक्षी और शासन प्रथाओं की जानकारी देंगे। चीन ने अपने महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड पहल (बीआरआई) को इस समझौते में प्राथमिकता दी है।

अमेरिका में महंगाई दर के आंकड़ों से सहमा भारतीय आईटी सेक्टर

नई दिल्ली। कमजोर ग्लोबल सेंटीमेंट्स के कारण दुनिया भर के तमाम शेयर बाजारों की तरह घरेलू शेयर बाजार ने भी बुधवार को जोरदार गिरावट के साथ कारोबार की शुरूआत की।

हालांकि दूसरे शेयर बाजारों के विपरीत घरेलू शेयर बाजार ने तेजड़ियों के सपोर्ट से दिन के कारोबार के अंत तक शानदार रिकवरी कर ली लेकिन इस रिकवरी का असर आईटी सेक्टर के शेयरों को नहीं मिल सका। पूरी दुनिया के बाजारों की तर्ज पर ही घरेलू बाजार में भी आईटी सेक्टर के शेयरों को जोरदार गिरावट का सामना करना पड़ा। आज के कारोबार में सबसे अधिक नुकसान आईटी सेक्टर के शेयरों को ही उठाना पड़ा।

अमेरिका में महंगाई से जुड़े आंकड़ों के आने के बाद शेयर बाजार में मची हाहाकार का असर आज भारतीय आईटी कंपनियों के शेयरों पर भी साफ साफ नजर आया। आज के कारोबार में भारतीय आईटी कंपनियों में इंफोसिस को सबसे ज्यादा नुकसान का सामना करना पड़ा। इंफोसिस के शेयर आज 69.95 रुपये यानी 4.53 प्रतिशत की गिरावट के साथ 1,475 रुपये के भाव पर बंद हुए। मार्केट कैपिटलाइजेशन के लिहाज से देश की सबसे बड़ी आईटी कंपनी टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के शेयरों के भाव में भी आज 3.23 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। इस गिरावट के कारण ये शेयर आज 3,125 रुपये की कीमत पर बंद हुआ।

विशेषज्ञ का दावा-पाकिस्तान में बाढ़ के लिए खुद पाक सरकार व दुनिया के अमीर देश जिम्मेदार

मेलबर्न: आस्ट्रिलया की यूनिवर्सिटी ऑफ़ विक्टोरिया के एक विशेषज्ञ का दावा है कि पाकिस्तान में बाढ़ के लिए अमीर देश जिम्मेदार हैं। पाकिस्तान का लगभग एक तिहाई हिस्सा अभी भी विनाशकारी बाढ़ के बाद जलमग्न है। उन्होंने कहा कि देश के प्रशासन ने संकट के लिए जिम्मेदारी से इंकार किया है और समृद्ध राष्ट्रों को दोषी ठहराया है जो वैश्विक जलवायु आपदाओं के लिए जिम्मेदार वैश्विक कार्बन उत्सर्जन का बड़ा हिस्सा पैदा करते हैं। विजिटिंग रिसर्चर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ विक्टोरिया उमर एजाज़ी ने कहा कि पाकिस्तान में बाढ़ के लिए अमीर देशों को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए और मानवीय सहायता को जलवायु मुआवजे के रूप में फिर से परिभाषित किया जाना चाहिए। जलवायु परिवर्तन की औपनिवेशिक विरासत को भी

मान्यता दी जानी चाहिए।

उन्होंने कहा कि हालाँकि, पाकिस्तानी खुद भी, बाढ़ के मद्देनजर अपने लोगों को बेआसरा छोड़ देने के लिए दोषी है। कई अन्य देशों की तरह, पाकिस्तान के जनसंख्या केंद्र उसकी नदी प्रणालियों के आसपास स्थित हैं। अभी कुछ हफ्ते पहले, मैंने उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान में रहने वाले अली से बात की थी। उन्होंने बताया कि कैसे रिकॉर्ड महंगाई के बीच उनका परिवार अपने दैनिक खर्चों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहा है। फिर, बाढ़ ने उनके गांव को तबाह कर दिया और वह इस समय एक विस्थापन शिविर में हैं। यह पहली बार नहीं है जब पाकिस्तान ने इस पैमाने की बाढ़ का अनुभव किया है।2010 में भी, देश के कई हिस्से जलमग्न हो गए थे। मैंने बाढ़ के बाद आपदा बचाव में काम किया और तब से पूरे देश में प्रभावित समुदायों के साथ शोध किए। 2010 में आई बाढ़ से महत्वपूर्ण सबक सीखे गए। दुर्भाग्य से, अधिकारी राष्ट्रीय नीतियों को आकार देने के लिए उनका उपयोग करने में विफल रहे। हाशिये पर पड़े इलाके सबसे ज्यादा प्रभावित देश के कुछ सबसे गरीब और राजनीतिक रूप से दमित क्षेत्रों में खास तौर से बाढ़ से सबसे ज्यादा तबाही हो रही है, जैसे कि बलूचिस्तान, जहां राज्य के उत्पीड़न के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह चल रहा है। दक्षिणी पंजाब, एक और भारी प्रभावित क्षेत्र, असमान विकास और असमानता का शिकार है। 2010 में बाढ़ के बाद असुरक्षित भूमि अधिकारों को आपदा बचाव अभियानों के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा के रूप में चिह्नित किया गया था। संयुक्त राष्ट्र के साथ अपने काम में, मैंने तर्क दिया है कि सशक्तिकरण जलवायु कार्रवाई के केंद्र में होना चाहिए, जिसमें भूमि की सुरक्षा महत्वपूर्ण है। तब से भूमि के अधिकार को मजबूत करने के लिए बहुत कम प्रगति हुई है। भूमि का अधिकार लोगों और उस भूमि के बीच के संबंध के बारे में है जहां वे रहते हैं और काम करते हैं।

पाकिस्तान में, भूमि स्वामित्व राजनीतिक संरक्षण के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। अत्यधिक प्रभावित प्रांतों में कई किसान ऐसे हैं जो जमींदार अभिजात वर्ग के लिए काम करते हैं। इनमें से कई अभिजात वर्गों ने अंग्रेजों के समय औपनिवेशिक शासन का समर्थन किया और उन्हें बदले में भूमि और राजनीतिक शक्ति पर अपनी पकड़ मजबूत करने की सुविधा मिली। बाढ़ से बचाव की कुछ सबसे महत्वपूर्ण प्रणालियां औपनिवेशिक युग की परियोजनाएं हैं, जिनमें से कई जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
Title UPHIN 29506
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

एयर इंडिया विमान के इंजन से निकला धुआं, मस्कट में रोकी गयी उड़ान

मस्कट। ओमान की राजधानी मस्कट के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उस समय हड़कंप मच गया, जब एयर इंडिया के एक विमान के इंजन से धुआं निकलते देखा गया। मस्कट से भारत के कोच्चि आ रही इस उड़ान को तुरंत रोक दिया गया।

जानकारी के मुताबिक बुधवार सुबह 11.33 बजे मस्कट अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर मस्कट से कोच्चि के लिए उड़ान भरने को एयर इंडिया एक्सप्रेस की विमान संख्या आईएक्स 442 वाला बोइंग 737-800 विमान तैयार खड़ा था। जैसे ही विमान रनवे पर आगे बढ़ा

अचानक कुछ यात्रियों को विमान के दूसरे इंजन से धुआं निकलता दिखा। विमान से धुआं निकलते देख यात्रियों में हड़कंप मच गया और उन्होंने शोर मचाया। आनन-फानन चालक दल सक्रिय हुआ और उड़ान को रोक दिया गया। विमान में 141 यात्री सवार थे। इसके अलावा चालक दल के छह सदस्य भी विमान में थे। धुआं उठते देख आनन-फानन सभी यात्रियों को विमान से निकाल दिया गया। विमान में धुआं उठने के पीछे इंजन में आग लगने की संभावना जताई जा रही है।

एयर इंडिया एवं भारत सरकार के विमानन महानिदेशालय की ओर से मामले की जांच भी कराने की बात कही गयी है। विमान के इंजन से धुआं निकलने और उड़ान रुकने की जानकारी पर मस्कट से दिल्ली तक विमानन सेवा संचालकों के बीच हड़कंप मच गया। एहतियात के तौर पर विमान में सवार यात्री बाहर तो निकाल लिये गए थे, किन्तु उनके परिजनों में परेशानी की बात भी सामने आई। बाद में वैकल्पिक विमान का प्रबंध कर यात्रियों को मस्कट से कोच्चि भेजा गया।

कमजोर ग्लोबल संकेतों के कारण शेयर बाजार में कमजोरी

नई दिल्ली। लगातार चार कारोबारी दिन तक तेजी का रुख दिखाने के बाद घरेलू शेयर बाजार आज जबरदस्त कमजोरी का शिकार हो गया। कमजोर ग्लोबल संकेतों की वजह से भारतीय शेयर बाजार ने आज करीब 2 प्रतिशत की कमजोरी के साथ कारोबार की शुरूआत की।